दाम्पत्य विज्ञान ग्रन्थमाला संख्या ३

गुप्त चिट्ठी

एक चिकित्सक लिखित—

पुस्तकका—

हिन्दी अनुवाद।

शिशिर पब्लिशिंग हाउस।

कालेज स्ट्रीट मार्केट

कलकत्ता।

१९२३

मुद्रक—
श्रीज्ञानेन्द्र मोहन दास,
"ललित प्रेस"
१०७ मदन मित्र लेन
कलकत्ता।

गुप्त चिट्ठी ।

१

कल्याणीयासु,

इतनी बड़ी चिट्ठी लिखनेका कष्ट न उठाकर, लिफाफे पर पता लिखकर भेज देने हीसे तो काम चल जाता। मालूम होता है, इन पाँच सात सतरोंके लिखनेमें ही तुम घबड़ा उठी हो, परन्तु यह चिट्ठी पढ़कर मैं बड़ा ही हताश हुआ हूँ। मेरे यहाँसे जिस दिन तुम गयी हो, उसके पहले दिनकी रातमें, तुमने रातभर यही कहा था—'हाँ, खूब बड़ी चिट्ठी लिखूँगी, मनकी सभी बातें लिखूँगी, कोई बात छिपाकर न रखूँगी—'सो मालूम होता है, कि यही खूब बड़ी चिट्ठी है! यही तुमने मनकी सब बातें लिखी हैं? कुछ छिपा नहीं रखा है? अपनी बात तो तुमने खूब ही रखी है! नहीं, मालूम होता है, कि यह सब अब याद नहीं है, भूल गयी हो। भूल ही जाओ, तो क्या

गुप्त चिट्ठी

आश्चर्य है! मैं विदेशमें हूँ, अकेला हूँ, तुम्हारी चिट्ठीका आशामें आँखें लगी रहती हैं, और तुम केवल एक कागज़के टुकड़ेमें—तुम कैसे हो, हमलोग अच्छे हैं, और सैंकड़ों प्रणाम लिखकर ही निश्चिन्त हो गयी हो? यही मालूम होता है, कि तुम्हारा प्रेम है?

तुम्हारा आँखोंकी ओट होकर यहाँ चला आया हूँ — इसी कारणसे क्या ऐसा करना चाहिये? क्या तुम नहीं जानती हो, कुमुद, कि तुम्हारे विषयमें बातें सोचते सोचते रातभर मेरा आँखोंकी पलक नहीं लगती! तुमने क्या नहीं सुना है, कि कालेजमें पढ़नेकी पुस्तकें खोलनेपर, उसमें केवल तुम्हारा मुँह ही छपा हुआ दिखाई देता है। तुमसे तो मैंने, कितने ही दिन, कितनी ही बार कहा है, कि मेरी चिन्ता, कल्पना, सब तुम्हीं हो! कोई भी बात क्यों न सोचना होऊ, तुम्हारी चिन्ता बीचमें आ ही खड़ी होती है! मेरे मनमें जो कुछ कल्पना उठती है सबमें तुम मिली हुई हो! और तुम?

मालूम होता है, कि तुम दो पहरमें बैठकर ताश खेलती हो, कौड़ी चलाती हो, तीसरे पहरमें लड़के बच्चोंको बटोर, छतपर बैठक जमाती हो और रात्रिमें भोजनकर

एक सुन्दर मोटे बगलके तकियेपर पैर रख कर आनन्दसे सो जाती हो ! फिर मेरी खोज खबर लेनेका समय ही तुम्हें कब मिलता है ! तुम्हें समय ही कहाँ है ?

इच्छा रहनेपर समय भी निकाला जा सकता है, परन्तु मेरी बातें तुम सोचोगी ही क्यों ? भला बताओ तो सही, मेरे लिये तुम्हारा छोटा सा मन कभी कुछ इधर उधर करता है ? विवाह न होता, हुआ है इसीलिये ! साथ ही विवाह कुछ तुम्हारी इच्छासे नहीं हुआ है, तुम्हारे माता पिताने तुम्हें धर पकड़कर, मर्कटके गलेमें मोतीकी माला पहना दी है। तुम तो किसी तरह रोक न सकती थीं—तुम्हारे लिये रोकनेका कोई उपाय न था। यदि कोई उपाय रहता, तो अवश्य ही तुम उस घोस साहबको पसन्द करतीं जो तुम्हारे लिये पागल हो उठे थे। एक तो ऐसे सुपुरुष—दूसरे वह ठहरे बैरिस्टर साहब ! तुम क्या उन्हें छोड़कर मेडिकल कालेजके एक विद्यार्थीसे विवाह करना चाहतीं ? कहाँ तो एकदम मेम बन जातीं और कहाँ हुई एक नेटिव एम बी० की स्त्री—सो भी यदि एम० बी० पास कर लूँ। इसीलिये मैं तुम्हें दोष नहीं देता। बन्दरके गलेमें मोतीकी माला पड़नेसे यही दशा

होती है। मोती मलीन हो जाता है, उसका पानी उतर जाता है।

परन्तु मेरे लिये तो यह बातें ठीक उल्टी हो गयी हैं। नहीं जानता, कि क्यों उस फूल शय्याकी रातसे प्रभातसे ही मैं तुम्हें प्यार करने लगा था। यह मैं मन ही मन अच्छी तरह समझ भी गया था। मैं नहीं जानता, कि एक रातमें, एक बिछावनपर सोनेसे ही प्रेम उत्पन्न होता है या नहीं, परन्तु मेरे हृदयमें तुम्हारी मूर्त्ति उसी समयसे अङ्कित हो गयी थी। उस समय मेरे समझनेमें यह भूल हुई थी, कि प्रेम करनेसेही प्रेम प्राप्त होता है। इसका कोई निश्चय नहीं है। सच कहता हूं, उस समय समझ न सका। उस समय यही सोचता था, कि मैं तो प्रेम कर सका, पर क्या तुम न कर सकोगी!

और तुमने भी मुझे ठीक वैसा ही समझा भी दिया था। बातोंसे, भाव भङ्गीसे—सब तरहसे तुमने स्पष्ट ही बता दिया था—कि तुम मेरी हो। इसीलिये आज यह सोचकर औरभी अधिक कष्ट होता है, कि तुम बेगार टालने जैसी यह चिट्ठी लिखकर निश्चिन्त हो गयी हो। एक दिन रात्रिके समय मैंने झूठ ही आध घण्टेके लिये

क्रोध करनेका बहाना किया था, पर कुमुद, इतनेसे ही तुम क्या न रो पड़ी थीं ? एक शनिवारका अन्तर देकर अब मैं घर आऊँगा, यह सुनते ही क्या तुम उसदिन मेरे पैर पकड़ कर न लोट पड़ी थीं ? मालूम होता है, कि जितनी देरतक मैं सामने था, उतनी ही देरके लिये यह सब था ! इसके बाद फिर कुछ न रहा ? अच्छी बात है ।

आशीर्वाद, देता हूँ, कि तुम सदा अच्छी ही रहो, सुखमें रहो, प्रसन्न रहो और आनन्दित रहो । इति ।

पुनश्च—

सोचा था, कि यहीं पत्र समाप्त करूँगा, कर भी दिया था, उस समय रातके बारह बजे थे ।

डेरेके अन्य सब कमरोंके लड़के आनन्दसे सो रहे थे, पास वाले कमरेसे ही नीरद नामक एक विद्यार्थीकी नासिकाध्वनिकी गर्जना सुन पड़ती थी । अन्धकारमें आंखे बन्दकर सोते सोते ही रातके दो बज गये, इतने पर भी मेरी आखोंमें नींद न आयी ।

अन्धकारमें भी मानो तुम्हारा चेहरा ही दिखाई देता है ; यही देखता हूं । फिर मेरी आँखोंमें नींद कहाँसे आयगी ? बिछावनका सब स्थान खाली—सादा पड़ा है ।

गुप्त चिट्ठी

◆◆◆◆◆

यगरी तकिया कलेजेसे लगाकर सोते ही क्रोध आता है और दुःख भी होता है। जिस कलेजेसे तुम्हें लगाया है, उस कलेजेसे क्या एक रूखा तकिया लगाया जा सकता है? तकिया मुलायम अवश्य है, पर उसमें तो प्राण नहीं है, उसके किसी अङ्गपर हाथ पड़नेसे शरीरमें चमक तो नहीं पैदा होती, चौंककर घुम्बकी तरह मुझे आकर्षण तो नहीं कर लेती। उसे कलेजेसे लगानेसे प्राण तो शीतल नहीं होते और यदि प्राण ही शीतल न हुए तो उत्तप्त प्राणमें क्या सर्वसन्ताप हारिणी निद्रा देवीका आगमन कभी सम्भव है!

परन्तु इस अरण्य रोदनका फल ही क्या! झूठमूठ बकबककर मरना ही हाथ आता है।

उस शनिवारको मैं न आऊंगा, अगले शनिवारको भी नहीं, और इसके बाद भी नहीं। आज माँको मैं एक पत्र और भी लिख देता हूँ। इति

जो तुम्हें प्राणोंसे भी बढ़कर चाहता, पर पाता नहीं है, वह अभागा

---वरदा

२

प्रियतम !

मैं जानती थी, कि तुम मेरी पहली चिट्ठी पाकर रुज होगे। क्या तुम समझते हो, कि यह छोटीसी चिट्ठी लिखना मुझे अच्छा मालूम हुआ था ? परन्तु करू क्या ? छोटी ननद इस तरह रात दिन मेरे पास ही रहतीं, कि चिट्ठी लिखनेका समय ही नहीं मिलता था। 'अब सोऊ' कहकर कोठडीके भीतर घुस, दरवाजा बन्द करते ही धक्केपर धक्का लगता ! जल्दी खोलो, नहीं तो माँसे कह दूंगी, कि भाभी दिनके समय दरवाजा बन्दकर सोयी है। डरसे दरवाजा खोल देती। वे आकर कहतीं—तीसरे पहरके जरा पहले उठनेका तो नाम ही नहीं है ! तीसरे पहर जब माँ उठकर हाँकपर हाँक देने लगती हैं, तब उठकर कहीं कपड़े धोने जाती हो।

रातमें भी छोटी ननद मेरे कमरेमें ही सोतीं ! जबतक वे सो न जातीं—बराबर बका करती थीं। इसके बाद यदि वे सो भी जातीं तो ज्योंही मैं तुम्हें पत्र लिखनेके लिये रौशनी जलाती, त्योंही उनकी नींद खुल जाती ! तुम

तो जानते ही हो, कि वे कैसी उपद्रवी हैं! "ओ भाभी! माथा फट गया! रौशनी जलाकर सोनेके लिये मुझे डाक्टरने मना किया है। भाभी!"—बकने लगतीं, लाचार रौशनी बुझा देती। उनकी नाक बजनी आरम्भ होती, पर फिर मुझे रौशनी जलानेका साहस न होता। चिट्ठी न लिखनेके कारण छटपटाने लगती, नींद न आती, इधर उधर करवट बदलती और सोचती, छोटी ननदका ससुराल जानेका समय तो हो गया है, जायें तो प्राण बचे। केवल यही सोचती, कि तभी तुम्हें जी भरकर पत्र लिख सकूँगी। छोटी ननद बीच बीचमें जाग कर पूछ लेतीं—भाभी! सो रही हो न? और वे सोती किस ढंगसे हैं, सो तुम्हें क्या बताऊं! रह रहकर इतने ज़ोरसे मुझे अपने कलेजेसे लगा लेतीं, कि साँस बन्द हो जानेकी नौबत आ जाती। एक दिन तो एकाएक एकदम मेरे कलेजेपर चढ़कर सो पड़ीं। मैंने उन्हें जगाकर कहा—"क्यों, मालूम होता है, कि तुम वहाँ इसी तरह सोती हो?"—इस बातका मुझे तो कोई उत्तर न दिया, परन्तु दूसरे दिन, दिनभर मुझसे बातें ही न कीं। संध्याके समय तालाबमें नहाने गयी थी, ननद भी गलेतक पानीमें बैठी थीं, मैं

बोली—"इस बार मुझे माफ करो, फिर ऐसा कभी न करूँगी।"

उस दिन रातमें भी कभी कभी उसी तरह मुझे ज़ोरसे पकड़ रखतीं और रह रहकर नींदकी झोंकमें ही इस तरह मेरे गाल चूमने लगतीं, कि डर लगता था। पर मैंने फिर कुछ कहा नहीं।—अरे बाप! फिर! कल सध्याके समय उनके देवर आकर उन्हें ले गये। ओह! उन्हें जानेके समय कितनी प्रसन्नता हुई थी! बोलीं—६ बजे रातको ही पहुँच जाऊँगी और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि जागकर हो या सोकर, उसी तरह दामाद बाबूको भी वे कलेजेसे चिपटाये रहेंगी, जिस तरह इधर कई दिनो से मुझे चिपटाये रहती थीं। अच्छा, तुम तो डाक्टर हो, बताओ तो सही, वे ऐसा क्यों करती थीं? शायद स्वप्न देखकर ऐसा करती थीं?

परन्तु कहाँ, स्वप्न तो मैं भी देखती हूँ। मैं भी तो नित्य ही रात्रिमें स्वप्नमें देखती हू, कि तुम मेरे पास ही हो, परन्तु मुझे तो वैसा नहीं होता। जब स्वप्न देखती देखती खूब प्रसन्न होती हू, तब नींद खुल जाती है और तुम कहाँ और मैं कहाँ? मनमें बड़ा कष्ट होता है, कितनी

देरतक कलेजा धड़का करता है। न सोना ही अच्छा मालूम होता है और न बैठी रहनेकी ही इच्छा होती है। परन्तु छोटी ननदका अभ्यास कैसा खराब हो गया है। अच्छा, जब कई दिनोंतक तुम यहाँ थे, तब वे सासके पास सोयी थीं; तब भी क्या वे ऐसा ही करती थीं। छि छि! सासने उस समय मन ही मन क्या सोचा होगा?

ननद कल चली गयी हैं, इसीलिये आज तुम्हें जी खोलकर चिट्ठी लिखती हूँ। मैं जानती हूँ, कि तुम सच मुच ही मुझपर रंज न हुए हो। यदि कुछ हुए भी होगे, तो मेरा पत्र पाकर वह भूल जाओगे। मुझपर क्या तुम रंज हो सकते हो?

तुमने रंज होकर लिखा है, कि इसबार शनिवारको न आऊँगा। मेरे देवता, रंज न हो, ज़रूर आओ। तुम्हारे पैरों पड़ती है, आओ। तुम्हारे चरणोंमें सैकड़ों अपराध करनेपर भी तुम्हें मुझे क्षमा करना ही होगा। आना, ज़रूर आना।

तुमने कहा था, इसीलिये मैं इस बार लाल स्याहीसे चिट्ठी लिखती हूँ। लिफाफेपर ठिकाना काली स्याहीसे

लिख दिया है। न जाने किसके हाथमें पड़े—कौन क्या समझे! रविवारको स्नान करूंगी। सो जो कुछ हो, तुम आओ जरूर! बातें तो कर सकूँगी, बात करनेमें तो कोइ बाधा नहीं है, और सबसे बड़ी बात तो यह है, कि तुम्हें देखूँगी—आना, जरूर आना।

यहाँ जाड़ा खूब पड़ता है और खजूरका रस इतना मीठा हो गया है, कि क्या बताऊँ! कालाचाँद एक घड़ा रस रोज लाता है, और लौटा ले जाता है। सास सदा ही कहती हैं, उसको रस बहुत अच्छा मालूम होता है, पर यह घरमें नहीं है, कौन खायगा। कालाचाँद मन ही मन कुछ बड़बड़ाता हुआ, रस लौटा ले जाता है। मैं उसे चुपचाप कह दूँगी, कि शनिवारकी रातमें वह खूब मीठा रस एक घड़ा ले आये। तुम पियोगे और मैं भी तुम्हारा प्रसाद पाऊँगी। सास मुझे नित्य ही कहती हैं, कि तुम पियो न बहू! शहरमें तो ऐसा शुद्ध रस मिलता नहीं। मैं यह कहकर जान बचा लेती हूँ, कि दाँतोंमें लगता है। यही कहकर लौटा देती हूँ। उनसे तो यह कह नहीं सकती, कि मेरे देवताने जो चीज नहीं खायी है, उनके पहले ही उसे मैं कैसे खा लूँ। नयी चीज तो देवताको

अर्पण करने बाद स्वयं पानी चाहिये, पहले तुम पी लेना उसी गिलासमें थोड़ा छोड़ दोगे, वही मैं पी लूँगी।

मेरी माताने एक पत्र सासको भेजा था। मायकेमें सही नेमें मुझे ले जानेकी इच्छा है। सासने क्या उत्तर दिया है, सो तो मालूम नहीं, पर माने मुझे भी यही बात लिखी थी। उसका जवाब मैंने अबतक न दिया है। तुम आवोगे, तुमसे परामर्श करने बाद उत्तर दूँगी।

शनिवारको आओ, नहीं तो पत्रका उत्तर देनेमें बहुत देर हो जायगी। वे न जाने क्या सोचेंगी और यदि तुम न आये, तो मैं इतनी रज होऊंगी और यह क्रोध इतने दिन रहेगा, कि

तुम्हारी ही—

कुमुद।

३

प्रियतमासु ।

रातके सवा तीन बज गये हैं, अब कुछ सोऊँगा। उसके पहले ही तुम्हारे लिये एक पत्र लिख रखता हूँ नहीं तो यह पुरुषका क्रोध है! परीक्षा देकर घर जानेपर मानभंजन करनेमें ही दिन कटने लगेंगे।

परीक्षामें अब ठीक एक महीनेकी देर है। आज ७ तारीख है, अगले मासकी सातवीं तारीखसे परीक्षा आरम्भ होगी। आजकल खूब परिश्रम करना पडता है। समस्त दिन, सारी रात जागकर ही पढना पडता है। शायद ही किसी दिन सोनेका थोडा समय मिलता हो। पहले भी मैंने तीन परीक्षायें दी हैं, पर बराबर ही अच्छी तरह उत्तीर्ण हुआ हूँ, पर इतना परिश्रम कभी करना न पडा था। बी० ए० की परीक्षाके समयमें भी मैंने किसी दिन रातमें नहीं पढा। उन दिनों जिस डेरेमें रहता था, उसमें मेरे और भी कई सहपाठी लडके रहते थे, वे सारी रात जागते और चिल्ला चिल्लाकर पढते थे, मैं उनकी हँसी उडाया करता था। परन्तु अब यदि वे मुझे देखें, तो

हसते हसते लोट पोट हो जायगे। तुम तो बडी बुद्धिमती हो, बताओ तो सही, उस समय इतने थोडे परिश्रममें काम हो जाता था, अब इतना परिश्रम करनेपर भी मैं स्वयं ही निश्चिन्त क्यों नहीं हो सकता।

तुम जो कुछ कहोगी, वह मैं अच्छी तरह समझ रहा हूं। तुम्हारा तो यही उत्तर होगा, कि डाक्टरीकी पढाई बडी बडी पढाई है, कष्ट न होगा—परिश्रम न करना पडेगा? परन्तु नहीं, यह सब नहीं है। कुमुदकुमारी असल बात यह है, कि इन डेढ वर्षमें यद्यपि पुस्तकें पढी हैं, लेकचर सुने हैं, परन्तु काम कुछ न हुआ। पढनेमें जी न लगता था, मधुमक्खीकी तरह मन उड उडकर छत्तेकी चारों ओर घूमा करता था। यद्यपि छत्ता बहुत दूर था। परन्तु मन भी इस तरह उडना जानता है, कि उडकर ठीक वहीं जा पहुँचता। इसीलिये कुछ पढना भी न होता और वक्तृता सुननेका फल भीकुछ न होता। भगवानने नारीको भी कैसा मधुचक्र बनाया है, कि उसके पीछे दौडते दौडते ही पुरुषका जीवन समाप्त हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं, कि इसमें नारीका भी दोष नहीं है, पुरुषका भी दोष नहीं है। जिसका जो काम है, वही उसे करता आता

है। ईश्वरने स्त्रीके हृदय, मुख, समस्त देहमें मधुरता दी है, वह उसे ही लेकर बैठी है, पुरुषने उसका आस्वाद पा लिया है, उसमें उसे लूटनेका लोभ और शक्ति है—इसीलिये वह उसके ही पीछे दौडा करता है।

तुम्हीं देखो, रात तीन बजेतक पढता रहा हूँ, माथा, देह सब भारी मालूम होती है, सो जाऊँ तो प्राण बचे, —परन्तु इस समय भी तुम्हें चिट्ठी लिखनेका लोभ न त्याग सका। कारण यही है, कि तुम रमणी हो और मैं पुरुष! अत डेढ वर्षकी पढाईमें जो कुछ अन्तर पड गया है, इस समय उस अन्तरको यदि भर न दिया जाये, तो फिर भरनेकी सम्भावना नही है। यह एक बडा भय बनकर सामने खडा हो गया है। यह तो समझती हो, कि एक वर्ष फेल होनेका क्या मतलब है? अथवा समस्त शक्तियाँ एकत्रकर तय्यार हो जाऊँ--यह भी नहीं होता। मानो आधी शक्ति अपने गाँवमें रख आया हूँ। मेरे मकानके पूर्व ओर वाले कमरेमें सत्रह वर्षकी जो एक स्त्री है, उसकी आँचलमें बाँध आया हूँ।

और भी एक मजेदार बात हो गयी है! मेरे डेरेके ठीक सामने एक ब्राह्मण परिवार है। उसका लडका

और उसकी स्त्री, जिस कमरेमें रहते हैं, वह ठीक मेरे कमरेके सामने है। यह स्त्री ठीक ठीक न जाने कैसी है, परन्तु मुझे तो देखनेमें ठीक ऐसा ही मालूम होता है, मानों तुम्हीं हो, ठीक तुम्हीं! वैसी ही मराल गति, वैसी ही सलज्ज आँखें, वैसी ही हँसी, मानो सभी एक समान हैं। यह स्त्री जिस दिन एकबार दिखाई दे जाती है, उस दिन, दिनभरका काम मिट्टीमें मिल जाता है। यदि यह उस ब्राह्मणकी बहू न होकर कुमुद होती और यह इतने निकट रहती—बस यहाँसे ही सोचना आरम्भकर अन्तिम सीमातक पहुँचते पहुँचते दिन बीत जाता है। फिर पढ़ा नहीं जाता, यही इच्छा होती है, कि तुम यदि पास रहतीं तो पढ़ सकता। परन्तु उस बार जब घर गया था, तब इसकी भी तो परीक्षा कर ली गयी थी। केवल बक्स खोलकर किताबें निकालना भर ही हाथ आया था! जिन ब्राह्मण नव दम्पतिके विषयमें ऊपर कह आया हू। देखता हू, कि वे बड़े आनन्दमें हैं। सबेरे आठ बजेतक सोते हैं, फिर बारह बजने बजते कोठड़ीमें घुसकर क्या क्या अण्ड बण्ड काण्ड करते हैं कि लाचार होकर इस विचारसे खिड़की बन्द कर लेनी पड़ती है, कि पढ़नेमें

व्याघात पहुँचेगा। परन्तु आँखोंसे न देखने पर भी उस घरमें क्या हो रहा है, वह सब मुझे दिखाई देता है। कल्पनासे सत्यका मिलान होता है, या नहीं—यह जाँचनेके लिये, एक दिन खिड़कीकी झिलमिलीसे झाँककर देखा—ठीक अक्षर अक्षर मिल गया। हमारे घरका यह नियम बड़ा सुन्दर है, कि स्त्री पुरुषसे दिनमें भेंट न हो। दिनके समय भी एक बिछौनेपर सोनेके कारण शरीरकी रगड़ लगते ही आग जल उठनेकी सम्भावना पूर्ण मात्रामें ही वर्त्तमान रहती है। माल्‌म होता है, कि यह सोचकर ही हमारे पूर्व पुरुषोंने ऐसा कड़ा कानून बना दिया था। अर्थात् दिनके समय लड़के बाहर और बहुएँ गृहस्थीके काममें लगी रहें।

मैं यह नहीं कहता, कि दिनके समय एक साथ रहना दोषकी बात है। इसके लिये कितने ही दिन घरके मनुष्यों पर मन ही मन रुष्ट भी हुआ हूँ। परन्तु पण्डित प्रवर चाणक्यकी यह बात मैं मानता और विश्वास करता हूँ, कि आग रहनेपर घी गलेगा ही और दिनके समय यह काम होनेसे शरीर नष्ट होता है, इसमें तो सन्देह ही नहीं है। इससे तो यही अच्छा है, कि घी एक स्थानपर और

आग दूसरी जगह रहे—दोनो ही अच्छे रहेंगे। जिस दिन उनको देखा—उस दिन सध्यातक वे सोते रहे। उस समय मैं छतपर टहल रहा था। यह स्त्री जिस समय घरसे निकली उस समय ऐसा मालूम होता था, मानो उसके चेहरेपर किसीने स्याही लगा दी है। अथवा बहुत दिनोंसे ज्वर भोगती भोगती यह आज ही उठकर खड़ी हुई है? इस सम्बन्धमें कालेजके मास्टरसे भी बातें हुई थीं, उनका भी यही मत है। उन्होंने भी यही कहा, कि स्त्री पुरुषके मिलनका एक मात्र समय रात ही है। सो भी रातका चतुर्थ प्रहर। इसका लाभालाभ भी उन्होंने समझा दिया। आजसे तुम भी यह बात जान रखो। खबरदार, सोनेको आनेके साथ ही उपद्रव करना आरम्भ करोगी तो एक दम नरकमें जा पड़ोगी। खूब सावधान रहो।

परीक्षा समाप्त होनेसे ही प्राण बचें और आऊँ। तुम्हें इस तरह कलेजेसे लगा रखूगा, कि सांस लेना कठिन हो जायगा। अब, यह एक महीना कैसे कटेगा, इसका तो उपाय ही नहीं दिखाई देता। इसी शनिवारको विचारा था, कि कमसे कम एक दिनके लिये घूम आऊँ। एक रात्रिका वास तो होगा, यही क्या कम प्राप्ति है। परन्तु

माँकी बातें स्मरण हो आयीं, इससे बड़ी लज्जा उत्पन्न हो गयी। तुम जिस समय उस कोठड़ीमें न थीं, मैं बेगमें कपड़े भर रहा था, उसी समय हाथमें माला लिये माँ वहाँ आकर बोली थीं—बरदा, सभ कपड़े सब तो ले लिये हैं न? अब तो परीक्षा दे देने बाद कितनी ही अन्यान्य बातें उन्होंने कहीं, सावधान रहना, अधिक राततक न जागना, इस अवस्थामें चिट्ठियाँ यदि नहीं लिखीं तो क्या बिगड़ जायगा। यही सब उन्होंने कहा। वह माँ थीं, इसी लिये चुप रह गया। कोई दूसरा होता तो, दस बातें सुना देता, और कहता कि चिट्ठी लिखनेसे पढ़ाईमें कोई बाधा नहीं पहुँचती और बीचमें बीचमें घर आनेसे भी जात नहीं चली जाती।

जिन्हें यौवन नहीं है, वे यौवनके सुख दुःखकी बातें नहीं जानते। स्वयं जैसा बूढ़ा हो गया है, दूसरेको भी उसी तरह बूढ़ा ही देखना चाहता है। अवश्य ही इसमें भी व्यतिक्रम हो ही जाता है। व्यतिक्रम सबमें होता है, इनमें भी होता है। परन्तु कोई माँ व्यतिक्रम नहीं चाहती। यह बात वे अपनी सन्तानकी शुभ कामनाके कारण कहती हैं, इसीलिये कहनेमें उन्हें कोई

सकोच नहीं होता। यह बिगड़ गया, यह न हुआ—यही भाव इनमें प्रबल रहता है, जिनमें स्नेह और माया ममता अधिक है। छोड़ो, इस बातको। मेरे कहनेका मतलब यह है, कि यौवन ही यौवनका धर्म समझता है, प्राण मनसे समझता है और अन्तर अन्तरमें समझता है। हमारे क्लासमें लड़कोंकी जब रातकी ड्यूटी पड़ती, तब अपने एक उस बन्धुको जिसे हमलोग भाई कहते थे, हम लोग छुट्टी दे देते। वहाँ तो वह अपनी नयी बीबीके साथ आनन्द करता, यहाँ उसे रोगियोंके पीछे पीछे घूमना पड़ने लगा। वह अवश्य ही इस बातके लिये जबर्दस्ती न कर सकता था, परन्तु हमलोग तो समझते हैं, हमारे शरीरमें भी तो यौवन प्रदीप्त हो रहा है पर हमलोगोंकी इच्छा न रहनेके कारण ही उसके लिये ऐसी व्यवस्था कर दी थी, वह कभी कभी अपनी बीबीका धन्यवाद हमें कह देता था। इसीमें हम लोगोंको आनन्द मिलता था—इसीसे तृप्ति होती थी।

युवती धात्री (नर्स)को भी देखता हूं, यदि किसी तरह वे कोई शिकार जुटा लेती हैं, तो आकर दूसरीसे प्रार्थना करती हैं, दूसरी पर कार्य भार सौंप देती हैं, उसी समय

उनकी छुट्टी मंजूर हो जाती है। कितनी ही आनन्द, प्रकटकर चली जाती हैं। और बूढ़ी यात्रियाँ! यदि सुनती है तो मुँह फुलाकर, गाल कुप्पाकर बैठी रहती हैं! इसे परश्री कातरताके सिवा और क्या कहूँ?

यह लो, कूड़ा फेंकनेवाली गाड़ीका आवागमन आरम्भ हो गया। सवेरा होनेमें अब देर नहीं है। आज सोनेमें ही नहीं आया, न सही। एक रातमें नहीं ही सोया तो क्या हुआ? सवेरा होते ही, चा पीकर किताबें खोलकर फिर बैठा होगा। आजकल सामनेकी खिड़की बन्द ही रखता हूँ, उन्हें देखनेसे ही लिखना पढ़ना समाप्त हो जाता है और चले आनेकी इच्छा होती है। पर दोनोंसे एक की भी जब सम्भावना नहीं है, तब देखनेका ही क्या लाभ है? न पढ़कर फेल होनेके कारण जितनी लज्जा प्राप्त हो सकती है इस समय घर आकर माँके सामने खड़े होना, उससे भी अधिक लज्जाकी बात है।

तुम्हारा—

वरदा।

सङ्कोच नहीं होता। यह बिगड़ गया, यह न हुआ—यह भाव उनमें प्रबल रहता है, जिनमें स्नेह और माया ममता अधिक है। छोड़ो, इस बातको। मेरे कहनेका मतलब यह है, कि यौवन ही यौवनका धर्म्म समझता है, प्राण मनसे समझता है और अन्तर अन्तरमें समझता है। हमारे मकानके लड़कोंकी जब रातकी ड्यूटी पड़ती, तब अपने एक उस बन्धुको जिसे हमलोग भाई कहते थे, हम लोग छुट्टी दे देते। कहाँ तो वह अपनी नयी स्त्रीके साथ आनन्द करता, कहाँ उसे रोगियोंके पीछे पीछे घूमना पड़ने लगा। वह अवश्य ही इस बातके लिये जबर्दस्ती न कर सकता था, परन्तु हमलोग तो समझते हैं, हमारे शरीरमें भी तो यौवन प्रदीप्त हो रहा है पर हमलोगोंकी इच्छा न रहनेके कारण ही उसके लिये ऐसी व्यवस्था कर दी थी, वह कभी कभी अपनी स्त्रीका धन्यवाद हमें कह देता था। इसीमें हम लोगोंको आनन्द मिलता था—इसीसे तृप्ति होती थी।

युवती धात्री (नर्स)में भी देखता हूँ, यदि किसी तरह वे कोई शिकार जुटा लेती हैं, तो आकर दूसरीसे प्रार्थना करती हैं, दूसरी पर कार्य भार सौंप देती हैं, उसी समय

गुप्त चिट्ठी

सासने कहा—तुम उत्तरमें लिख दो, यह तुम्हारे पढ नेका समय है, इतनी बडी चिट्ठी लिखकर समय नष्ट न करो। केवल एक पोस्टकार्डमें यह लिख दिया करो, कि तुम कैसे हो। समझीं?

माथा झुकाकर चली आयी। मैं तो उन्हें यह न कह सकी, कि तुम्हारा लडका रातभर पढा करता है, सवेरे के समय जरा सोता है, सो न सो कर, उसने यह चिट्ठी लिखी है। उससे पढाईमें कोई हानि न पहुचेगी। यह बात कहती भी तो वे समझती, कि नहीं, इसमें सन्देह है! यही कहतीं—ये! सोनेके समय न सोकर ।

आज सवेरे ही मुझे पुकारकर उन्होंने फिर कहा है—चिट्ठी लिख दी वह?

मुझे फिर बायीं ओर माथा झुकाते देखकर बोलीं—आकर लिख दो। भरत बाज़ार जाते समय डाकखानेमें छोड आयगा।

लिख देती हूँ—कहकर अपने कमरेमें जाना ही चाहती थी, कि फिर उन्होंने पुकारा—बहू!

उनके पास जानेपर बोलीं—इस ढंगसे मत लिखो, कि मैंने यह बात कही है। तुम इस तरहसे

४

प्राणाधिक प्रियतम जीवन सर्वस्व,

रात भर जागकर चिट्ठी लिखनेके कारण स्वयं भी बातें सुनीं और मुझे भी सुनायीं! दो पहरके समय चिट्ठी आई। वस्त्रोंमें छिपाकर, कोठरीमें घुस, तन्मय होकर पढ़ रही थी, उस समय सास घोसके घर जा रही थीं, एकाएक खिड़कीके सामने खड़ी होकर उन्होंने पूछा—किसकी चिट्ठी है, बहू? उसने लिखी है? माथा झुका लेते देखकर, उस समय तो वे चली गयीं, तीसरे पहर लौटनेपर मैं ब्राह्मणके लिये अरवा चावल चुन रही थी, इसी समय मुझे पुकारकर बोलीं—क्या लिखा है? अच्छा है न? परीक्षामें अब कितने दिन बाकी हैं?

एक महीना।

सुनकर माथा झुका धीमे स्वरमे बोली—केवल एक महीना ही बाकी रह गया है, अभी भी सात गजकी चिट्ठियाँ लिखता है, पढ़ता कब होगा?

खूब कोमल स्वरमें ही ये बातें उन्होंने कहीं, परन्तु उनमें जो तेज था वह मुझे मिट्टीमें धँसाने लगा।

जाना ? एक समाचार जब अच्छा रहता है, तब सभी समाचार अच्छे होते हैं। जब खराब खबर मिलने लगती है, तब जितनी खबरें आती हैं, सभी खराब रहती हैं।

मालूम होता है, कि तुम सोचते हो, कि दो महीनोंसे ऋतु बन्द हो गया तो क्या हुआ ? उस बार भी तो दो महीने—दो ही क्यों अढाई महीनोंतक बन्द था। पर क्या हुआ, अढाई महीने बाद ही तो फिर हो गया। नहीं, देख लेना, इसबार वैसा न होगा। इस बार मैं अच्छी तरह समझती हू, कि तुम्हें एक ताजे फूल अथवा चन्द्रमा जैसा लड़का होगा।

कैसे जान गई—जानते हो ? तुमने सभी बातें खुलासा लिखनेको कहा था, नहीं लिखती हूँ तो रंज होते हो, इसी लिये सब लिखती हूँ, और मेरी तुम्हारी चिट्ठी—तो कोई दूसरा देखता भी नहीं है—तुम जो कुछ लिखोगे, उसे मैं पढ़ूँगी और मैं जो लिखूँगी सो तुम पढोगे। मानो हमलोग अपने सोनेवाले कमरेमें खाटपर लेटकर बातें कर रहे हैं—यही तो ?

तुम तो जानते हो, मित्तिर परिवारकी छोटी बहूसे मेरी सब बातें होती हैं। परसों दो पहरके समय वह

◆◆◆◆

लिखो मानो यह स्वयं तुम ही लिख रही हो, समझी और

और कहकर माँ चुप हो रहीं, कुछ क्षण बाद बोलीं— और लिख देना—कि पास करना ही होगा।

उनके मनमें चाहे कितना भी सन्देह हो, परन्तु मैं जानती हूँ, कि तुम अवश्य ही पास होगे। अच्छा बताओ तो सही कि मैंने कैसे जाना? हाँ हाँ, क्या बताओगे? मैं हाथ देखना जानती हूँ, महाशय, हाथ देखना जानती हूँ। हाथकी रेखायें देखकर कह दिया है—तुम देख लेना। नहीं नहीं, झूठी बात है, हाथ देखना नहीं जानती, ख्वाब जानती हूँ। एक दूसरे ही कारणसे मैं जान गयी हूँ। क्या कारण है, बताओ तो सही? यदि बता सके, तो समझूँगी, कि तुम बड़े बहादुर हो।

मैंने कारण नहीं बताया, इससे मालूम होता है, कि तुम रंज हुए हो? नहीं नहीं, रंज न होना—बताती हूँ।"

दो महीने तो हो गये, पर इस बाचमें लाल स्याहीसे लिखी हुई, क्या एक चिट्ठी भी मिली है? दो महीनेसे ऋतु बन्द है। तुम्हें लड़का होगा—बाबा कहकर पुकारेगा। अब तो समझ गये, कि तुम पास अवश्य होगे—यह मैंने कैसे

ही उठा लेते हैं। उनका भार मुझपर नहीं पड़ता, कष्ट भी नहीं होता।

मैंने कहा—पर लोग तो कहते हैं, कि गर्भवती होनेके साथ ही स्त्रीको मायके चली जाना चाहिये। उस समय पति स्त्रीको एक बिछावनपर सोना न चाहिये। लोग ऐसा क्यों कहते हैं?

सुहासिनी तो सुनकर अवाक् हो गयी। बोली—क्या कहती हो? मैं तो नहीं जानती, मुझसे किसीने कहा भी नहीं, कभी ऐसी बात भी न उठी।

मैंने उससे कहा, कि गर्भावस्थामें स्वामि-सङ्गसे गर्भके लड़केका शरीर नष्ट हो जाता है, बहुत बार गर्भपात भी हो जाता है, अपना शरीर भी खराब हो जाता है—लोग कहते तो ऐसा ही हैं।

सुहासिनी बोली—होता होगा। मैं तो यह सब नहीं समझती। मेरी जेठीकी गोदमें तीन तीन हैं, पर किसीका भी शरीर खराब नहीं, और गर्भपात तो एकबार भी न हुआ। अपना शरीर भी कौन सा ऐसा खराब है?

कुछ ठहरकर वह बोली—समझकर ही क्या करूंगी रह नहीं सकती, तब क्या करूँ? पहले दूसरोंकी

घूमने आयी थीं। उससे बातें होती थीं, कि वह बोलीं—गर्भिनी होतेही मेरे स्वामी बिगड़ उठते हैं। न जाने क्यों, उस समय नित्य रात्रिमें कैसी एक इच्छा उत्पन्न होती है, तुम्हें क्या बताऊँ, पुरुषोंकी यदि इच्छा न भी हो, तो स्त्री यदि मुहसे मुँह मटा, चूम ले, बदन पर सो जाये, तो पुरुष क्या और ठहर सकते हैं?

मैं चुपचाप सुन रही थी। एकाएक बोली—तुम्हें कष्ट नहीं होता?

सुहासिनीने हसकर कहा—दुत, पाँच महीनोंतक तो मालूम ही नहीं होता, कि पेटमें कुछ है या नहीं। इसके बाद जब पेट बड़ा हो जाता है तब भी कष्ट न होगा? उस समय दूसरा ही उपाय भी है।

दूसरा क्या उपाय है?

सुहासिनी बोली—सुनकर तुम्हें क्या लाभ है? तुम्हारे पति तो डाक्टर हैं, वे तुम्हें सब दिखा देंगे, डरकी कौनसी बात है।

इतने पर भी जब मैं जिद करने लगी। कहने लगी—बताती क्यों नहीं, तुमसे इतनी घनिष्ठता है।

बोली—उस समय पति मुझे मानो एकदम शून्यमें

आओ। ऐसा मालूम होता है, कि तुम कितने ही दिनोंसे न आये हो, कितनेही दिनोंसे मैंने तुम्हें न देखा है और न जाने कितने कालसे तुम्हारे कलेजेपर मस्तक रखकर न सोयी हू।

सुनकर सुहासिनी खूब प्रसन्न हुई है। नित्य ही वह मेरे मनकी बात पूछनेके लिये मेरे पास आती है। वह जानना चाहती है, कि मेरी अवस्था भी उसके जैसी ही है या नहीं। यदि कोई दूसरी बात उठाती हूँ, तो उसे दबा देती है। कुछ दिन पहले उसकी कितनी ही निन्दा की है, उसे कितने ही अपराध लगाये हैं, अब उससे कैसे कहूँ?

सुहासिनी फिर गर्भवती है। उसका छोटा लडका आठ महीनोंका है, इतनेमें ही वह फिर गर्भवती हो गयी है। उस दिन कहती थी, कि उसके स्वामी इस बार अप्रसन्न हो रहे हैं। छोटे लडकेने अपनी माँका दूध नहीं छोडा है, अभीसे ही बाधा पडनेसे लडका न जियेगा। सुहासिनीने भी इसबार अच्छी तरह सुना दिया है। उसने सब मुझसे कहा है। उसने कहा है—ओह! मेरे स्वामी भी कैसे पुरुष हैं, सोते समय तो चिलबिल करने आयँगे,

एकदिन नहीं कहूँगी तो दस दिन मुँह फुलाये रहेंगे, बात बातमें झगड़ा करेंगे, और फिर रज भी होंगे। सोते ही क्यों? न सोवो तो यह सब तो न हो!—बातें सुहासिनीने मेरे सामने ही इस तरह नाक भौं चढाकर कहीं, कि मेरा तो हँसते हँसते पेट फूल गया।

उसने कहा है—इसवार सब हो जानेपर नहा धोकर निश्चिन होऊँ तब मजा दिखाऊँगी। बिलबिलाते हुए आना और हाथ पकड़ना बता दूंगी।

मैंने उससे कहा—तुम भी तो वही करती हो।

वही बोली—मेरा दुर्भाग्य! किसने तुमसे कहा, कि मैं भी यही करती हूँ।

मैं बोली—क्यों उस दिन तुमने ही कहा था न, कि गर्भवती होनेसे

वह बोला—हाँ, कहा तो था, कि गर्भवती होनेपर मुझे वैसा ही होता है। पर न होनेसे तो नहीं होता है। इसीलिये कहती हु, कि इस बार नहा धो लूँ फिर मजा चखाऊँगी।

उसीने मुझसे कहा—जिस वर्ष उसका लड़का पेटमें आया था, उस समय उसके पति देवरोंसे मुकद्दमा लड

रहे थे, सुहासिनीके पति जीत गये। देवूजी हारकर देश छोड़ चले गये। मुझे भी लड़का होगा, डाक्टर भी परीक्षामें उत्तीर्ण होकर खूब बड़ी नौकरी पायेंगे।

निश्चय ! अवश्य !!

जिस दिन परीक्षा समाप्त हो, उसीदिन चले आना —समझ गये। देखना, पत्रका उत्तर देनेमें देर न हो। यदि बड़ा न लिख सके तो, छोटा ही लिखना।

तुम्हारा आशापथ देखनेवाली घातकिनी—

कुमुद।

५

प्रियतम,

तुम क्या मुझसे अप्रसन्न हो गये हो? दो पत्र लिखे, पर तुमने एकका भी उत्तर न दिया। क्या पढाईमें व्यस्त रहनेके कारण उत्तर न दे सके? परन्तु इतना तो लिख सकते थे, कि तुम कैसे हो। इतनेमें ही ऐसा क्या अधिक समय नष्ट हो जाता है? नहाने, खाने, पायखाना जानेमें यदि समय नष्ट नहा होता, तो क्या दो सतरोंका एक पत्र लिखनेमें ही सब पढना लिखना मिट्टीमें मिल जाता है। समय नष्ट नहीं होता, पर मालूम होता है कि तुम रुष्ट हो गये हो, इसीसे तुमने पत्र नहीं लिखा है।

पर यह तो समझमें नहीं आता, कि तुम क्यों रुष्ट हो गये हो? इस अभागिनीने तुम्हारे श्री चरणोंका ऐसा क्या अपराध किया है, कि उसपर तुम इतने अप्रसन्न हो उठे हो। यह सोचते ही मेरा कलेजा फट जाता है, कि तुम मुझपर अप्रसन्न हो। नहीं नहीं, तुम क्या मुझ पर रुष्ट हो सकते हो? तुम्हारा शरीर तो दयाका अवतार

है, उसमें तो आजतक कभी क्रोध दिखाई नहीं दिया! फिर ऐसा क्यों हुआ?

तब क्या तुम्हें मेरी चिट्ठी नहीं मिली? क्या दोनों ही पत्र न मिले? आजतक तो कभी पत्र गोलमाल न हुए! फिर इस बार क्यों न पहुँचे? किसीने बदमाशी कर पत्र चुरा तो न लिये? छि! उसमें न जाने कितनी ही बातें मैंने लिखी हैं, कोई देखेगा, तो मुझे कैसा बेहया समझेगा। कहेगा, कि कैसी निर्लज्ज स्त्री है, पत्रमें यह सब लिखती है। यह सोचते ही मेरा हृदय न जाने कैसा होने लगता है। तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, पत्र पाते ही लिखो, कि ये दोनों पत्र मिले या नहीं। लिखकर मेरी चिन्ता दूर करो। कई दिनोंसे यही सोच सोचकर मेरा मन अत्यन्त खराब हुआ जाता है।

यदि तुम्हें वह पत्र नहीं मिला, तो तुम्हें जो सुसम्वाद मैंने लिखा था, वह भी तुम्हें प्राप्त न हुआ होगा। आज दो महीने सोलह दिन हो गये —समझे?

समझ तो गये! यदि अब भी न समझो, तो न सही। मैं फिर पत्रमें कुछ न लिखूँगी। तुम्हारी [illegible] समाप्त और कितने [illegible] हैं? तुम कब आवोगे।

जिस दिन परीक्षा समाप्त हो, उसी दिन वहाँसे रवाना होनेकी इच्छा करना। जो न आये!—यह क्या सो अभी न कहूँगी। आनेपर ही मालूम होगा।

तुम्हारे श्रीचरणोंमें शतकोटि प्रणाम।

तुम्हारी दासी—

६

प्रिय कुमुद !

तुम्हारे तीनों ही पत्र मुझे मिले हैं। इसके लिये मैं बड़ा दुःखित हूँ, कि तुम यह सोचकर कष्ट पा रही हो, कि मुझे वे पत्र ही न मिले, परन्तु क्या करूँ, परीक्षाका समय है, पत्र न लिखनेका यह भी एक कारण है।

इतने दिनोंसे मैं जो डर रहा था, वही बात सामने आयी। छि छि ! माँ क्या सोचेंगी ? सब मन ही मन क्या कहेंगे ? अभी एक पैसा उपार्जन करनेकी शक्ति तो आयी नहीं, इतनेमें ही लड़के भी होने लगे। तुम्हारा पत्र जबसे मिला था, तबसे मन बड़ा चञ्चल हो रहा था, जवाब न देनेका यह भी एक कारण था।

विवाह भी ठीक दिल्लीका लड्डू है। नहीं हो तो करनेके लिये, मनुष्य छटपटाता रहता है, घबड़ाता है। और कर लेता है; तो उसे सुख शान्ति नहीं मिलती। जबतक विवाह न हुआ था, तबतक इस संसारके विवाहित पुरुषोंकी

गुप्त चिट्ठी

◆◆◆◆◆

सुख शान्तिकी मन ही मन कल्पना कर, न जाने मेरे मनमें कितनी अनुभूति एकत्र हो गयी थी। इसीलिये, तुम्हारे छोटे भाईने मेरी मौका मन्या दिया, मेरा हाथ पकड़कर भगिनीके भावसे उद्धार करनेके लिए कहा। उस दिन उनको भावसे उद्धार करने अथवा एक रमणी न गिनी सिद्धेगी यह बात जानकर, मनकी कैसी अवस्था हो गयी थी, सो व्यक्त करनेकी शायद भाषा ही नहीं है। मेरे सह पाठियोंमें जो विवाहित थे, वे ही मानो सबके आकर्षण थे। उनके पास बैठे बिना मेरा दिन ही न कटता था। उनसे कहे बिना तो मेरा पेट फूलता रहता था। जिस दिन उनकी बातें न सुनता, वह दिन मानो वृथा ही चला जाता। किसकी स्त्री किसे कितना प्यार करती है, सप्ताहमें कितने पत्र आते जाते हैं, उन पत्रोंमें क्या क्या कारड लिखे रहते हैं—ये सब बातें तो होती ही थीं इनके अलावा कौन रातमें कितनी बार क्या करता है, महीनेमें तीन दिनोंसे अधिक नागा होनेसे किसकी स्त्रीका मुँह भारी हो जाता है—यह सब सुन सुनकर अविवाहित लड़के अपने जीवनको कैसा निष्फल और व्यर्थ समझने लगते हैं! मैं भी उनमेंसे ही एक हूँ। इसीप्रकार

करता हूं—मनमें यही आता, कि इस जगतमें सुख जो है, वह इन्होंने ही आगे प्राप्त कर लिया—हमारे जीवनके लिये और कुछ न रहा—वह व्यर्थ हो गया।

माताकी इच्छा है, यह सुनकर तुम्हारे भाईकी बातोंका कोई उत्तर ही न दिया। मेरा मौनभाव देखकर तुम्हारे भाई मुझे अजस्र आशीर्वाद देने लगे। घर आते ही माँने कहा—लड़की अच्छी है। और भले आदमियोंकी तरह ये खर्च वर्च भी करेंगे। दान दहेज भी देंगे। और भी मालूम हुआ, कि लड़की बड़ी है, चेहरा भी खूब लम्बा चौड़ा है। बस यही बड़ी और लम्बा चौड़ा चेहरा लड़कपनका अ आ क ख हो गया।

विवाह हो गया।

लड़की सच ही अच्छी है, यह केवल मैं ही नहीं, मेरे बन्धु-बान्धव भी स्वीकार करनेके लिये बाध्य हुए थे। लड़कपनसे ही पश्चिमके स्वास्थ्यकर स्थानमें रहनेके कारण सैकड़े पीछे नब्बे बंगालिन लड़कियोंसे इस लड़कीका स्वास्थ्य अच्छा था, इस विषयमें न तो मुझे और न मेरे बन्धु बान्धवोंको ही जरा भी सन्देह रह गया।

परन्तु इस निःसन्देह अवस्थामें ही मेरे मनमें एक भय लगा रहता था। क्यों, सो बताता हूँ।

मालूम होता है, कि विवाहसे एक मास बाद ही षष्ठी देवीको निमन्त्रण पड गया है। उसी रातमें पहले पहल—याद तो है? तुम्हारी आत्मीया ताक लगाये बैठी थीं। दरवाजे तथा दीवारमें कहाँ छिद्र है, पहलेसे ही उन्होंने देख रखा था। तुम्हीं तो कहती थीं। इतने पर भी उसी रातमें हमलोगोंने यह सुधा आकण्ठ पान कर ली थी, जिस सुधाके लिये हमलोग अपने अविवाहित जीवनको सैकडों बार धिक्कार देते थे। पहली बार तुम्हें कितनी लज्जा हुई थी। शरीरका कपड़ा हटानेकी इच्छा करते ही नहीं, पैरमें हाथ लगा, कि नहीं, जो कुछ कहूँ—नहीं। परन्तु यह नहीं सुननेका धीरज उस दिन मुझमें न था। विवाहके बादकी सात रातें ऐसी Developed और पूर्ण यौवना कन्याकी अनाघ्रात और अस्पृष्ट व्यतीत हो गयी हैं, सुनकर सभी मुझसे व्यंग करने लगते थे—पर उनकी उन बातोंपर मैंने कान ही न दिया। विवाहित जीवनके प्रथम दिवस हमलोगोंने काम लालसासे हीन होकर बिता दिये थे, इसके लिये सच ही

मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई थी, परन्तु कितनी ही बातें सोच और कल्पना कर आते आते, इतना उत्तेजित और उद्भ्रान्त हो गया था, कि नहीं सुननेका फिर धीरज ही न रहा। पहली बार तुमने आपत्ति की थी, पर दूसरी तीसरी बार तुममें जरा भी द्विधा न दिखाई दी।

शेष रात्रिमें तुम्हारे मुँहसे ही सुना, कि पाँच दिन पहले ऋतु हुआ था। सुनकर मनमें थोड़ा भय उत्पन्न हुआ। जिन लड़कियोंका स्वास्थ्य अच्छा और शरीरके यन्त्रादि खूब सुगठित हैं, वे बहुत शीघ्र ही गर्भवती हो जाती हैं—मुझे यही भय था। तुम्हें याद है, या नहीं, नहीं जानता, उसदिन आनेके समय मैंने तुमसे कहा था, कि अन्य समय जिस तरह काली स्याहीसे चिट्ठी लिखती हो, उसी तरह लिखो, परन्तु ऋतु होनेपर लाल स्याहीसे चिट्ठी लिखना।

वे पचीस छब्बीस दिवस बड़ी ही अशान्तिसे बीते थे। मेरे बन्धुओंमें जिनका विवाह हो गया था, उनमें यह सब विचार—चिन्ता न थी। वे बड़े आनन्दसे ही अपने दिन बिताते थे। मैंने अपने भय और चिन्ताकी बातें अपने खूब अन्तरङ्ग मित्रोंसे भी न कहीं। दो एकसे कही

◆◆◆◆◆

-जी तो वे हँसते हँसते ही लोट पोट हो गये। उन्हें नेबहूका उदाहरण दिखा दिया। जिस मुहल्लेमें हमारा प्रेस था, उसी मुहल्लेके एक बढ़ीका नेवडू लड़का था—गोरो, विचित्र चेहरा! बिचारा विवाहके बाद एक दिन ससुराल गया, दो महीने बाद ही खबर आयी, नेबहूकी स्त्री गर्भवती है, लड़का होनेवाला है।

उस दिनसे नेबहूके मकानमें हलचल सी मच गयी। कितनोंहीने उसकी माँको परामर्श दिया, कि उसकी स्त्रीको अपने घर न बुलाओ। नेबहूको भी उसकी माँ यही समझाने लगी। मुहल्लेमें इस बातका शोर मच गया, कि नेबहूका दूसरा विवाह होगा। वह लड़का भी इतना बड़ा मूर्ख और अपदार्थ है, कि सुना है, वह भी दूसरा विवाह करनेके लिये तय्यार है। एक दिन मैंने उसे बुलाकर पूछा—बात क्या है? बोला—मैंने अपनी स्त्रीको त्याग दिया है।

मैंने कहा—स्त्रीका अपराध?

बोला—वह नष्ट—दुश्चरित्रा है।

इच्छा हुई, कि गालोंपर दो चार तमाचे जमा दूं। पर जो सभ्य पुरुषकी कन्यापर झूठा अपवाद लगा

सकता है, उसके शरीरमें हाथ लगानेकी भी इच्छा न हुई। बात करनेमें भी घृणा उत्पन्न होने लगी, परन्तु उसको दो चार कडी बातें सुनाये बिना भी न रहा गया।

बोला—अच्छा नेवडू, ठीक ठीक बताओ तो सही, कि तुम जिस रातमें ससुरालमें रहे थे, तुम्हारी स्त्री तुम्हारे पास सोयी थी?

वह गम्भीर भावसे बोला—सोयी तो थी पर इससे क्या?

इस बार मेरे मनमें भी एक भयानक सन्देह हुआ। यह क्या हो रहा है? सोयी थी, पर कुछ हुआ नहीं। यही उसका भाव था, फिर तो ये लोग जो अपवाद लगा रहे हैं, वह झूठा नहीं है।

कुछ सोच विचार कर बोला—"क्या तुम ठीक ठीक कहते हो, कि तुम दोनोंमें कोई सम्बन्ध न हुआ था।"

नेवडूने मुँह बनाकर कहा—सो क्या?

मुझे क्रोध चढ़ आया। बोला—यह भी नहीं समझते, कि स्त्री पुरुषका सम्बन्ध किसे कहते हैं?

नेवडू बोला—मेरी इच्छा न थी, उसने जबर्दस्ती

अब क्रोधको दबा रखना असाध्य हो गया। तड़से उसके गालपर एक तमाचा जमाकर बोला—बदमाश!

नेवडू तमाचा खा, रुष्ट हो, उठ खड़ा हुआ।

इधर कुछ नहीं, सब उधर ही! पुरुषोंका क्रोध क्या समझना है।

जल्दीसे हँस, उसका हाथ पकड़ बैठाता हुआ मैं बोला—नेवडू, यह तो एक दिल्लगी थी। समझ नहीं सके?

अब नेवडूका क्रोध ठण्डा हो गया। वह फिर बैठ गया।

मैंने कहा—नेवडू, इसका क्या प्रमाण है, कि उसी एक दिनके संयोगसे तुम्हारी स्त्रीको गर्भ नहीं रह गया है?

नेवडू मुँह बनाता हुआ बोला—ऐसा नहीं होता।

बोला—न होनेका तो कोई कारण नहीं है।

वह बोला—इस पृथिवीपर जो कभी न हुआ, वह केवल आपकी बातोंसे हो जायगा?

मैंने कहा—मूर्ख, पृथिवी इतनी छोटी नहीं है और तेरा ज्ञान भी इतना बड़ा चढ़ा नहीं है, कि समस्त पृथिवीके

समाचार तुझे अवगत रहेंगे ? विज्ञानका मत है, कि यदि एकबार दोनों शरीर हृदय खोलकर मिल जायें तो उसीसे गर्भका सचार हो सकता है।

नेवडूने कहा—प्रमाण ?

मैंने कहा—हजारों पुस्तकोंमें है, दिखा दूँगा।

नेवडू हँसने लगा। किताबोंपर वह विश्वास नहीं करता। सब भूल, सब झूठी बातें समझता है। उनमें प्रेमकी इतनी बातें लिखी रहती हैं—अथच प्रेम कहीं दिखाई नहीं देता। इसने उसे देखा, उसने इसे देखा, बस प्रेम उत्पन्न हो गया। उत्पन्न हुए बिना तो रह ही नहीं सकता—सब गँजेड़ियोंकी बातें।

उसे समझाने लगा—यह किताबे नहीं, विज्ञान है। जिस विज्ञानके बलपर आकाशमें हवाई जहाज उड रहे हैं पानीके भीतर भी मनुष्य जीवित रहता है—उसी विज्ञान की किताब

नेवडू बोला—जाओ, जाओ, ये बातें मैं नहीं मानता। मेरी मनि कहा है—यह कुलमें दाग लगानेवाली लडकी है—मैं उसे नहीं रख सकती।

नेवडू और उसके परिवारवाले उस अभागिनी बधपर

चाहे कितना ही दोष लगायें, पर मैं उनकी बातोंपर विश्वास नहीं कर सका, अब भी नहीं करता। इस तरहकी कितनी ही घटनायें घटी हैं और घट भी रही हैं। यदि गर्भ होनेको रहता है तो एक दिन, एक बारमें भी हो सकता है। और जब नहीं होता है, तब दस दिवस दस बारमें भी नहीं होता, पुरुषके वीर्यने एक बार, यथास्थानमें प्रवेश कर, उपयुक्त आहार पाया कि काम हो गया, उसी दिवस उसी क्षण गर्भ संचार हो गया। दस दिनोंसे उसका कोई सम्पर्क नहीं है।

ये कई दिन मेरे बड़ेही अशान्त बीते हैं। मुझे अशान्ति लज्जाके कारण ही हुई थी। और केवल लज्जा ही नहीं, मनस्ताप भी कम नहीं हुआ। दस दिन भी हँस खेल और भोगकर न बिताये गये, यह क्या कम दुःखकी बात है। तुमसे कहनेमें तो कोई आपत्ति नहीं है, विवाहके बाद दस महीने भी नहीं बीते और यदि कानोंके आगे टें टें सुन पड़ने लगा, यह रोग, वह चिन्ता—यही होने लगा, तो इससे बढ़कर अशान्तिकी बात और क्या हो सकती है। आजकलके लड़के यह न जानते हों, कि सन्तानके लिये ही विवाह किया जाता है, ऐसा नहीं है।

ये भी इस बातको किसी तरह जान गये हैं, परन्तु यह भी किसीने उनको नहीं बताया है, कि विवाह करनेका दूसरा उद्देश्य नहीं है, या रह नहीं सकता। अन्तत जबसे शरीरमें यौवनका सचार हुआ, तबसे ही विवाह करनेकी एक प्रबल आकाक्षा मनमें जाग उठी थी और वह प्रजा वृद्धिके लिये ही बीच बीचमें दुर्दमनीय नहीं हो उठती, यह बात भी निश्चय नहीं कही जा सकती। वह एक लालसा थी, शरीरकी एक क्षुधा, बडी ही तीव्र और भीषण क्षुधा थी! उस क्षुधाको निवारण करनेके लिये, कितने ही पाप कर्म भी करने पडे हैं। उस लालसा का अन्त न था! उद्देश्यहीन अमानुषिक लालसा मर्म मर्ममें अनुभूत होती थी। अनेक दिनोंकी भोग लालसा जो शरीरमें चक्कर लगाती फिरती थी, उसकी तृप्तिके लिये ही विवाहित जीवनका सूत्रपात हुआ था। यह कब नरकमें जा गिरेगी और उससे उद्धार मिलेगा—इसी चिन्तासे मुझे नींद न आती थी। नरकमें गिरनेका भय न था, पर उद्धार कर्त्ताकी चिन्ता खूब अधिक हुई थी।

परन्तु मेरी सब चिन्तायें दूर हो गयीं—तुम्हारा काल

गुप्त चिट्ठी

◆◆◆◆◆

म्याहीका पत्र पाकर। यह यद्यपि दो वर्षों की बात है, परन्तु मुझे ठीक ठीक याद है, कि उस दिन मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ था। उस दिन बड़ा आराम मिला था। उस समय कोई एक प्रतिरोधक व्यवहार करनेकी इच्छा थी। प्रतिरोधककी आवश्यकता इस लिये थी, कि बीच बीचमें फिर कभी कोई दुश्चिन्ता उत्पन्न न हो जाये। परन्तु एक ज्योतिषीकी कृपासे यह उपाय न करना पड़ा। वे पेशेदार ज्योतिषार्णव पण्डित न थे, एक साधारण मनुष्य थे, पर अशेष शास्त्रादि और सामुद्रिक विद्यामें उनकी असाधारण गति थी। उन्होंने मेरे जीवनकी अतीत और वर्त्तमानकी कितनी ही ऐसी प्रयोजनीय घटनायें विवृत की थीं, कि उनके कहे हुए भविष्यपर उसी समय मुझे विश्वास हो गया। उन्होंने कहा था? छब्बीस वर्षकी अवस्थामें मुझे पहली सन्तान होगी। उसी समय मुझे पटनाके अस्पतालमें नौकरी भी मिलेगी।

कोई सम्भावना न रहने पर भी पटनाके अस्पतालके इन्सपेक्टर जेनरल आफ आस्पिटेल्ससे एकाएक गहरा परिचय हो गया। ऐसे आमयिक उदार चेता महानुभाव साहब इस देशमें बहुत कम दिखाई देते हैं। उन्हो ने कहा

है, कि मैं तुम्हें भूल न जाऊँगा। और तुम परीक्षामें उत्तीर्ण होते ही मुझे खबर देनेसे न चूकना—इतना कहकर वे पटना चले गये। उस दिन सन्ध्या समय मेरे जो बन्धु मुझे उस ज्योतिषीके पास ले गये थे, उन्हें ले जाकर इम्पीरियल रेस्टोरेण्टमें खूब भोजन करा दिया।

उस समय फिर प्रति रोधक व्यवहार करनेकी इच्छा भी न रही।

परन्तु आज इच्छा होती है, कि व्यवहार करना उचित था। मेरे समान ही जिनकी सांसारिक अवस्था अच्छी नहीं है, जो स्वाधीन जीविका अर्ज्जन न कर सके हैं, जिन्हें पिता माता अथवा संसारके अन्य बडोंपर निर्भर कर रहना पडता है, यदि कारणवश उन्हें विवाह करना भी पडे तो प्रतिरोधक अवश्य व्यवहार करना उचित है। जो अपना भार स्वयं ही वहन करनेमें असमर्थ है, उसे उस समय एक भारको बढाना केवल पाप ही नहीं, बल्कि गहरी अमानुषिकता है। मैं शपथकर कह सकता हूँ, कि प्रतिरोधक पदार्थोंके मूल्यकी सूची भी मैंने संग्रह कर रखी थी, परन्तु उस ज्योतिषीके निर्भूल अतीत और वर्त्तमानको सुनकर भविष्यके सम्बन्धमें, मैं इतना निश्चिन्त हो गया

था, कि कभी यह सोच भी न सका, कि यह झूठ हो जायगा। परन्तु उनका क्या दोष है, वे तो ईश्वर नहीं हैं, आखिर वे मनुष्य ही हैं। कितनी ही क्षमता क्यों न हो जाये, मनुष्य मनुष्य ही रहेगा।

तुम्हारा पत्र पानेके बादसे पढ़ना तो चूल्हेमें गया, किताबें जहाँ पड़ी हैं, वहाँसे हटी भी नहीं। परीक्षा का जो फल होगा, वह बहुत कुछ अभीसे ही समझ गया हूँ। यह भी जानता हूँ, कि परीक्षामें पास न हुआ तो लज्जाकी मात्रा बढ़ेगी ही, कम न होगी। परन्तु क्या करूँ? जी नहीं लगता, केवल यही याद आता है, क्या कर बैठा हूँ। इस तरह पाठ्यावस्थामें ही वंश वृद्धि करने लगा हूं।

मेरी जान पहचानके बहुतसे मनुष्य ऐसे हैं, जो इसे केवल भगवानका काम कहते हैं। उनके मुँहसे सुना करता हूँ, कि ईश्वरने दिया है, वे क्या कर सकते हैं, वे निरुपाय हैं। परन्तु भगवानने कैसे दिया, यह समझमें नहीं आता। इसी मुहल्लेमें एक भले आदमी रहते हैं उनकी उमर भी अधिक नहीं है, चालीस बयालीस वर्षकी होगी। वे चौदह लड़कोंके बाप हैं। स्त्री मरणापन्न हो, लड़के

बच्चोंको ले, मायके भाग गयी। जाते समय स्पष्ट कह गयी, कि यह क्या लड़का पैदा करनेकी मेशीन है, कि जब इच्छा हुई, आवश्यकता हो या न हो, खींच खींच कर बाहर निकालोगे? * हे भगवान! सोचा था, कि इतनेसे ही वे चैतन्य हो जायँगे, अनुताप करेंगे, मरणापन्न स्त्रीकी चिकित्सा करायँगे, और पशु वृत्ति त्यागकर मनुष्य जैसे ही रहेंगे, परन्तु वैसा नहीं हुआ। सुना है, वे विवाह कर लेनेके लिये छटपटा रहे हैं। शायद शास्त्रकारोंने कहा है, कि पुत्रलाभ करनेके लिये ही स्त्री है। यदि यही बात है, तो यह भलेमानुष तो स्वय ही बच्ची देवी हो रहे हैं, फिर विवाह करनेके लिये क्यों लालायित हुए घूमा करते हैं? जिस ईश्वरकी ये दोहाई दिया करते हैं, उस भगवानने तो इनकी पुत्रेच्छा पूरी कर दी है। आशातीत रूपसे पूरी की है। फिर ऐसा क्यों करते हैं? इस क्योंका उत्तर—तुम और हम दोनों ही जानते हैं! इससे मालूम होता है, कि आजकलके मनुष्य, जो विवाह करते हैं, उनका विवाह की रात्रितक ही शास्त्रसे सम्बन्ध रहता है। इसके बाद सब शास्त्र अगाध जलमें डुबो दिये जाते हैं।

नोट—"स्त्रीकी चिट्ठी" पुस्तक देखिये।

गुप्त चिट्ठी

◆◆◆◆◆

ऐसे मनुष्योंका एक दल ऐसा भी है, जिसके मुहसे सुननेमें आता है, कि प्रतिरोधकका विचार करना भी भारी पाप है। मेरे मेसमें एक बुड्ढा रहता है, फ्रेंकलिन, सिद्, ब्रूश, इन सबका नाम ऐसे ही देवी देवताओंका नाम स्मरण करने लगता है। बड़ा साधु है। एक दिन उस होटलकी उड़ियानी दासीका अंग विशेष मर्दन करते पकड़ा गया। वह दासी फिर उस दिनसे वहाँ आती ही नहीं, परन्तु उस भले मानुषके चेहरेपर लज्जाकी रेखातक नहीं दिखाई देती। कहते हैं —उसमें क्या दोष है? शास्त्रमें लिखा है—इन्द्रिय पीड़िता नारीका

हमलोगोंने कहा—शास्त्र नहीं सुना चाहते। हमलोग बहुत दिनोंसे जानते हैं, कि आप इस उड़ियानीके साथ केलि कर रहे हैं। इसके दोष गुणपर भी हमलोग विचार नहीं किया चाहते। हमलोग केवल इतना ही कहना चाहते हैं, कि यदि उसे गर्भ हो जाता तो आप क्या करते? उसका भरण पोषण करते?

उन्होंने कहा—क्यों, भरण पोषण क्यों करता? वह तो केवल मेरे साथ ही नहीं रहती!

मैं बोला—यदि अदालतमें खड़ी हो कर यह यही प्रमाणित करनेकी चेष्टा करे।

अरे तुमलोग क्या जानो। इसके पहले ही सब गोलमाल मिट जाता।

किस तरह, यही तो हमलोग आपसे सुना चाहते हैं, आप ठहरे हमलोगोंके दादाकी भाँति।

उस भले आदमीने कहा—तुम सब डाकूर हो, मैं तुमलोगोंकी शरणमें जाता।

मार डालते? क्या दोनोंको ही?

दुर पागल! केवल कीड़ेको।

मैंने कहा—गर्भ पात करा देते। यही न?

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा—यस्मिन देशे यदाचार, काछा खोल नदी पार!

उसमें पाप नहीं होता?

पाप कैसा?

जीयने आश्रय ग्रहण किया है, उसकी हत्या करना,—भ्रूण-हत्या पाप नहीं है?

यह शास्त्रमें है। स्त्रीकी लज्जा बचानेके लिये आवश्यक होने पर ऐसा किया जा सकता है। यदि महाभारत

जो समझते कि देवताओंने ऐसे कितने ही काण्ड किये हैं, यह देखो कुन्तीको विवाहके पहले ही गर्भ हो गया, कुन्ती देवीने और क्या किया, लड़केको

मैं चिल्ला उठा, बिगड़ गया।

इसनेपर भी वे शास्त्रकी दुहाई देते ही रहे। सत्यवती जो पीछे शान्तनुकी प्रधाना महिषी

हमने कहा—जीवका जन्म देकर हत्या करनेके पक्षमें यदि आपके शास्त्रमें इतने उदाहरण हैं, यदि ये पाप और दुष्कर्म नहीं हैं, तो जीवका जन्म होनेके पहले ही यदि उसका पथरोध किया जाये तो यह क्यों पाप है? और इस सम्बन्धमें शास्त्रकारोंने कोई उल्लेख क्यों न किया? उसे पाप क्यों कहा?

दो दो चार धमकियाँ खाकर बुड्ढा कुछ नर्म हो गया। बोला—"उसमें क्या सुख मिलता है, कि शास्त्रकार उसका उल्लेख करते? इन अस्वाभाविक पदार्थों का उपयोग कर लेने से क्या प्रकृत सुखका चतुर्थांश भी प्राप्त होता है?"

इतनी देर बाद वृद्ध पहचाना गया। वह भी हम सभी जानते थे। मैंने कहा—अच्छा आपही बताइये, कि हम लोगोंमेंसे गृहस्थीके प्रतिपालनकी योग्यता कितोंमें

है ? कितने मनुष्य पाँच छ लड़कोंको अच्छी तरह खिला पिलाकर प्रकृत मनुष्य बना सकते हैं ? केवल इतना ही बता दीजिये, कि कितने मनुष्य दोनों शाम उपयुक्त आहार और शिक्षा अपने लड़कोंको दे सकते हैं ?

वृद्ध अपने देशके किसी गाँवका नेता था। यह बात जबसे हमलोगोंको मालूम हुई थी, तबसे ही हमलोग उसे ग्राम्य सिंह Village lion कहा करते थे। समाजकी अवस्थाके सम्बन्धका परामर्श पूछते ही वह गम्भीर हो जाता। आज भी हमारी बातें सुन, खूब गम्भीर हो चिन्ताकुल स्वरसे बोला—हाँ, तुम लोग ठीक कहते हो भाई, सब चीजें ही महँगी हो गयी हैं, और

इस मनुष्यकी एक बात सुननेकी प्रवृत्ति भी अब हम लोगोंको नहीं होती, सुनने योग्य कुछ था भी नहीं। असल बात हम लोगोंकी भाँति वे भी अच्छी तरह समझते थे, परन्तु स्वार्थ सुखमें विघ्न पड़नेके भयसे ही मानना न चाहते थे—इतना ही अन्तर था।

परन्तु, ऐसा करनेसे तो काम नहीं चल सकता। थोड़ा त्याग स्वीकार किये बिना भविष्य जिस अन्धकारमें है, उसीमें पड़ा रहेगा। थोड़ा त्याग, जिसे कहते हैं,

◆◆◆◆◆

वास्तवमें यह थोड़ा नहीं है, यह एक बड़ी चीज़ है। विराट विशेषण भी उसके लिये ठीक होता है, कि नहीं, सो नहीं कहा जा सकता। यदि प्रचण्ड कहा जाये तब भी सब भाव नहीं पैदा होते। उस क्षणिक सुखमें मानव जीवनकी इतनी आकांक्षा और कामना घुसी है, कि उससे वृहत पदार्थकी कल्पना खूब कम ही की जा सकती है। उसे थोड़ा कहना अन्याय है, पर भविष्यका दुःख भी थोड़ा नहीं है, इसी विचारसे थोड़ा कहा है।

विचार देखो, किसी गरीबके घरमें दस लड़के हुए। ईश्वरने दिये हैं, 'विधाताका किया कर्म" है, यह सब भूल जाओ,—उस क्षणिक सुखके कारण दस सन्ताने हुई हैं। बापकी अवस्था बहुत खराब है, लड़के बच्चोंको न पूरा भोजन मिलता है, न वस्त्र ही, माथेमें तेल नहीं है, हाथ पैरोंमें धूल भरी रहती है। धीरे धीरे सब बड़े हो गये, उस समय भी वही दशा रही। न अन्न न वस्त्र, कुछ दिन और भी बीतनेपर लड़के लड़कियोंके शरीरपर यौवन का चिह्न दिखाई दिया। यौवन भी तो कुछ विचार किया करता है। मान लो, दयाकर इनके यहाँ कुछ देरसे ही आया। लड़कियाँ एक टुकड़ा वस्त्र कमरमें लगाये

हैं, लडकोंकी भी वही दशा है। ऐसा भी हो सकता है, कि टुकडा भी एक पत्र ही हो, नहाते समय उसे उतार कर रख देना पडता है, नहीं तो गीला पहनकर ही घूमना पडता है—अपने लडके लडकियोंको जब माता, पिता इस अवस्थामें देखते हैं, तब वे क्या सोचते हैं? क्या करते हैं?

जिस क्षणिक सुखका उन्होंने उपभोग किया है, क्या उसे गाली नहीं देते? कितने ही आत्महत्या करते हैं? कितने ही नहीं भी करते, लोक चक्षुकी ओटमें पशुकी भाँति पडे रहते हैं। यही तो सुख है।

जिसके पास कुछ धन है, उसके लिये भी अधिक सन्तान कष्टदायक है। एक तो संसारके कितने ही पदार्थ ऐसे हैं, जो पैसा देनेसे नहीं मिलते, लडकोंके लिये सब से आवश्यक माँ है, वह पैसा खर्च करनेसे नहीं मिलती। माँ यदि जल्दी जल्दी सन्तान प्रसव करे, तो लडकेके लिये माँ-दुष्प्राप्य अथवा अप्राप्य ही हो जाती है—यह भी क्या किसीको समझाना पडेगा। उस समय लडके माँको नहीं पहचानते। पहचानते हैं, केवल माँके वेही दो पदार्थ, जो माँके शरीरमें भगवानने उनके ही लिये

बनाये हैं, उन दोनोंमें तथागतके लिये किस मन्दाकिनीकी मधुर धारा बहने लगती है, कौन जानता है। जिसके न मिलनेसे लड़के बचते ही नहीं।

कुमुद, जिस धाराकी बात मैंने अभी कही है, तुम्हें अभी उसका पता नहीं है, एक दिन पता लगेगा। मृगनाभिकी गन्ध एक दिन तुम्हें भी आकुल कर डालेगी। यद्यपि ईश्वरने नारी-देहमें उस मन्दाकिनीकी धारा दी है पर दुःखकी बात है, कि उसके साथ एक रक्षक लगाकर भूल कर गये हैं। कल खोल देनेसे जिस तरह पानी गिरने लगता है, उसी तरह उससे नहीं गिरता। देहमें, देहके सारसे उसकी उत्पत्ति होती है। यदि शरीर स्वस्थ्य रहा, देहका अपव्यय यदि कम हुआ, तो यह पदार्थ सन्तानके लिये प्रस्तुत हो सकता है, परन्तु ऊपरसे ऊपर सन्तान होनेसे शरीर तो अच्छा रह ही नहीं सकता, इसके अलावा एकबार प्रसव होनेके कारण शरीरके कितने ही पदार्थों का जो अपव्यय हो जाता है, उसका पता डाक्टर वैद्योंसे अधिक नारीको ही रहता है, अपनी अज्ञानावस्था में गाढ़र आर्जित अपनी अदृष्ट सन्तानको वह सब कुछ दान कर बैठती है। सन्तानके साथ ही शरीरका कितना ही

अंश बाहर निकल पड़ता है, वह एक नारी और भी देखती है, जो प्रसूतिके पास रहती है।

इस समय, एक बारका अपचय ही पूरा होते न होते, उसे यदि फिर मातृभावके लिये प्रस्तुत होना पड़े। जो होना ही पड़ेगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। क्योंकि अपचय नारीका ही होता है, पुरुषका कुछ भी नहीं होता। पाँच छ महीने अधिकसे अधिक यदि पुरुषने बिता भी दिये, पर इसके बाद ही जब स्त्री पास दिखाई दी और उसके शरीरमें बाहरसे कोई रोग न दिखाई दिया, उस समय उसकी इतने दिनोंकी भूखी देह क्या फिर शान्त रह सकेगी? साथ ही स्त्रीमें भी सुख भोगकी वाञ्छा कुछ कम नहीं रहती, पहले मुहसे कुछ नानुकर, कुछ अभिमान प्रदर्शित करती है, परन्तु पुरुषके शरीरसे निकला हुआ विद्युत प्रवाह जिस समय उसके अंगमें प्रवेश करता है, उस समय उसकी समस्त देहमें आवेश छा जाता है, उस समय वह भी सबान्त करणसे उस मिलनके आनन्दका उपभोग करनेमें किसी प्रकारकी द्विधा नहीं करती।

अपने एक बन्धुसे मैंने सुना है—उसकी बातें ही

◆◆◆◆◆

कहता हूँ, सुनो। प्रसयकर लौट आने बाद पहली रात तो इसी तरह कट गयी। इसके बाद दूसरी और तीसरी रातें भी बातें करते ही बीतीं। चौथी रातमें दोनोंने बातें करते करते ही एक दूसरेका चुम्बन किया। पाँच मिनिट बाद ही प्रथम मिलनके दिवस उन दोनोंने मिलकर जो शपथ खाई थी, कि कमसे कम एकमास नहीं, यह दोनोंही भूल गये। बस, इसी तरह होते होते हठात एक दिन सुना गया कि ऋतु नहीं हुआ।

पुरुषने विचारा—फिर!

नारी सोचने लगी—गोदके लड़केकी क्या दशा होगी! न तो दूध ही मिलेगा और न माताका भरपूर स्नेह ही प्राप्त कर सकेगा।

पाँच छ महीनेका जो लड़का था, वह क्रमश रोना, रोगी होने लगा। माँकी प्रकृति अच्छी नहीं थी, इसलिये उसे बीच बीचमें मार भी खानी पड़ती, इससे उसका मुह सदा कुम्हलाया रहता और दास दासियोंकी गोदमें रहनेके कारण वह और भी सूखा जाता था। यह तो एककी अवस्था हुई। अब जो पेटमें है, एकबार उसपर भी विचार करना चाहिये।

तुम स्वयं ही समझ सकती हो, कि पेटके बाहर हुए लड़केको जितनी आवश्यकता है, उससे कितनी अधिक उस भीतरवालेको रहती है। बाहरका लड़का स्वयं साँस ले सकता है, पिला देनेसे निगल जाता है, हँसता है, रोता है, हाथ पैर फेंकता और खेलता है—पर गर्भमें जो है, वह ! विचारेका श्वास भी माँको देना पड़ता है। उसकी हँसीका प्रबन्ध माताको करना पड़ता है, उसका आहार माताको जोगाड़ करना पड़ता है, पर वह कहाँसे देती है ? किस तरह इनका प्रबन्ध करती है,—इसकी खबर माताको स्वयं नहीं रहती। पर पर माँ जो करती है, वही होता है। जो माँ न कर सकती है, वह नहीं हो सकता। लड़केका वह अभाव दूर नहीं होता। इधर बाहरका लड़का दुःखी रहता ही है, अत उस पेटके लड़केने क्या पाया ? अप्रसन्नता और अस्वस्थता। जो अमूल्य सम्पत्ति उसे मिली, बाहर आकर वह उसका सौगुना बिताएगा। लड़का रोगी तो रहेगा ही, बिद्या और चरित्र हीन भी होगा। फिर वह पिता-माताकी क्या सेवा करेगा ? उनका मुख क्या उज्ज्वल कर

…सी उनकी दशा देखो, जो

सगका लोभ नहीं त्याग सकते। स्त्री पुरुष कोई भी यह लोभ त्याग नहीं सकता। इसमें सन्देह नहीं, कि दोष पुरुषके माथे ही मढ़ा जाता है परन्तु असल बात यह है, और अधिकाश मनुष्योंके मुँहसे सुननेमें भी आता है, कि दोनों ही समान है। दोष चाहे, जिसका हो, पर लड़केका मस्तक खाद्य हो जाता है। यदि यह कहो, कि उससे क्या सम्बन्ध है? यह तो एक सुरक्षित दुर्गमें है। परम यत्नके आवरणमें छिपा है, उसका अनिष्ट किस तरह हो सकता है, तो बताता हूँ, सुनो। स्त्री या पुरुष दोनोंको ही रमण इतना प्रिय है, कि इससे दोनोंके ही शरीरसे कुछ कुछ निकल जाता है—यह तो तुम जानती ही हो। अच्छा, निर्गत हो जानेपर फिर क्या सुख बोध होता है? और जिसकी अवस्था कुछ बड़ी हो गयी है, या जिसे कई सन्तानें हो चुकी हैं, उन्हें इस सुखाभासके बाद एक गहरी क्लान्ति या अवसाद मालूम होता है? कारण यह है, कि जो चीज निकल गयी, वही शरीरका सार भाग थी। जो स्थान खाली हो गया है, वह जबतक पूरा न हो जायगा, तबतक यह अवसाद दूर न होगा। फिर भी क्या क्लान्ति न आयेगी? अवश्य ही आयगी? इसलिये जो

मातायें गर्भ धारण करनेपर भी सार भाग नष्ट कर डालती हैं, उनकी गर्भस्थ सन्तान इस सार भागसे कुछ ग्रहण नहीं कर सकती। माके पास जो रहेगा, वही तो सन्तान पायगी। माताका भाण्डार ही यदि खाली रहा, तब फिर उस बिचारेके भाग्यमें तो शून्य ही लिखा रहता है। माँ यदि लड़केकी ओर ध्यान न दे, अपने नारीत्वके सुखका खेल ही खेलना चाहे, तो उस सन्तानको अपने खेलके कारण अवश्य ही प्राप्य वस्तुसे वञ्चित रखेगी। और वह बालक अपने जीवनमें उसे कभी संचय न कर सकेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। मिश्चिर परिवारकी छोटी बहू केवल अपना सर्वनाश ही नहीं कर रही हैं बल्कि अपना वंशका वंश चौपट कर रही हैं।

परीक्षाके समयका पढ़ना छोड़कर तुम्हें इतनी बातें लिखनी पड़ीं, इसका कारण यह है, कि तुम्हारे जीवनका एक महान सङ्कटकाल उपस्थित हो गया है। इससे बढ़कर नारी जीवनके लिये कोई दूसरा सङ्कट नहीं है। जिस दिनसे तुम्हारे शरीरमें एक जीव वास करने लगा है, उसी दिनसे तुम पृथ्वीकी भाँति जननी हो

अब तुम नारी नहीं हो, तुम्हारा नारीत्व एक क्षुद्र पदार्थ था, उसका तुमने और मैंने—दोनोंने ही उपभोग कर लिया है। अब उस नारीत्वके साथ एक बड़ा ही दायित्व, मातृत्व आ गया है! अब तुम एक मात्र मेरी नहीं हो—यह कहा जा सकता है कि अब तुम माँ हो। तुम्हारे कल्याणके लिये इस पृथ्वीपर जो आ रहा है, उसे धारण करनेके लिये ही भगवानने तुम्हें नारीत्व दिया था। वह नारीत्व वृथा न गया, अपने स्वामी—पतिको तुमने उस नारीत्वके द्वारा तृप्त-शान्त कर दिया है। नारीत्वने ही तुम्हें स्वर्गके द्वारपर ला खड़ा किया है और उसीने तुम्हें स्वर्गके दरवाजेपर खड़ी कर मातृत्वसे अभिषिक्त किया है। कहा है, अबतक तुम केवल नारी थी, अब तुम नारी—जननी हो। अब तुम्हारे नारीत्वकी ओर देखनेका अधिकार पतिको भी नहीं है।

कुमुद, मैं भी कायमनसे प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हारा मातृत्व पूर्ण हो, धन्य हो और सार्थक हो। तुम गर्वके सहित सन्तानका परिचय दे सको। उसके गौरवसे तुम गौरवान्वित हो, उसके सुखसे तुम सुखी हो, उसके लिये तुम्हें लज्जा या मनस्ताप न हो—तुम्हें

एक दण्डके लिये भी लज्जित न होना पड़े—यही मेरा आशीर्वाद है।

तुम संयत हो पर तुम्हें और भी सयत होना पड़ेगा। तुम मिष्ट भाषी, सदा हास्यमुखी हो, अब तुम्हारे कण्ठमें सदा मधु संचित रहे। तुम्हारा स्वभाव अत्यन्त धीर है, वह और भी धीरा हो जाये। तुम सदा हास्य मुखी हो—अब उस हंसीमें मानो अमृतकी वर्षा हो। तुम सुरूपा हो, भगवान तुम्हें और भी रूप दें,—रूप, जय, यश, सतानका मंगल करेगा।

तुम्हारी कामना एक हो, वासना एक हो, आकाक्षा एक हो,—सब मिलकर तुम्हारी उस सन्तानपर एकत्र हो, वही तुम्हारा लक्ष्य हो, वही तुम्हारे मातृ-पथका ध्रुवतारा हो, उसके मंगलके लिये तुम स्वस्थ देहसे जननीत्व लाभ करो—मेरी यही प्रार्थना है।

परीक्षामें उत्तीर्ण होना ही पड़ेगा। उत्तीर्ण न होने से परनिर्भरता न जायगी। भिक्षा माँगकर कितने दिन कट सकते हैं ?—और जो हमारे जीवनका आलोक, उत्साहका वायु, उद्यमका तेज अपने साथ ले, जीवन पथको भी आलोकित करनेके लिये आ रहा है, उसके

आगमन कालमें अब नीच भिक्षा-वृत्ति नहीं ही करनी पड़े—यही अच्छा है।

परीक्षाके बाद घर आऊंगा। तुम यदि आनेको कहो, तभी आऊंगा। तुम इस पत्रको ध्यानसे पढ़ना, मैंने सभी बातें तुम्हें स्पष्ट लिखी हैं, गोपनता मैं पसन्द नहीं करता। पढ़कर भी यदि आनेको लिखोगी, तो आऊँगा।

मुझे विश्वास है, कि तुम बुद्धिमता शिक्षिता हो, तुमसे ठीक ही उत्तर मिलेगा।

७

कल्याणीयायु,

कल तुम्हें एक पत्र भेज चुका हूं। आज अवश्य ही वह तुम्हें मिल गया होगा। कल यह पत्र भी तुम्हें मिलेगा। अत कलका समय काटनेका साधन मैंने तुम्हारे पास उपस्थित कर दिया है।

कलकी चिट्ठीमें मैंने तुम्हें लिखा था कि यह सोच कर मुझे लज्जा होती है, कि लोग अपने मनमें क्या सोचेंगे। झूठ क्यों कहूं, वास्तवमें कुछ लज्जा हुई, पर आज कुछ नहीं है। कल रातभर सो न सका। पहले तो दो बजे राततक पढ़ता रहा, इसके बाद बत्ती बुझाकर यह सोचता रहा, कि यह लज्जा क्यों, किस बातकी लज्जा है? ऐसा कोई बुरा काम तो किया नहीं है, जिससे लज्जा प्राप्त हो। कोई पाप भी नहीं किया है, कि लोगोंके सामने मुँह न दिखा सकूँ—माथा झुक जाये। बाप माँ, जब लड़केका विवाह करते हैं और दोनों ही प्राप्त वयस्क हो जाते हैं, उस समय क्या वे नहीं जानते कि सन्तान होगी? क्या इसी आशासे वे लड़केका

◆◆◆◆◆

विवाह नहीं करते? पोतेका मुँह देखनेका आग्रह क्या सबसे अधिक उन्हें नहीं रहता? अतः ऐसा कोई अस्वाभाविक और अकर्म नहीं किया है, जिससे लज्जा प्राप्त हो। पर जो लज्जा उत्पन्न हुई थी, वह मेरे विचारके दोष अथवा दुर्बलताके कारण! आज मैंने यह समाचार अपने कालेजके दो तीन लड़कोंसे कह दिया। कहनेसे ही कुछ खर्च भी हो गया, लड़कोंने छोड़ा नहीं। एक साहबी होटलमें जाकर खूब भोजन करने बाद ही उन्होंने मेरा पिण्ड छोड़ा।

अच्छा गुनुद, तुम्हीं बताओ, कि पहले दिन जब घरके मनुष्योंको इस बातकी खबर मिली, कि तुम गर्भवती हो, उस दिवस क्या तुम लज्जित हुई थीं? यदि हुई थीं तो तुम्हारे हृदयमें कैसा भाव उत्पन्न हुआ था? यदि यह मुझे बता सको तो बड़ा उपकार हो। तुम्हारे मनकी बात यदि मैं न जान सका, मेरा ज्ञान एकाङ्गी और स्वयं ही सर्वस्व हो रहा, उसी तरह यदि तुम भी मेरे हृदयकी बातें न जान सकीं, तो तुम्हारा ज्ञान भी मेरे जैसा ही असम्पूर्ण रह जायगा। इस लिये इस बातका जानना आवश्यक है। पत्रोत्तरमें लिखना।

गुप्त चिट्ठी

जो समाचार जतानेके लिये, आज यह पत्र लिखा है, वह यह है —

आज सवेरे हमारे डेरेपर तुम्हारे बड़े भाई आये थे। बोले—परसों सपरिवार आये हैं। तुम्हारे बड़े भाई इसबार बहुत सुस्त दिखाई दिये, आधे हो गये हैं। बोले, कि कन्याके विवाहकी चिन्तामें ही वे ऐसे हो गये हैं। मैंने उनसे कितना ही कहा, कि शची तो अभी बहुत छोटी है, अभीसे उसके विवाहकी इतनी चिन्ता क्यों? पर उन्होंने माथा हिलाते हुए कहा—भाई! लडकीका विवाह! अब और तरहका कैसा विचार!

बातों ही में मालूम हुआ कि इन दो वर्षोंमें ही शची अत्यन्त प्रकाण्ड हो गया है—उसके मुँहकी ओर देखा नहीं जाता। मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, कि जो शची मेरे विवाहके समय, दो वर्ष पहले, इधर उधर दौड़ती फिरती थी, वह इतने ही समयमें ऐसी कैसे हो गयी, कि उसका पिता उसकी ओर देखते ही आधा हो जाता है।

तुम्हारे बड़े भाईने कहा—स्वास्थ्यकर स्थानमें रहनेके कारण शचीके शरीरमें यौवन शीघ्र ही आ गया है—

इसलिये उसका विवाह किये बिना काम नहीं चल सकता।

मैंने उन्हें समझाया, कि यौवन भोगके लिये नहीं आया है। यह फूलकी कली है, रससे भरकर भावी सौन्दर्यकी आगमन वार्ता जतानेके लिये आयी है। अभी उसमें फूलका सौरभ भी नहीं है, विकास भी नहीं है। इस कलीके खिलनेपर असली फूल दिखाई देगा। उसी समय उसका सौरभ उपभोग करने योग्य होगा, उसी समय उस पुष्प जन्मका चरम विकाश होगा। उन्होंने इन बातोंपर ध्यान न दे, एक सूखी हँसी हँसकर कहा—"मैं यही जानता था, कि तुमने केवल डाक्टरी ही पढी है, साथ ही साथ भाषा और साहित्यकी सेवा भी की है—यह मै नहीं जानता था। बोले—कविता करनेका अभ्यास है?

मैंने कहा—भाई साहब! यह भाषाकी बात नहीं है, कविताकी भेजमाला भी नहीं है—जो कहता हूँ, वह भी शरीर विज्ञान—डाक्टरीके अन्तर्गत ही है।

उन्होंने कहा—कैसे?

मेरा मुँह कैसा है, यह तो तुम जानती ही हो।

स्पष्ट भाषामें ही कहना आरम्भ कर दिया। अच्छा भाई साहब! बङ्गालियोंकी लडकियोंको कितने वर्षकी अवस्थामें यौवन प्राप्त होता है?

वे बोले—सोलह, कभी चौदह पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें भी।

मैंने कहा—कभी कभी बारह तेरह वर्षकी अवस्थामें भी।

वे बोले—बारह तेरहमें हो जाता है—ऐसा तो सुना नहीं।

मैंने कहा—यौवनकी पहचान क्या है?

उदास भावसे वे बोले—देखनेसे ही वह मालूम हो जाता है।

मालूम हो गया, कि इस सम्बन्धमें उन्हें कुछ विशेष ज्ञान नहीं है। मैंने कहा—पुरुषोंको उस समय प्राय ही मूँछोंकी रेखा दिखाई देती है, बगलमें भी केश दिखाई देते हैं, शरीर भी हठात् बढ़ा करता है और इसी समयको डाक्टर कहा करते हैं, कि इसमें शुक्र प्रस्तुत होता है। इसी शुक्रके उत्पन्न होनेके कारण लडके पुरुषांगमें कुछ स्फुरण अनुभव किया करते हैं—ये ही तो यौवनके लक्षण हैं! भाई साहबने स्वीकार किया।

मैंने कहा—भय्या, यदि यही बात ठीक है, तो उस यौवनागमके समय लड़के यदि यौवनका व्यवहार करें तो उसे आप दोष नहीं समझते ? लड़के उसी समय तुरन्त मैथुन करना आरम्भ करते हैं, फिर लड़के आप इन्हें ही निरन्तर एक अनुचित कार्य करते हैं—उनके पास यौवन आया है, उसका वे उपभोग करते हैं—इसे आप पाप समझते हैं या नहीं ?

तुरत ही उन्होंने कहा—दोष नहीं है ! आज कलके लड़के ऐसे दुबल और असमर्थ क्यों हो जाते हैं—इसी लिये तो। छोटी अवस्थामें ही यौवन आ गया है, इसी लिये उसका व्यवहार करना उचित नहीं है—करनेसे शरीर खराब होता है—यह ठीक बात है। मैंने कहा—फिर भाइ साहब ! लड़कियोंके सम्बन्धमें इस विषयपर इस भावसे आप क्यों विचार नहीं करते ?

वे हँसते हँसते बोले—अरे पागल ! वह तो लड़की—स्त्री है।

मैंने कहा—आपकी विचारशक्तिकी बलिहारी है। लड़की रहनेके कारण उसके यौवनके अपव्ययपर विचार ही न करना चाहिये। आपके तो अच्छे विचार हैं। लड़कोंकि

सम्बन्धमें जो बात लागू है, लड़कियोंके सम्बन्धमें वही क्यों लागू नहीं हो सकती ? शरीर तो दोनोंको ही है।

वे बोले—तुम नहीं समझते हो! लड़कियोंको यौवन पहले आयगा ही। ईश्वरका यही निर्देश है।

देखा, कि तुम्हारे भाई म हब, असल बातको छोड़ देना चाहते हैं, अब उन्होंने ईश्वरकी दोहाई देना आरम्भ किया है, अब मैंने भी यही राह पकड़ी। बोला—लड़कियोंके यौवनागमनके क्या लक्षण हैं ?

उन्होंने जरा इधर उधर कर कहा—यह जिस तरह, जिस तरह, हाँ जिस तरह

मैंने कहा—वक्षमास पुष्ट होता है

उन्होंने कहा—हाँ यही यही।

मैं समझ गया कि उन्हें सकोच हो रहा है, पर मैं तो बेहया कहलाता हूं। मैंने कहा—स्तन दिखाई देते हैं, उनको बगलमें भी केश होते हैं, लम्बाई बढ़ती है, ऋतु आरम्भ होता है

वे बोले—हाँ हाँ, यही यही।

मुझे हँसी आ गयी। पर हँसी रोक, गम्भीर भावसे मैंने कहा—"देखिये भाई साहब! लड़कोंके सम्बन्धमें जैसी

◆◆◆◆◆

बात आपने कही, कि सोलह वर्षकी अवस्थामें शुक्र उत्पन्न होनेपर भी उसका अपव्यय न करना चाहिये, उसी तरह लड़कियोंके ऋतु होनेका समाचार आने पर भी यह समझना चाहिये, कि डिम्बकोषमें डिम्ब उत्पन्न होना आरम्भ हो गया है—यह भी शुक्र है—उसका अपव्यय करना, उचित नहीं है। करनेसे लड़कोंकी तरह लड़कियोंका स्वास्थ्य भी नष्ट हो जाता है, लड़के या लड़कियोंके छोटी उमरमें ही, यौवन समागमके समय, जो शुक्र उत्पन्न होता है, वह क्या है, जानते हैं! वह मानो पुष्पका मधु है! फूल खिलने पर ही केवल मधु दिखाई नहीं देता, कलीमें भी वह मधु रहता है। कली खोलकर मधु नष्ट कर देने पर देखेंगे, कि जो फूल खिला उसे फूल कह ही नहीं सकते। लड़के लड़कियोंके शरीरमें भी जो मधु उत्पन्न होता है, पूर्ण विकाश होनेतक उसे नष्ट होने देना उचित नहीं है। हो गया है, रहे, अब खिलेगा तब भँवरेकी खोज की जायगी।

वे बोले—भाई! पहले एक दो लड़कियाँ हों, ईश्वर की दयासे जीवित रहें, बड़ी हों, तब देखूँगा, उस समय देखूँगा, कि ये उपमायें कैसे मुँहसे निकलती हैं।

मैंने पूछा—अच्छा, उस समय क्या समझूँगा—अभीसे ही उसे समझ रखूँ।

पहले तो वे कुछ बोले नहीं। अनेक आपत्तियाँ कीं, "उस समय आप ही समझ जाओगे किसीको कुछ कहना न पड़ेगा, आपही आप सब ज्ञान उत्पन्न हो जायगा"—येही बातें कहकर, असल बात ही वे उड़ा दिया चाहते थे, परन्तु मैं कब छोड़नेवाला था? मैंने कहा—"नहीं, सो न होगा, बताना ही पड़ेगा। मैं किसी दूसरेसे नहीं पूछता, अपने अनुभवकी वर्त्तमान बातही बता दीजिये। शची तो बड़ी हो गयी है, उसके सम्बन्धमें आपके मनमें क्या विचार उत्पन्न होते हैं, यही मुझे बता दें।

अब लाचार हो तुम्हारे भाई साहब कहने लगे—भाई, जिस दिन श्रीमतीसे सुना, कि शचीको क्या कहूँ—यह यह हुआ है, उसी दिनसे मेरे मनमें यह भय उत्पन्न हो गया, कि न जानें कहीं कुछ कर बैठे; तुम तो डाक्टर हो, जानते ही हो कि उस समय, लड़के लड़कियाँ जरा घुल घुल उठते हैं, नौकर चाकर पचास मनुष्य रहते हैं, न जाने कौन क्या कर बैठे और एक दिन जहाँ स्वाद मिल गया, फिर क्या रक्षा हो सकती है, अन्तमें मुँहमें

लग जायगी। जिस दिनसे यह सुना, उसी दिनसे उसका छतपर जाना बन्द कर दिया। शचीके भाईके, जितने संगी साथी खेलने आते थे, शची भी उनके साथ खेलती थी, अब मैंने सबका आना बन्द कर दिया। मैं तो दिन रात आफिस और अदालतमें घूमा करता हूँ, श्रीमतीको आज्ञा दे दी है, कि सदा उसे अपनी आँखोंके सामने रखो, आँखोंकी ओट न होने दो।

सुनते ही मैं तो स्तम्भित हो गया। एकाएक यह परिवर्तन देखकर बिचारी शचीने ही मनमें क्या सोचा होगा। शचीके भाई या उसके साथियोंके मनमें ही क्या विचार उत्पन्न हुआ होगा।

मैंने पूछा—क्या शची अपने भाई और उसके साथियोंके साथ खेलती थी?

क्या खेलेगी अपना माथा। मकानके सामने एक खुला मैदान था वहीं दौड़ धूप उछल कूद करती थी—और क्या करेगी। सभी तो उसके साथी थे।

कितने ही माँ बाप नहीं जानते हैं कि दस ग्यारह वर्षकी लड़कियोंका दौड़ना घूमना या उछलना कूदना अथवा इस तरहका अन्य खेल खेलना अनुचित है। चिल्लाना भी दोष

है। लड़कोंके लिये इस ढंगका खेल अच्छा हो सकता है, दौड़ धूपसे उनकी हड्डियाँ मजबूत होती हैं, खिलानेसे उनका मन खुलता है और कूद फाँदसे उनमें फुर्ती आती है, परन्तु लड़कियोंके लिये इनमेंसे कोई भी खेल अच्छा नहीं। यह असमयमें ही यौवन ला देता है, अधिक धूप जिस तरह कटहलको असमयमें ही पका देती है, ठीक वही दशा है। तुम्हारे भाईको यह बात समझाते ही वे एकदम भले आदमियोंकी तरह बोल उठे—तुम्हारी डाक्टरी विद्याकी इतनी खबर कौन रखता है, और जान कर कुछ अधिक लाभ भी तो नहीं है।

यह कहते ही कि लाभ यथेष्ट है, उन्होंने क्या कहा जानती हो? बोले—अब यह जानकर शचीका यौवन तो रोका नहीं जा सकता, फिर वृथाही अपना मन क्यों दु:खित किया जाये।

मैंने पूछा, कि आपको और कितने लड़के लड़कियाँ हैं?

बोले—लड़कियाँ तीन और भी हैं लड़के दो हैं, इतनेपर भी श्रीमती फिर गर्भवती हैं।

सुनते ही मैं तो अवाक् हो गया। छ वर्त्तमान हैं,

एक प्राय वर्त्तमान है। और भविष्य तो अज्ञात है ही। अज्ञताका एक दूसरा ही दण्ड है।

पूछा—शचीके विवाहमें कितना खर्च करेंगे?

बोले—भाई! अधिक कहांसे करूंगा? बहुत तो दो हजार रुपये। तीन लड़कियाँ और भी हैं, उनका भी तो विवाह करना होगा। पूँजी तो नौ हजार रुपयेकी ही है। लड़के भी हैं, उनके पीछे भी तो खर्च कम नहीं पड़ता है। तीन सौ रुपये महीनेकी आमदनी है, सौ रुपये तो गृहस्थीमें ही लग जाते हैं, पचास इधर उधरमें खर्च हो जाते हैं, बाकी बचे डेढ़ सौ रुपये! बताओ अब और कितने दिन काम काज कर सकूंगा।

मैं बोला—अभी तो और भी दो चारके होनेकी सम्भावना है।

वे बोले—हो सकता है। कुछ कहा तो जा नहीं सकता। और वृक्ष भी फलदार है।

हा अदृष्ट! वृक्ष फलन्त है—उसीका दोष है। ऐसाही तो आजकलका विचार है। जो हो, उस विषयमें कुछ न कहकर मैंने कहा—अब न होना ही अच्छा है।

यह क्या मानता है ?

मैंने कहा—फिर उसका कोई उपाय क्यों नहीं करते ? सोचा था, कि लज्जा त्यागकर और भी कुछ कहना पड़ेगा, परन्तु वैसा न करना पड़ा, वे सब जानते हैं।

वे बोले—वृद्धावस्थामें क्या यह सब होता है ?

मैंने कहा—देखिये, उसके लिये किसी अवस्थाका विचार नहीं है। जब आवश्यकता प्रतीत हो, तभी करना चाहिये और तब करना ही उचित भी है, जब आपको यह इच्छा नहीं है, कि अधिक लड़केवाले हों, तभी यह उपयुक्त समय है कि आप × ×

वे बोले—स्त्री राजी नहीं होती।

इतना कह बात बदलनेकी इच्छासे बोले—भाइ, यदि किसी पात्रकी खबर मिले तो देखो। यह तो समझ ही गये हो, कि एक दायित्व आ पड़ा है। पाँच मनुष्योंकी सहायता मिले बिना उद्धारकी आशा नहीं है।

मैंने अबतक यह वक्तृता इस लिये दी थी, कि कमसे कम दो वर्षतक शचीका विवाह और स्थगित हो जाये, पर जब उससे कोई उपयोग होता न दिखाइ दिया, तब मैं बोला—"हमारी जान पहचानके जो बन्धु बान्धव हैं,

सभाकर यह प्रस्ताव पास किया है, कि छोटी अवस्थाकी लड़कीसे विवाह न करेंगे।

सुनते ही वे घबड़ा गये। बोले—मालूम होता है, कि कलकत्तेमें इसके लिये सभा हुई थी। उनके गलेका स्वर अत्यन्त भय शुष्क और निराश व्यञ्जक था।

बोला—हुई थी क्या! अभी तो हो रही है। कई दिन पहले ईडन होस्टलके लड़कोंने एक मीटिंग कर

वे अत्यन्त शुष्क और क्षीण स्वरमें बोले - अवश्य ही सब एकमत न हो गये होंगे?

उनको इस तरह भय कम्पित देखकर मुझे हँसी आ रही थी, परन्तु उसे रोककर बोला—नहीं, सभी एकमत नहीं हुए हैं, परन्तु वैसे लड़के एकसे अधिक नहीं है। अब तो समझ गये—यह एकमत होनेके समान ही है छोटी अवस्थामें ही लड़कीका विवाह और उसे मारकर देनेके कारण आजकल गृहस्थोंकी कैसी दशा हो रहा है—यह तो उन लड़कोंसे छिपा नहीं है। सभी देखते हैं, कि घर घरमें बीमारी और हाहाकार मच रहा है। आदि कितने ही कारणोंमें सबसे प्रधान कारण छोटी अवस्थामें लड़कियोंका विवाह है, और भी कई कारण अवश्य हो

है, परन्तु इसने जितनी हानि पहुचायी है, उतनी दूसरोंने नहीं। इसी लिये आजकलके शिक्षित लड़के दल बाँध कर समाजके विरुद्ध खड़े हो गये।

खूब किया है, मेरा सर किया है।—कहते हुए वे मुह फुलाकर बैठ गये। कुछ देर बाद बोले—परन्तु ये लड़केही तो रात्रिमें थियेटर देखते हैं, और वेश्याओंके घरमें फेरा लगाया करते हैं। उनसे विवाह कर लेना क्या अच्छा नहीं है?

नहीं, बल्कि यह अच्छा है। समस्त जीवन कष्ट भोगनेकी अपेक्षा वेश्यागमन खराब नहीं है।

पाप भी नहीं है?

पाप पुण्यके विषयमें नहीं कह सकता, यह सब आपलोग जानें, परन्तु डाक्टरी मत यह है, कि प्रवृत्तिकी अत्यधिक ताड़ना यदि हो तो सावधानतासे वेश्यागमन करे, पर अप्राप्त यौवन स्त्रीका सहवासकर अल्पायु सन्तान उत्पन्न कर, समाज तथा देशको भाराक्रान्त और दुर्दशा ग्रस्त न करे।

"परन्तु यदि शरीरमें कोई भयानक रोग प्रवेश कर जावे तब?"

आगे ही कह दिया है, कि जब योवाका वेग किसी तरह सहन न कर सके, तब खूब सावधान हो वेश्यालयमें जाये, खूब सावधान रहनेसे प्रायः रोग न होंगे और यदि हो भी जाये तो उसको अच्छा करनेके उपाय भी हैं।

उपाय नहीं; कलांक है, सात पुरततक भोग करना पड़ता है—यह भी जानते हो?

जानता नहीं हूं? वैसे भी मनुष्य हैं, उनके लिये भी उपाय हो रहे हैं, वे अपने जीवनमें विवाह ही न करेंगे, और विशेषकर मेरा तो यही मत है कि वैसा रोग यदि किसीको हो जाये तो उसे विवाह न करना ही उचित है।

तब तो एक वंश नष्ट हुआ न?

हुआ तो क्या हुआ? परन्तु दूसरा उपाय क्या है? इस तरह दो या दस वंश भी यदि नष्ट हो जायें तो देश या समाजकी कोई हानि न होगी। देशकी जनसंख्या Population बहुत बढ़ गयी है। घटनेकी ही जरूरत है।

इस बार बहुत गम्भीर होकर उन्होंने कहा—तुम्हारे मतसे वेश्याके यहाँ जाना अच्छा × ×

दोहाई भाई साहब, यह बात मैंने कभी न कही, कहूंगा

भी नहीं, मैं यह कहता हूँ, कि जो रह नहीं सकते, कामकी लपेटसे जो ज्ञानशून्य हो जाते हैं, उनके लिये यही पथ प्रशस्त है।

अच्छा, उन्हें तो तुमने राह दिखा दी, अब जिन लड़कियोंकी उमर अधिक हो जानेपर भी विवाह नहीं होता, उनके लिये कौनसा पथ है, एक बार दया कर बताओ, सुनकर कृतार्थ हो जाऊं।

उनकी बातोंके ढंगसे मैं अच्छी तरह समझ गया, कि उनके धीरजका बांध टूटनेमें अब अधिक विलम्ब नहीं है, परन्तु उससे मेरा कुछ जाता आता नहीं। इसी लिये मैंने कहा—"अच्छा। लड़कियोंको कोइ पथ दिखाना नहीं पड़ता। पिता माता ही उनके उपयुक्त संचालक रहते हैं। हमारे देशमें जहाँ वैधव्य पालनकी प्रथा है, वहाँ कुमारी कन्याओंके लिये चिन्तित होनेकी तो कोइ बात ही नहीं है। बाल विधवा, किशोरी विधवा, युवती विधवा—ये तो हमारे देशके घर घरमें विद्यमान हैं, बालविधवा माता पिताके मर्मान्तिक मनस्तापका कारण होनेपर भी उनके कारण माता पिताको अधिक व्यथित होते तो मैंने आजतक न देखा। इसमें सन्देह नहीं, कि प्रत्येक नियमका व्यति

कम हो जाता है। दो चार विधवायें अपना कर्तव्य त्याग कर अवश्य ही निकल जाती हैं, परन्तु उनकी संख्या कितनी है। अत जिस तरह उनकी बात ध्यानमें लाने योग्य नहीं है, उसी तरह कुमारी कन्यायें भी यौवन प्राप्तिके बाद कुछ दिनोंतक कौमार्य व्रत पालन न कर सकेंगी—ऐसा विचारना भी इस देशकी माता-जातिको हीन कर डालना है—इसमें मैं कदापि सहमत नहीं हो सकता।'

उन्होंने कहा—अच्छा, बरदा, तुमने कितने वर्षोंकी अवस्थामें विवाह किया था?

तेईस।

तो तेईस वर्षकी अवस्था तुम विवाहके उपयुक्त समझते हो?

नहीं, पर इस उमरमें विवाह करनेसे विशेष क्षति भी नहीं है।

अच्छा, यह बताओ, कि उपयुक्त वयस क्या है?

मालूम होता है—पचीस।

वे खूब ठठाकर हँस पड़े।

मैंने कहा—देखिये, इस सम्बन्धमें अबतक कोई

सिद्धान्त स्थिर नहीं हुआ है, इसका कारण यह है, कि हमारी सामाजिक अवस्थामें जिस तरह परिवर्तन हो रहा है, उसी तरह हमारी जीवन-यात्राकी धारा भी बदल रही है। आजकलके मनुष्य पचास साठ वर्षसे अधिक जीवित नहीं रहते। इसलिये यदि वे पचीस तीस वर्षके बाद विवाह करें, तो अपने लड़के वालोंको उपयुक्त बना देनेका समय उन्हें बहुत कम मिलता है। इसके अतिरिक्त चिकित्सा विज्ञानसे भी प्रमाणित होता है, कि सन्तान उत्पादन करनेका एक निर्दिष्ट समय है। इसके बाद या इसके पहले करना उचित नहीं है। पचीस वर्षके पहले किसी पुरुषको पिता होनेके योग्य हाड या शुक्र नहीं पैदा होता।

इस बातपर भी वे हँस उठे। मैंने कहा—आप हँसे नहीं, मैं जिस भावसे "पिता" शब्द कह रहा हूँ, उसका अर्थ इतना ही नहीं है, कि स्त्री सहवासकर जैसी तैसी सन्तान उत्पन्न करना। यह तो अठारह वर्षके लड़के भी कर सकते हैं, परन्तु वह क्या ठीक जन्म या उचित सन्तान कहलाती है? अथवा यह अजन्माका ही एक रूपान्तर है? बताइये।

◆◆◆◆◆

और लड़कियोंका ?

इस सम्बन्धमें भी विवाद है। आजकल ग्यारह बारह वर्षकी लड़कियोंको भी सन्तान होते देखा गया है। पर उन सन्तानोंका नाम न लें। प्रकृत पक्षमें सोलह सत्रह वर्षकी उमरमें, पूर्ण यौवनकालमें, यदि उन्हें गर्भ हो तो उस सन्तान द्वारा पिता माता समाज या देशका कुछ उपकार हो सकता है। नहीं तो जैसी हुई, वैसी न हुई। चार वर्ष तक दुःख भोगकर या तो मर गयी, अथवा यदि वह सन्तान जीवित ही रही, तो वह भी मरनेके समान ही है। उन लड़कोंकी न तो शारीरिक गठन अच्छी होती हैं, न चरित्रका विकाश ही होता है। न वे उपयुक्त मनुष्य ही होते हैं। यह सब अल्पायु अथवा क्षीणजीवि सन्तान—किस काम की ?

उन्होंने कहा—तुमने कहा कि कलकत्तामें लड़कोंकी सभा हुई था। मालूम होता है, कि तुम्हीं उसके नेता हो ?

मैंने कहा—नहीं, मैं नेता वेता तो नहीं हूं, पर सभ्य अवश्य हूं। इस सभाके सभी सभ्य हैं, सब वयसके मनुष्य ही इसके सभ्य हो सकते हैं, इसमें किसी प्रकार भी बाधा नहीं है। सामाजिक उन्नति साधनके लिये

इस सभाकी सृष्टि हुई है, इसलिये सब वयस और सब समाजके मनुष्योंसे मिले बिना तो इसका काम ही नहीं चल सकता ! यदि आपकी इच्छा हो तो आपको भी इसका सभ्य बना सकता हू ।

उन्होंने व्यंगसे पूछा—सभ्य होकर क्या करना होगा ?

एक प्रतिज्ञापत्रपर अपना हस्ताक्षर कर देना पड़ेगा । उसमें लिखा रहेगा—यदि अविवाहित हू, तो वयस प्राप्त किये बिना, किसी लडकीसे विवाह न करूँगा । यदि मैं विवाहित हूँ तो (इच्छा रहनेपर भी) स्त्री संगमसे विरत रहूँगा ।

यदि मैं पुत्रवान हूँ, तो मेरे लडके जिसमें अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय चालना न करें, इसका मैं उन्हें उपदेश दूँगा, इसपर दृष्टि रखूँगा—यह मेरा कर्त्तव्य होगा। उपयुक्त वयसके पहले उसे स्त्री-संसर्गसे विरत रखूँगा—विवाह बन्धनमें भी न बाँधूँगा ।

यदि मैं कन्याका पिता होऊँ, तो छोटी अवस्थासे ही उसे सत्सङ्गमें रखूँगा, उसके मनमें धर्मभाव जागरित करूंगा, उसे हलका भोजन दूंगा, भविष्यत

सम्बन्धकी सभी बातें उसे बताऊँगा, माता होनेपर जो कठोर कर्त्तव्य उसके सम्मुख उपस्थित होगा, उसे पालन करने योग्य उपदेश दूँगा और सबसे उपयुक्त वयसके पहले, किसी कारणसे भी उसे पुरुषका संगम न करने दूँगा। विवाह बन्धनमें भी न बाँधूँगा।

इसके अतिरिक्त पूर्ण यौवनके पहले जो उनका विवाह करने कहेगा, उसे इस विवाहकी बुराइयाँ समझा दूँगा, उससे भी यदि वह विरत न हो, तो उसे अपना शत्रु समझूँगा—इतनी बातें कह, उनकी ओर उत्तर पानेकी आशासे देखते ही वे उठ खड़े हुए।

कैसे चोट्टोंकी सभा है! धत्तेरे सभा समितिकी—कहते हुए लाठी टेकते टेकते दरवाजेकी ओर अग्रसर हुए।

मुझे बड़ी हँसी आयी। बोला—आपने अभी एक नियम तो सुना ही नहीं है, वह सबसे बढ़कर आवश्यक है।

जहन्नुममें जाये तुम्हारा आवश्यक! क्या जाने क्या, यह वह—आवश्यक।

बोला—पहले सुनिये तो सही।

वे खड़े हो गये।

मैं बोला—एक नियम और भी है। वह सबसे प्रधान नियम है। और वह ईश्वरका नाम लेकर तीन बार कहना पड़ता है—उसके बाद अङ्गीकारपत्रपर हस्ताक्षर करना पड़ता है।

वे लाठी पटककर बोले—क्या, बताओ।

बोला—लड़के लड़कियोंके बड़े होनेपर बाप माँ एक कमरेमें एक बिछावनपर न सो सकेंगे, और जब लड़का या लड़की बारह तेरह वर्षकी हो जाये, तो संगम एकदम बन्द कर देना पड़ेगा। यदि करे भी तो प्रतिरोधक व्यवहार करना पड़ेगा, जिससे लड़के लड़कियाँ पिता माताकी काम लीलाका कोई परिचय न प्राप्त कर सकें। समझ गये?

जितनी बातें हैं, सब वृथा।—कहते हुए तुम्हारे बड़े भाई सीढ़ीसे उतरने लगे। बीचकी सीढ़ीपर जाकर बोले—कुमीकी क्या खबर है? चिट्ठी तो आती है न?

बोला—हाँ आयगी क्यों नहीं?

अच्छी है न?

सर झुकाकर बोला—यह तो जानता हूँ, कि है।

वे आश्चर्य्यसे बोले—पर क्या ! कहाँ, घरपर तो कुछ सुना नहीं। कितने दिन हुए ?

अधिक नहीं, अभी मालूम हुआ है।

तुम्हारे बड़े भाई बड़े प्रसन्न हुए।

इसके बाद बोले—तुम्हारे सभाके नियममें तो कोई व्याघात न आया न ?

मैं हँसकर बोला—नहीं, सभाका नियम उल्लंघन नहीं किया है।

वे चले गये। विचारा, कि एकबार उन्हें पुकार कर कह दूँ कि ऐसी कोई सभा समिति नहीं हुई है। कभी होगी या नहीं, इसका भी कोई ठीक ठिकाना नहीं है—सभी मेरी कपोल कल्पित बातें हैं, परन्तु कह न सका। वे चले गये—और मैंने भी सोचा, कि कोई अनुचित बात तो नहीं कही है, तुम्हारे बड़े भाईके मुँहसे शहरमें यह बात फैल जाये तो अच्छा ही है। यह सब तो लिखा पढ़ी करनेकी बात नहीं है—आईनकी दृष्टिमें एकदम इण्डिसेण्ट—अश्लील बातें हैं। इसीलिये यदि मुँहसे ही यह बात फैल जाये और यदि सच ही नवयुवकोंकी कोई ऐसी सभा हो जाये तो खराब नहीं है। देशका कल्याणही होगा।

गुप्त चिट्ठी

मुझे याद है, कि तुम्हारा विवाह पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें ही हुआ था। अब अच्छी तरह समझ गया, कि तुम्हारे बड़े भाई उस समय विदेशमें थे, इसीलिये छोटे भाई, तुम्हे इतनी उमरतक अविवाहित रख सके। बड़े भाई रहते तो कदापि यह बात न होती। कब और किस कालमें ही तुम्हे पात्रस्थ कर निश्चिन्त होते—यह कौन बता सकता है? भाग्यसे ही न थे।—क्यों?

इसीलिये मैं सोचता हूँ, कि यदि छोटे भाई यहाँ इस समय रहते तो अवश्य ही कोइ न कोई काण्ड हो जाता। वे ऐसे जिद्दी आदमी हैं, कि तुम्हारे इस भाईकी कोई बात ही नहीं चलती। ठहरो, मैं अभी ही, उनके पास एक चिट्ठी लिखकर उन्हें सब खबर दे देता हूं।

सचमुच ही तुम्हारी चिट्ठीकी आशा—राह देख रहा हूँ, देखूँ, कब मिलती है?

तुम्हारा—

वरदा।

८

प्रियतम,

तुम्हारे दो पत्र मिले। कल उत्तर न दे सकी। कल उस मुहल्लेके कितनी ही औरतें घूमने आयी थीं, उनके पास ही बैठना पड़ा था और रातमें रोशनी जला कर चिट्ठी लिखनेकी आज्ञा नहीं है, "लड़केकी पढ़ाईमें व्याघात होगा।"

तुमने लिखा है तुम्हारी ही तरह मैं भी लज्जित हुई होऊँगी। क्यों, लज्जित क्यों होऊँगी? माँ होना क्या लज्जाकी बात है?—तुम लोगोंकी कैसी विद्या बुद्धि है! यदि मेरी माता, माँ न होतीं, तो मैं कहाँसे आती? तुम भी कहाँसे आ गये हो, बताओ?

तुम लोग पुरुषोंको कैसा मालूम होता है, नहीं जानती, पर हम स्त्रियोंको तो माँ बननेकी खबर मालूम होते ही बड़ी खुशी होती है—सभी स्त्रियाँ प्रसन्न होने लगती हैं, पर तुम्हारी सभी बातें उल्टी दिखाई देती हैं।

मैंने तुम्हें आनेको लिखा था, परन्तु तुमने लिखा है, कि परीक्षा समाप्त हो जानेपर भी न आऊंगा। क्यों?

लज्जासे ? लज्जाके कारण लोगोंको मुँह न दिखा सकोगे, इसीलिये न ? क्या तुम बता सकते हो, कि ऐसी बुद्धि तुम्हें किसने दी ? मालूम होता है, तुम जैसे यदि सभी लज्जित होते तो यह दुनिया ही न चलती— कोई जीता ही नहीं, अथवा सभी एक साथ ही बस्ती त्यागकर जंगलमें जाते और वनवास करने लगते। जो हो, यह सुन कर प्रसन्नता हुई, कि तुम्हारी लज्जा कुछ कम हो गयी है।

अन्तिम चिट्ठीमें यह क्यों नहीं लिखा, कि तुम आवोगे, कि नहीं ? जब लज्जा दूर हो गयी है, तब आनेमें किस बातकी बाधा है ? देखूँ, तुम्हारी दया !

तुमने खूब आनन्दित और मन प्रफुल्लित रखनेको लिखा है, परन्तु किस तरह आनन्दित रहना चाहिये, मनको प्रफुल्लित रखना चाहिये, इसका कोई उपाय नहीं लिखा है। तुम्हें क्या, तुम तो कहकर ही किनारे हो गये, जिसका मन दिनरात कलकत्तेकी किसी एक मेसकी कोठरीमें अटका रहता है, उसे दिन रात चिन्ता करनी पड़ती है। सदा सोचना पड़ता है, कि कब आयेंगे, कब बातें होंगी ? वह मनुष्य किस तरह दिन

सदा आनन्दित रह सकता है ? यह बात तो समझमें ही नहीं आती। यदि समझा देते, तो यह दुःख नहीं रहता।

तुम क्यों नहीं आयोगे—यह मैं समझ गयी हूँ। तुम पुरुषोंका ऐसा ही स्वभाव है, नहीं तो लोग तुम लोगोंको स्वार्थी क्यों कहते ? तुमलोग मानो सुखकी चिड़िया हो, जबतक सुखकी आशा रहती है, तबतक ही तुमलोगोंकी दया रहती है ? इसके बाद हम लोगोंकी ओर देखनेकी इच्छा भी तुम लोगोंको नहीं होती। परन्तु हमलोग इसे भी भला सुखसे सहन कर लेती हैं और सहन कर सकती हैं—सब स्त्रियाँ ही यह सहा करती हैं।

हिजू बाबूका एक गीत है—सब कष्टकी चिड़िया मैं होऊँ और तुम हो सब सुखोंके पक्षी—वह क्या झूठा बात है ? इतने बड़े कवि हैं—उनकी बात क्या झूठी हो सकती है ? आरम्भसे ही विधाताने सब दुःखोंका आगार हमलोगोंको ही बनाया है और पुरुषोंको सब बातोंसे छुट्टी दे दी है। पिता बननेमें तुम्हें कितना कष्ट होता है, और माताको कितना—यही विचार देखो ? कितनी ही माताओंका तो प्रसव करनेमें जीवन ही समाप्त हो

जाता है ! पुरुषोंको क्या होता है, बताओ। एक दूसरीको विवाह लाये और फिर गृहस्थी चलाने लगे। जिसे मरना था, वही विचारी मरी ! यही तो तुम लोगोंका विचार है।

केवल इतना ही नहीं, और भी कितने ही प्रकारके निर्मम हृदयहीन पुरुष हैं। उन्हें भी धीरे धीरे जान रही हूँ। घोष परिवारके सौरीन बाबूको तो तुम अच्छी तरह ही जानते हो। अभीतक तो बाबू अपने देशमें आते ही न थे। किन्तु सौभाग्यवश, कार्त्तिक पूजाकी रात्रिके समय वे घरमें आ पहुँचे। घरमें बड़ा समारोह मच गया, घर सजाया गया, रसोई बनी, खूब धूम मच गयी। उनकी बहू हमारे वयसकी होनेपर भी एक पुतली जैसी है। ईश्वरने मानो एकान्तमें बैठकर मोमसे उसकी देह गढ़ी है। खूब सुन्दरी नहीं है, रंग भी जरा साँवला ही है, परन्तु उसकी आखें, मुंह, नाक, भौं और समूची देह, इतनी मुलायम है, कि देखते ही आलिङ्गन कर लेनेकी इच्छा होती है। बड़ी अच्छी, लक्ष्मीके समान वहू है। विवाहके बाद एक दिनके लिये भी, उसने यह नहीं जाना कि स्वामि सुख किसे कहते हैं, परन्तु कभी

ने उसका चेहरा उदास नहीं देखा। दिनरात चन्द्रमाकी ओर देखती हुई, मानों वह कमलिनीकी भाँति खिली ही रहती है। वही विचारी घोर विपत्तिमें आ पड़ी है। एक तो उसके मकानमें मनुष्य कम ही हैं—वृद्ध, बूढ़ी ददिया सास और ससुर। बहूपर ही रसोईसे लेकर बिछावन तकका भार आ पड़ा।

स्वामी आये हैं, वह आनन्दित मनसे सब काम काज कर, *स्वामी और ससुरको खिला पिला*, घरमें बिछावन डालकर, स्वामीकी राह देखती बैठी रही। स्वामी बाहरवाले कमरेमें बैठे क्या कर रहे थे, ईश्वर ही जाने। रात्रिके समय जब वह सोनेवाले कमरेमें आये, उस समय उनके मुँहसे न जाने किस पदार्थकी दुर्गन्धि आ रही थी, दोनो पैर भी काँप रहे थे, एकदम जोरसे बिछावनपर बैठकर बोले—"रोशनी तेज कर दो। बहूने रोशनी तेज कर दी। इसके बाद आज्ञा हुई—यह घूंघट क्यों, खोल दो। घूंघट भी उसने हटा दिया, इसके बाद शरीरका कपड़ा खोलो—विचारी बहू तो यह आज्ञा सुनते ही अवाक् हो गयी। फिर आज्ञा हुई, खड़ी क्यों हो? उतारो। याद रक्खो यही प्रथम सम्भाषण है। बहू,

विचार। क्या कर, पाटके नीचे बठ, समीजकी बटनें खोलती हुई धीरे धीरे वह बोली—रौशनी बुझा दूँ। बाबू उत्तरमें बोले—मैं अन्धेरेमें कैसे देखूंगा, मैं क्या बिल्ली हूँ, कि अन्धकारमें भी दिखाई देगा।"

वह चुपचाप बैठी रही। कुछ क्षण बाद बाबूने गर्म होकर पूछा—"उठीं नहीं। बात नहीं मानना चाहतीं—।" उन्होंने ऐसे स्वरमें यह बात कही, कि बिचारी इन्दुका प्राण ही सूख गया। समीज वह उतार चुकी थी, धीरे धीरे स्वामीके सामने खड़ी हो गयी। उसका यही भाव था, कि खोलना हो, देखना हो, जो इच्छा हो, सो तुम्हीं करो। परन्तु वे पति भी ऐसे मिजाजी थे, कि अपने हाथों स्त्रीको अपने वस्त्र उतारते देखे बिना उनका काम ही न चलता था! क्रोधसे उसकी ओर देखते रहे उस समय इन्दुको ऐसा मालूम हो रहा था, कि पैरके नीचेकी धरती यदि फट जावे तो किसी तरह उसका प्राण बचे। परन्तु यह तो हो नहीं सकता था, वह खड़ी खड़ी काँपने लगी। सौतीन बाबूने देखा, कि यह बड़ी अच्छी वेश्या, अपापा... कई बार कहता है अपने वस्त्र उतार डालो, परन्तु इसे उतारकर

नग्न मूर्त्ति नहीं दिखाती। एक दम आँखें लालकर बोले—न उतरोगी ? इन्दु रोती रोती बोली—"पहले रौशनी बुभा दूँ।" बुभा दो रौशनी—कहकर वे उस कमरेसे चले। अब जल्दीसे दोनों हाथोंसे वस्त्र उतार, एक ओर फेंकती हुई, उनके पैरके पास ही इन्दु बैठ गयी, उस समय उसके स्वामी टकटकी लगाकर उसकी ओर देख रहे थे। मालूम होता है कि वे असन्तुष्ट न हुए। बोले—खाटपर चलो। इन्दु कपड़ा लेना ही चाहती थी, कि डपटकर बोले—कपड़ा न लो।

विछावनपर आकर स्वामी खीमें—यही प्रथम मिलन रात्रि हुई। फर्मायश हुई विद्यासुन्दरका एक गीत गाओ ! इन्दु रो पड़ी, परन्तु उन्होंने उस ओर भ्रूक्षेप भी न किया। बोले—यदि बात न मानोगी तो कल ही यहाँसे चला जाऊँगा। इन्दु जितना ही रोती, यह आज्ञा भी उतनी ही बढ़ती जाती थी। अन्तमें लज्जा शर्मको ताक पर रखकर, उसे कहना पड़ा—मैं नहीं जानती। स्वामीने कहा मैं सिखा दूँगा—कहकर उस समय टाल दिया। × × × रोज रात्रिमें ही यह पैशाचिक काण्ड होने लगा × × × इसके बाद इन्दुके शरीरमें न

आने क्या हो गया, चकत्ते निकलने लगे। पहले तो ठीक जुलपित्ती जैसा मालूम हुआ। बिचारी इन्दुने अपने ससुरके पास जाकर कहा—यह मुझे क्या हो गया है? ज्वर तो नहीं आता? उसके ससुर सज्जन पुरुष हैं। बोले—बुखार आना तो क्या तुम्हें मालूम नहीं होता? इन्दुने कहा—नहीं, मुझे कुछ भी मालूम नहीं होता, परन्तु ज्वर हुए बिना तो पित्ती नहीं निकलती। कहकर उसने अपना हाथ, बाहें, ससुरको दिखायीं। उन्होंने दो चार बार अच्छी तरह देखकर कहा—हूँ। इसके बाद बोले—और दो एक दिन देखो। इसके बाद दवा करूंगा। दो दिन बाद ही समस्त शरीरमें काले काले चकत्ते दिखाई देने लगे। इन्दुके ससुर बड़े क्रोधी पुरुष हैं। कितने ही आदमियोंके सामने अपने पोतेको जो मुंहमें आया वही कहने लगे—तुझे हो गया था, हुआ करता—एक लड़कीका जीवन सदाके लिये नष्ट क्यों किया?

इन्दुके स्वामीने भी खूब उछल कूद मचानी आरम्भ की—अभी कलकत्ता चला जाऊँगा। फिर कभी न आऊंगा,—कितनी ही बातें कहीं। देखते देखते एकदम छाया

पाट होनेकी सम्भावना हो गयी। ददिया सासने किसी तरह बीचमें पड़कर यह झगड़ा शान्त किया। वे बोलीं— उसका छोटा शरीर है, वह समझ लेगा। तुम क्या इन बातोंके लिये, उसकी बराबरी करते हो! एक तो विचारा छ वर्ष बाद घर आया, अब तुम लोगोंके उपद्रवके कारण उसे फिर वनवास भोग करना पड़ेगा।

ओ! उसकी ददियासास भी कैसी है! अपने पोतेके लिये तो मानो उसके मुँहसे रस चूता है। विचारे ससुर फिर क्या करें, बुढी माँको पकड़कर मार नहीं सकते। कुछ देरतक मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहीं बाहर चले गये। रह गये बाबू और उनकी दादी। एक इधर दौड़ता, एक उधर, एक नाचता तो दूसरा गाल बजाता। दोनोंने ही रुद्र मूर्त्ति बन मकानको माथेपर उठा लिया— वह इतने मनुष्योंके रहते, यह जुलपित्ती दिवाने बूढ़ेके पास ही क्यों गयी? क्या कोई दूसरा ऐसा आदमी न था, जो देखता! क्या किसीको जुलपित्ता नहीं होती! इतनी बदमाश जो औरत है, उसे दबानेका क्या उपाय है? झाड़ू मारकर विष उतारनेसे भी तो यह क्रोध दूर नहीं होता।

गुप्त चिट्ठी

◆◆◆◆◆

बहुत देरतक सुननेके बाद एक बार बहूने कहा—मैं कैसे जानती, कि यह घाव दिखानेसे ही यह काण्ड हो जायगा। कोई रोग होनेपर, वे तुरन्त दवा देते, अच्छा हो जाता है। इसीलिये, मैं उन्हें दिखाने गयी थीहैं मैं क्या जानती थी, कि यह परिणाम होगा? बस उसकी हँसियासास अबतक जो कुछ मनुष्यत्व दिखा रही थी, मनुष्यकी भाँति नाच गा रही थी, तुरन्त ही एकदम चामुण्डा की मूर्त्ति बन गयी। बड़े भाग्यसे इन्दुने मार न खायी।

जो हो लाभ इतना ही हुआ, कि इन्दुको अपने पतिके घरमें घुसनेका फिर हुक्म न रहा। न दिनमें, न रातमें। दालानमें एक कम्मल और एक न जाने किस जमानेके सातपुश्तको तेल भरी तकिया लेकर बिचारी अभागी अनाथिनीकी भाँति पड़ी रहती। यदि इतना ही होकर बन्द हो जाता तो समझती खैर! पर कुछ ही दिनोंमें इन्दुके वे घाव ऐसे हो गये कि समूचे शरीरमें मानो कीड़ा रेंगने लगा। रातभर यातनासे चिल्लाती रहती, कोई एक बार भी आँख उठाकर उसकी ओर न देखता—मानो कोई कानसे ही न सुनता हो। जबसे लड़का घर आया तबसे ही ससुर हलधर ठाकुरके चण्डी मण्डपमें रातको

◆◆◆◆◆

पाइ होनेकी सम्भावना हो
बीचमें पड़कर यह भग
उसकी स्त्राथा शरीर है,
इनयातोंके लिये, उसका
छ वर्ष वाद घर आया, अ
उमे फिर धनवान भोग
ओ ! उसकी ...
लिये तो मानो उसके मुँह
फिर क्या करें, बुढी माँव
कुछ देरतक मन ही मन
गये। रह गये बाबू औ
दौडना, एक उधर, एक
दोनोंने ही रुद्र मूर्त्ति बन
यह इतने मनुष्योंके रहते,
पास ही क्यों गयी? क्य
था, जो देखता! क्या
इतनी बदमाश जो औरत
है? झाड़ू मारकर विद
नहीं होता।

वयस्का स्त्री रहती, तो इन बातोंको छिपाकर तुम्हें तंग न करती ; परन्तु ऐसा कोई भी साथी नहीं है, जिससे बातें करूं। मिसिर परिवारकी छोटी बहू, दासूकी बहन आशा,—ये सब नित्य ही आती हैं परन्तु घरकी ये बातें तो उनसे कह नहीं सकती। और ये बातें सदा मनमें छिपी रहनेके कारण हृदयमें दिनरात एक आग सुलगती रहती है, नहीं कहनेसे मनमें बड़ा कष्ट होता है, इसीलिये बाध्य होकर कहती हूँ, नहीं तो प्राण रहते ये बातें न कहतीं।

पहले तो मुझे ऐसा मालूम हुआ, कि बड़े लड़केको लड़का होगा, सास पोतेका मुँह देखेंगी, इसलिये वे सच ही बहुत प्रसन्न हुई हैं। परन्तु अब देखती हूँ, कि ठीक इसका विपरीत भाव है। सम्भव है, कि मेरी समझकी भूल हो, यदि भूल हो तो अच्छा ही है। यदि मेरी समझकी भूल हो और इसी भूलके कारण मैं उनके विपक्षमें ये बातें कह रही हूँ, तो ईश्वर मेरे अपराधके क्षमा करे। मैंने जो देखा है, वही कहती हूँ। मनगढ़न्त बात एक भी नहीं कहती हूँ। अब देखती हूँ कि मुझसे बातें करते समय सासका मुँह पहले जैसा प्रसन्न नहीं रहता। यदि एक बारसे अधिक कोई बात पूछती हूँ तो वे उत्तर ही नहीं

खोपड़ीपर जोरसे मार दूँ। फिर भाग्यमें जो बदा हो सो हो।

पोतेके लिये लड़की खोज रही हैं—उसका विवाह करेंगी। यही कहकर चली गयी। उसके जानेपर मैंने माससे कहा—मैंने इन्दूने सब सुना है, उन्होंने जो कुछ कहा है उसका एक अक्षर भी सत्य नहीं है। उनका लड़का ही कलकत्तासे

सास चिढ़ उठीं। बोलीं—तुम्हें इन बातोंसे क्या मतलब है।

मैंने कहा—मुझे मतलब नहीं है, पर वे तो सब दोष इन्दुके बाप माँके माथे ही मढ़ती हैं।

उन्होंने कहा—उनकी यह है, वे कहती हैं, तुम्हारी माँ, मौसीको तो कुछ नहीं कहतीं।

मैं चुप हो रही। यही तो विचार है। मेरी मा मौसीका भी उद्धार हो गया। उस दिनसे फिर कोई बात ही न कही। सासने भी कुछ न कहा। आवश्यक होनेपर भी नहीं बोलती—मुह फुलाकर, दृष्टि बचा चली आती है।

सब बातें तुम्हें लिखनेको इच्छा नहीं होती, परन्तु बिना लिखे रहा भी नहीं जाता। यदि यहाँ कोई सम-

वयस्का स्त्री रहती, तो इन बातोंको लिखकर तुम्हें तंग न करती, परन्तु ऐसा कोई भी साथी नहीं है, जिससे बातें करूँ। मिसिर परिवारकी छोटी बहू, दासकी बहन आशा,—ये सब नित्य ही आती हैं परन्तु घरकी ये बातें तो उनसे कह नहीं सकती। और ये बातें सदा मनमें छिपी रहनेके कारण हृदयमें दिनरात एक आग सुलगती रहती है, नहीं कहनेसे मनमें बड़ा कष्ट होता है, इसीलिये बाध्य होकर कहती हूँ, नहीं तो प्राण रहते ये बातें न कहतीं।

पहले तो मुझे ऐसा मालूम हुआ, कि बड़े लड़केको लड़का होगा, सास पोतेका मुँह देखेंगी, इसलिये वे सच ही बहुत प्रसन्न हुई हैं। परन्तु अब देखती हूँ, कि ठीक इसका विपरीत भाव है। सम्भव है, कि मेरी समझकी भूल हो, यदि भूल हो तो अच्छा ही है। यदि मेरी समझकी भूल हो और इसी भूलके कारण मैं उनके विपक्ष में ये बातें कह रही हूँ, तो ईश्वर मेरे अपराधको क्षमा करे। मैंने जो देखा है, वही कहती हूँ। मनगढ़न्त बात एक भी नहीं कहती हूँ। अब देखती हूँ कि मुझसे बातें करते समय सासका मुँह पहले जैसा प्रसन्न नहीं रहता। यदि एक बारसे अधिक कोई बात पूछती हूँ तो वे उत्तरही नहीं

देतीं। स्वयं ही वह कामचोर होती हैं, मैं उनकी सेवा करने जाती हूँ तो चिढ़ उठती हैं, इतने दिनोंतक मैं ही सवेरे उठकर उन्हें मंजन लगा दिया करती थी, तब वे [illegible] जातीं। अब वे स्वयं ही पोखरेकी घाट पर बैठकर मंजन लगा लेती हैं, इस विषयमें मैंने उनसे एक दिन कहा भी था, पर उन्होंने क्या उत्तर दिया सो जानते हो? बोलीं—अब इतनी गुलामीकी जरूरत नहीं है! यह सासकी सेवा कर, क्या यह भी गुलामी है।

एक दिन तुम्हारा छोटा भाई गदाई चड़कतलाके मैदानमें लगे हिंडोलेपर चढ़नेके लिये जिद करने लगा। बहुत देरतक वह रोता रहा, तब भी उन्होंने उसको पैसा न दिया। यह देखकर मैंने अपने सन्दूकसे एक इकन्नी निकालकर गदाईको दे दी। बस तुरन्त ही सामने चीलकी तरह झपटकर उसके हाथसे पैसा छीनली और मेरे पैरोंके पास फेंकती हुई बोलीं—अभागे लड़केको इतना कहाँसे मिला करेगा। फक्कड़ पत्थर खायगा और इतनी जिद!

सासकी मुँहकी इन बातोंका क्या अर्थ है, तुम भी समझ सकते हो।

दाई—हाबूकी माको उस दिन कहा—तुम्हें अब मैं रख नहीं सकती। दूसरी जगह नौकरी खोज लो।

हाबूकी माँ दूसरे दिन न आयी। मैं बर्त्तन लेकर माँजनेको जाना ही चाहती थी कि सास हाँ हाँ करती हुई आ पहुँचीं और बोलीं,—मेरा शरीर बचा रहे, दासी वृत्ति करनेसे नहीं डरती।

मैं क्या नहीं जानती, कि आमदनी कम हो गयी है—दाई न रही तो क्या हुआ। एक तो हमलोगोंको गृहस्थीका काम ही कुछ अधिक नहीं है, केवल चार ही मनुष्य हैं, सास, मैं और तुम्हारे दोनों छोटे भाई—फिर ऐसा काम ही कितना अधिक है, कि दाईके रहे बिना चल ही नहीं सकता, मैंने उनसे कहा—आप ही अकेली सब बासन क्यों माँजती हैं, मुझे भी कुछ दे मैं साफकर लाऊँ।"

उन्हें उसमें भी मेरा ही दोष दिखाई दिया। चिढ़कर बोलीं—यही तो इतने बरतन हैं। इसमें भी हिस्सा लगानेकी क्या जरूरत है? यह तो मेरे लिये पलभरका काम है।" इतना कह तालाबपर चली गयीं।

मैंने जो उन बरतनोंके माँजनेमें हिस्सा लगाना चाहा मेरा कोई स्वार्थ न था। सासका,

अच्छी तरह जानती हूँ। यह क्या मैं नहीं जानती, कि वे पलभर भी बेकार नहीं बैठ सकतीं! पहले भी तो काम होता था और वे सभी काम करते समय मुझे पुकार लेती थीं। पहले भी तो कई दिवस टाबूकी माँ न आयी थी कितनी ही बार वह बीमार पड़ी है। परन्तु उस समय तो एकबार भी उन्होंने ऐसा न कहा। उस समय हमदोनों ही तालाब किनारे जातीं और बातें करती करती काम समाप्त कर देतीं। मैं दोनों बच्चोंकि नेत्र लगा तालाबमें नहला लाती। वे थाली परस देतीं—लड़के खाकर पाठशाला जाते।

उस दिन सास पूजा कर रही थीं। गदाई और दादाईके भोजन किये हुए रहे थे। उनकी पाठशालाके इन्सपेक्टर आनेवाले थे या क्या। मैं रसोई घरमें उनकी थाली परसनेके लिये जाती ही थी कि सास पूजन करना छोड़, दौड़कर रसोई घरमें आ पहुँचीं और बटुआ थाम्ह कर बैठ गयीं। मुझे हाँ-ना कुछ भी न कहा, मैं खड़ी खड़ी, आँखोंमें आँसू भर लौटा आयी।

काली गाय गाभिन है, दूध कम देती है। सुधीको तो दूध एकदम ही नहीं होता। सास काली गायके

दूधसे नित्य आधासेर नन्दी बोसको देती हैं, यह देखकर मैंने कहा—माँ, गदाई देवर तो रातमें सिवा दूधके और कुछ खाते नहीं, उन्हें कम होनेसे कष्ट होगा, दूध न मिलेगा तो कैसे जियेंगे।

सास बोल उठीं—"मरे तो मेरी जान बचे।"

उस दिनसे मैं किसी विषयमें नहीं बोलती। जब बातें करनेसे ही उसका अर्थका अनर्थ होता है, तब न कहना ही अच्छा है। मनुष्यके दिन जब खराब आते हैं, तब किसी तरहसे भी उसकी जान नहीं बचती।

बात नहीं करती इसलिये नये ही ढंगसे अब उन्होंने बोलना आरम्भ किया है। कहती हैं—फलाना इस बार आवेगा तो मेरी जान न बचेगी। कहेगा—हरामजादी औरत! तू मेरी स्त्रीसे बात नहीं करती।

मैं सीढ़ीके पास ही बैठकर केश सुखा रही थी। ईश्वर जाने वे यह जानती थीं, कि नहीं। जब कितनी ही बार उन्होंने ऐसी बात कही, तब मैं ने उठकर उनके दोनों पैर पकड़ लिये और कहा—"ऐसी बात आप मुँहसे न निकालें।"

ठीक करैत साँपकी तरह सास उछल

गुप्त चिट्ठी

—अरे बाप! बस, बस! यह क्या भला कह सकती हूँ। ठाकुर लड़का, जब मास बहूकी बातें सुनेगा, तब क्या आन बचेगी? अपने हाथों मेरा सर काटेगा, सर काटेगा।

विचारा था, कि इस जीवनमें कभी भी ये बातें तुम्हारे कानोंमें न जाने दूंगी। परन्तु हृदयकी व्यथा दबाकर न रख सकी। बड़ा कष्ट होता है, तुम्हारे आगे निवेदन कर देनेसे ही हृदयका भार कुछ हलका हुआ है।

परन्तु मेरा एक अनुरोध है, तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ। सासके कानमें किसी तरह इसका एक शब्द भी न जाये। इससे मेरी दुर्दशा और भी बढ़ जायगी, कम न होगी।

मैं जानती हूँ कि तुम्हें न कहना ही सबसे अच्छा था, पर अपनेको रोक न सकी। इसके अलावा कन्या दानके समय पुरोहितको रोककर छोटे भाईने देवताके सामने जो कई मंत्र हमलोगोंसे कहलाये थे, वे अब भी मेरे कानोंमें गूंज रहे हैं। पहला यह है, कि अपना कोई कष्ट तुमसे न छिपाऊँ, कोई दुःख कोई वेदना कामना तुमसे गुप्त न रखूँ, तभी यह समझना [illegible] भी हो सकी हो। तुमसे भी इसी [illegible]

कहला ली थीं—इसीलिये जब कल रात्रिके समय पड़ी पड़ी रो रही थी, उस समय मनमें आया, कि तुमसे छिपाकर क्यों पाप अर्जन करूँ। छोटे भाई मेरे गुरु हैं, उन्होंने नारायणकी मूर्तिके सामने कसम दिला ली थी—यह प्रतिज्ञा कसमके सिवा और क्या है? तुम्हें कहकर पापसे तो बच गयी, परन्तु अभागिनी की लज्जा रखना तुम्हारे हाथ है। आश्रिता प्रतिपालिता समझकर मुझे क्षमा करना और मेरा अपराध छिपा रखना।

इन बातोंके कहनेका एक कारण और भी है। तुम परीक्षामें उत्तीर्ण हो, कोई काम काज ठीक कर लो। गृहस्थीमें खींचातानी आ पड़ी है। गत वर्ष धानकी फसल अच्छी नहीं हुई, सास उस दिन पटवारीसे कहती थीं—६ घर प्रजा हैं। परन्तु उनमेंसे एकने भी माल गुजारी न चुकाई। कैसे दिन कटता है, सो राम ही जानें। गवाई और मादाइके तीन महीने की तनख्वाह देनी बाकी है। पण्डितने कहा है, कि यदि इस महीनेमें न मिलेगा तो नाम काट देंगे। बड़े लड़केका सब खर्च तो नहीं देना पड़ता है, उसे कहींसे कुछ कुछ मिलता है, इतनेपर भी बीच बीचमें कुछ रुप्ये

हो पड़ते हैं। जिस महीनेमें भेजने पड़ते हैं, उस महीनेमें गृहस्थी चलानेमें बाधा आ पहुंचती है। इतना कष्ट कभी न हुआ, कलेजा फटता है।'

यदि तुम्हें कोई नौकरी मिल गयी तो फिर कोई कष्ट न रहेगा। फिर सब जैसाका तैसा हो जायगा। तुम परीक्षा दे, किसी नौकरीकी खोज करो।

मैंने परीक्षा देकर तुम्हें घर आनेके लिये लिखा था, अभी भी वही लिखनेकी इच्छा है परन्तु नहीं, यह बात न कहूंगा। मेरे लिये तुम गृहस्थीमें अशान्ति उत्पन्न कर दो, यह इच्छा मेरी नहीं है। और यदि ऐसी इच्छा मैं करूँ भी तो तुम क्यों मानोगे ? गृहस्थी ठीक रहनेपर सब है। तुम पहले कोई काम काज ढूंढ लो।

अब इस बारसे तुमने जो कहा था, उसमेंसे कुछ न कुछ अवश्य ही व्यवहार करूंगी। अब यही सोचा करती हूं, कि पहले क्यों नहीं व्यवहार किया। अच्छा, सच सच बताओ, उसके व्यवहारमें लानेपर कोई कष्ट तो नहीं होता ? मुझे ऐसा मालूम होता है कि अवश्य ही कोई न कोई असुविधा है। नहीं तो घर घरमें तो यही विपत्तिकी लीला है, सभी उसे व्यवहारमें क्यों नहीं लाते।

क्या नहीं जानते, इस कारणसे ? नहीं, जानते नहीं, ऐसा नहीं है। जानते सभी हैं, पर मालूम होता है, कि किसी प्रकारका कष्ट होता है, इसीसे व्यवहार नहीं करते। परन्तु चाहे कितना ही कष्ट हो, मैं इसबार अवश्य ही व्यवहार करूँगी। तुमने भी उसबार लिखा था, कि पहनना और निकालना खूब सहज है। ऐसी ही, जो चीज हो, वहीं व्यवहारमें लाऊँगी, इसके बाद जब तुम्हारा प्रसार होगा, गृहस्थीमें कोई अडचन न रहेगी, तब उसकी जरूरत न रहेगी। क्यों ? इतने दिनों में लडका भी बडा हो जायगा।

सच ही जिसे बारबार लडके होते हैं, उनके कष्टकी सीमा नहीं रहती। मित्तिर परिवारकी छोटी बहू मुँहसे चाहे जो कहे, मेरी यह धारणा है, कि बिचारी दिनरात झंझटमें ही रहती है। उनके घर जानेसे ही देखती हूँ, इसने हगा, उसने हाँडीसे कुछ चुरा लिया, किसीने रोगी रहनेपर भी बासी भात निकाल कर खा लिया इससे ज्वर आ गया। देखकर ही मेरी तो तबियत घबरा गयी। उसी तरह धपाधप यह उनलोगोंको मारती भी है और दिन रात मर, चूल्हेमें जा—यही बका

करती हैं। इससे तो यही अच्छा है, कि एक दो हों, और फिर बन्द हो जाये। ईश्वर करे, कि हमें यही एक होकर फिर न हो।

२८ ता० को तुम्हारी परीक्षा समाप्त होगी। उस दिन बुधवार है। अच्छा बृहस्पति वारको तो तुम काम काजकी खोजमें कहीं जावगे नहीं, क्यों कि उस दिन आनेसे कोई काम सिद्ध नहीं होता—यह तो तुम जानते ही हो। मैं यह कहती हूँ, कि यदि तुम बुधवारको शामकी गाडीमें यहाँ आकर बृहस्पतिवारको चले जाओ, तो कैसा हो। इससे तो तुम्हारे काममें कोइ हानि न पहुँचेगी। बस यही करो। बहुत दिनोंसे तुम्हें देखा नहीं है। इस लिये जी बहुत घबडा रहा है, कुछ अच्छा नहीं लगता। खानेकी इच्छा नहा होती। सोनेपर नींद नहीं आती और बातचीत किससे और क्या करूँ—कोइ संगिनी भी तो नहीं है। दिनरात बैठी बैठी तुम्हारी बातें ही सोचा करती हूँ और क्या सोचूँगी बताओ।

यदि दिन कट भी जाता है, तो रात काटना तो बडा ही कठिन हो जाता है। रात होतेही ज्योंही एकान्त कमरेमें जाकर सोती हूँ, त्योंहा याद आता है, कि

अन्तिम बार तुमसे भेंट हुई थी, जब हमलोग एक साथ सोये थे, जब हृदयसे हृदय मिला बातें करते हुए रातभर जागते ही रहे थे। ये ही बातें याद आती हैं और शरीरमें न जाने कैसा होने लगता है। क्या होता है, यह ठीक ठीक मैं तुम्हें समझा नहीं सकती। केवल यही बात मनमें आती है, और केवल यही याद न आयगी तो और क्या होगा? परन्तु उसके अलावा और भी कुछ याद आता है, पर वह मैं तुम्हें बता नहीं सकती। नहीं क्यों कहती हूँ? मेरी तो प्रतिज्ञा है कि कोई भी बात तुमसे न छिपाऊँगी। देखो, वे सुखकी बातें याद आनेपर मनमें जितना कष्ट होता है, वह तुम्हें बताती हूँ। खुजली होनेसे मनमें जैसा कभी कभी मालूम होता है, इस समय भी ठीक वैसा ही होता है। मन जल भुनकर खाक होता है, और उस स्थानोंमें भी न जाने कैसा क्या होता है!

इसीलिये कहती हूँ, कि परीक्षा समाप्तकर जल्दी किसी गाड़ीसे चले आओ। फिर शुक्रवारको सबेरे कलकत्ता लौट जाना। अभीसे कह देती हूँ, कि उस समय रोकनेके लिये एकबार भी ज़िद न करूँगी—एक दिन भी अधिक रहनेके लिये न कहूँगी। अवश्य आओ।

गुप्त चिट्ठी

इस चिट्ठीके उत्तरमें सासको कुछ न लिखना। दुहाई तुम्हारी! उस बातका एकबार भी उल्लेख न करना और मुझे दासी समझकर मेरा सब अपराध क्षमा करना। उन्हें मालूम होनेपर मेरी लाञ्छना होगी और क्या क्या होगा, सो कौन जाने? परन्तु उसके लिये मुझे भय नहीं, पर सासके हृदयपर बड़ा आघात पहुँचेगा। मैं तुम्हारे पैरों पडता हूँ, मेरा यह बात अवश्य रखना। अपनी आदरणीया-स्नेहकी पुतली कुमुदकी यह बात न उठाना।

शरणाश्रिता—

कुमुद।

६

कुमुद !

तुम्हारी चिट्ठी मिली ।

मेरी परीक्षा अट्ठाईस तारीखको अवश्य ही समाप्त हो जायगी, पर घर आना न हो सकेगा । मैं उसी रातको डाक गाड़ीसे पटना रवाना होऊँगा—यह मैंने निश्चय कर लिया है । जाना बहुत ही आवश्यक है, कुछ काम काजका प्रबन्ध करना ही पड़ेगा । वहाँके अस्पतालके बड़े साहबकी कुछ दिन पहले मुझपर बड़ी कृपा थी उनके पास ही जाऊँगा, देखूँ, भाग्य लड़ता है या नहीं ।

तुम्हें मैंने पहली चिट्ठीमें भी लिखा है, और फिर भी लिखता हूं, कि इस समय तुम किसी चिन्तासे अधीर न होना । यह समय रमणी जीवनका सन्धिस्थल है । इस समय रमणी माँ—होती है । इस रमणीत्वसे मातृत्वपर चढ़नेकी जो सीढ़ी है, उसे बड़ी सावधानतासे पार करना पड़ता है । जो असावधान हैं, वे अपने मातृत्वका गर्व पूर्ण नहीं कर सकतीं । वे जिन लड़कोंकी माँ होती हैं, उनसे उनकी गृहस्थीमें सुख नहीं प्राप्त होता-बल्कि अशान्ति और

कष्ट हो यह जाता है। इसलिये हमारे प्राचीन कालके शास्त्रकारोंसे लेकर वर्तमान कालके डाक्टर तक सभी यही कहते हैं, कि स्त्रियोंके जीवनका यह काल सबसे बढ़कर पवित्र और सबसे अधिक दायित्वपूर्ण है। पवित्रता—माँ हुए बिना नहीं होती। जो स्त्रियाँ माँ न हुई हैं, उनकी ओर लोग पापदृष्टिसे देख सकते हैं, परन्तु जो स्त्री, माँ होकर गोदमें सन्तान लिये बैठी है, उसकी ओर कुदृष्टिसे देखनेवाला पापी मालूम होता है, कोई भी नहीं है। मा जब लड़केके मुहमें स्तन देती हैं, उस समय उसके आँख मुहपर सर्वदा ऐसी पवित्रता विराजती है, कि उस ओर पाप दृष्टि डालनेका किसीको साहस ही नहीं होता। यदि कोई डालता भी है, तो उस पापात्माकी आँखें झुलस जाती हैं, बस। पवित्रताका सूत्रपात उसी समयसे होता है, जब नारी गर्भ धारण करती है, उस समय उसकी काम-लालसा, स्वार्थ चेष्टा सभी दूर हो जाती है, उस समय उस नारीके मनमें केवल एक चिन्ता ही रहती है—उसी गर्भस्थ जीवकी चिन्ता। वह कैसा होगा, उसे उत्पन्न कर उसका नारी जन्म सार्थक होगा या नहीं,—यही चिन्ता दिन रात जागरित रहती है। केवल यह चिन्ता ही नहीं, रहती है उस चिन्ताके साथ

फसी नहीं होता। इसलिये माँ गुरुजनोंमें सबसे अधिक मानी गयी है। माँके कारण ही तो लड़के होते हैं। माँका सम्बन्ध पृथ्वीमें सबसे श्रेष्ठ सम्बन्ध है। इतना महान, इतना उच्च, इतना पवित्र यह सम्पर्क है, कि माता—जननीको स्वर्ग से भी बढ़कर कहनेमें कोई कुण्ठित नहीं होता।

कुमुद, तुम वही माँ बनना चाहती हो। इस ढंगसे तुम्हें अपने पुत्रको इस पृथिवीपर लाना होगा, कि स्वर्गसे भी ऊंचे, जिस स्थानकी तुम अधिकारिणी हो, उससे वञ्चित न हो जाओ। जिसमें सचमुच ही तुम्हारा लड़का, जी खोलकर तुम्हें कह सके, कि जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

माता और जन्म भूमि दोनों ही समान हैं, माँ भी सन्तानको पृथिवी पर लाती है और उसका पालन करती है अपना रक्त पिलाती है, जन्मभूमि भी ठीक उसी तरह जीवको पृथिवी पर उत्पन्न करती है, पालन करती है, वस्त्रजात शस्य और पानी पिलाती है—इसीसे जन्म भूमिका इतना आदर है। इसीसे जन्म भूमिका नाम लेते ही कविकी आँखोंमें जल भर आता है, प्रेमिकका हृदय द्रवित हो जाता है। माँकी भी ठीक वही दशा है। पहले माँ, पीछे जन्म भूमि।

जन्म-भूमिका नाम लेनेके पहले भी लोग कहा करते हैं—जननी जन्म भूमि। जननी जन्म भूमि। देहाती हो जननी माँ पहले है—वहीं माँ जो तुम हुआ चाहती हो।

कुमुद, इस समय तो किसी भी कारणसे तुम्हें अधीर न होना चाहिये। आज तुम्हारे शरीरके भीतर, सबकी आँखों की ओटमें, जो रक्त पिण्डका आकार बना बैठा है, समय पूरा होनेपर जिस क्षुद्र शरीर जीवको तुम इस पृथिवीको उपहार दोगी, वह होगा, मेरे और तुम्हारे ऊर्ध्वतन और अधस्तन पुरुषोंका वंशधर, उसपर ही सबका परिचय, गौरव निर्भर करेगा। वह सदा ही हमारी तुम्हारी दोनोंकी ही सन्तान न रहेगा, वह समाजका एक हिस्सेदार होगा, इस देशका एक अधिवासी होगा—यही उसका परिचय होगा। तुम्हारे शरीरमें ही उसका सब भविष्य निर्मित हो रहा है। इसीलिये, माँका दायित्व सबसे अधिक है, यहाँतक कि पितासे भी अधिक है।

कुमुद, गृहस्थीकी सामान्य झंझटोंसे ही यदि तुम इस समय विचलित हो जाओ, तुम्हारे हृदयमें अन्धकार भरा रहे तो तुम्हारे हृदयसे जो भाव सञ्चय कर रहा है, वह क्या पायगा? बताओ तो सही! तुम यदि दुःखित और

गुप्त चिट्ठी

विमर्ष रहो, तो भविष्यमें जो आयगा उसके मनसे यह चिन्ता कभी दूर न होगी। हमारी डाक्टरी विद्याकी बातें अभी छोड दो शास्त्रकारने ही क्या कहा है, यह जानती हो? उनका कथन है कि सदा प्रफुल्ल अन्त करणसे उच्च आदर्श की चिन्तना किया करो। कुचिन्ता, खराब बातें स्वार्थकी बातोंको कभी सोचा न करो। इनको मनके किसी छोटेसे छोटे कोनेमें भी स्थान न देना। आलसी भावमें कालयापन न करना। सदा किसी न किसी काममें लगा रहना—आजकलका डाक्टरी मत भी ठीक ऐसा ही है। डाक्टरोंका भी यही मत है, कि जो स्त्रियाँ गर्भावस्थामें पूरा कम ठ नहीं हैं जो उपन्यास पढती हैं अथवा छतपर या खिड़कीमें बैठ बातें किया करती हैं, उनके कष्टकी सीमा नहीं रहती। शायद तुम नहीं जानती हो हमलोग नित्यही देखते हैं कि आजकलके शौकीन बाबुओंकी स्त्रीको प्रसव वेदना आरम्भ होते ही लेडी डाक्टर आय, नर्स और यन्त्रादिकोंका ढेर लग जाता है। हो सकता है कि उनके पा[illegible] । वे खर्च भी खूब कर सकती [illegible] भी घटा नहीं सकता। [illegible] पड़ेगा

तो सुराकी बात हुई। मैंने अपनी आँखों देखा है, उसबार डाउन दार्जिलिङ्ग मेल्से मैं सन्ताहार आया बड़े लाइनकी गाडीमें अभी घण्टेभरकी देर थी, इधर उधर घूम रहा था, देखा, कि कई सन्थाल कुली एक जगह काम कर रहे हैं। इन्हें देखनेसे ही मुझे न जाने क्यों आनन्द उत्पन्न होता है, इनके समस्त शरीर और मनमें उल्लास दिखाइ देता है। क्यों ऐसा है, यह जानती हो? जो हम बङ्गालियोंके किसी घरमें नहा, खूब ध्यान देकर खोजनेपर भी जो हम लोगोंके जाति-भाण्डारमे कहीं दिखाई न देगा इनके प्रत्येक मन और प्रत्येक शरीरमें वही वर्त्तमान है। केवल है—यह कह देना ही पर्य्याप्त नहीं है। खूब अटूट और असाधारण भावसे है। यह यौवन है। मैंने कितना ही जातियोंके मनुष्य देखे हैं, परन्तु ऐसे कहीं दिखाइ न दिये। चार लड़कोंकी माके शरीरकी ओर देखकर भी तुम अवाक हो जावगी। बङ्गालियोंके घरमें सोलह वर्षकी लड़कीके शरीरपर जो दिखाई न देगा, इनकी तीस वर्षकी अवस्थावाला स्त्रियोंमें भी वह निर्दोष दिखाइ देता है। बाहुकी माँसपेशियाँ फूली हुई हैं, कमर पतली और स्तन कवि कालिदासकी उपमाको भी हरा देते हैं।

फिर ये सब मिलकर देहको भी कैसा सौन्दर्यपूर्ण बना देते हैं मानो एक काले पत्थरकी मूर्ति। यद्यपि इनके देशका जलवायु भी इन्हें सहायता प्रदान करता है। परन्तु मेरी तो यह धारणा है, कि ये स्वयं भी यौवनको पकड़ रखना जानती हैं। इतना परिश्रम करती हैं, कि कुछ कहा नहीं जाता। आलस्यकी जो बात है, इनकी बात ठीक उसके विपरीत है। और यह भी मालूम होता है, कि हम भले आदमियोंकी तरह ये समय असमयमें अत्याचार भी नहीं करतीं। करती अवश्य हैं नहीं तो लड़काबाला कहाँसे होता, परन्तु रमणियोंके पीछे पीछे पुरुष इस तरह घूमा नहीं करते। नहीं जानता, कुछ जङ्गली भाव है, इस कारणसे हो, अथवा किसी दूसरे कारणसे हो, इनमें पशु-पक्षियोंका आचरण अबतक भी बहुत कुछ वर्तमान है। तुमने अबतक देखा नहीं है। यदि देखता, तो मालूम होता, कि इनमें लज्जा अधिक नहीं है। छोटा वस्त्र पहनती है, देहका बहु अंश प्राय ही खुला रहता है, जो देखकर हम पुरुषोंका मन हुलस पड़ता है परन्तु इनके पुरुष उधर लक्ष ही नहीं करते। यदि हम लोगोंमें वैसा होता तो सबकी दृष्टि बरफकी तरह उधर ही जमी रहती।

कहता था कि—घूमते हुए ही मैंने देखा, कि एक युवती रमणी अपना दल छोड़, दौड़कर एक स्थानपर चली गयी और चित होकर सो रही। मैंने समझा—मालूम होता है, पेटमें दर्द है एक खुराक दवा दे दूँ।

दवा साथ रहती तो देकर भौतिक काण्ड कर भी डालता, परन्तु वह पेटका दर्द न था, प्रसव वेदना आरम्भ हो गयी थी। उसके साथ काम करनेवाली एक दूसरी युवती भी उसकी सहायताके लिये चली गयी। मालूम होता है, दस मिनिट बाद ही, उस सहायता करनेवालीसे शुभसम्वाद सुनकर सभी पुरुष खूब आनन्द प्रकट करने लगे। उस समय फिर प्रसूत या प्रसूति न दिखाई दी, क्योंकि एक पुरुषने एक मोटा कपड़ा बाँसोंमें लगाकर आड़कर दिया था। देखो, प्रकृतिने उन्हें कैसा गढ़ा है। किसीको खबर भी न मिली, कहाँ धाय, और किसमें पैसेका खर्च? अब विचार करो—प्रकृतिने उन्हें इतनी स्वाधीनता और स्वाच्छन्द्य दिया है, बल्कि जहाँतक सम्भव है, इसपर उन्होंने अधिकार जमा लिया है। मिसेस हैंको, मिसेस रैंकोकी भाँति विलासिनी बाबू—रमणी हो जायें तो कल उनकी बहूको ही प्रसव करानेके लिये सुन्दरी मोहनको

तो मेरा नाम नहीं। यह सब परिश्रमका गुण है, समझ लो गयीं।

मुझे पूरा पूरा विश्वास है, कि तुम जैसी बुद्धिमती और धीर प्रकृतिवाली स्त्रीको अधिक कहना न पड़ेगा। कुमुद गृहस्थीके अनुसार चलनेमें ही उन्नति है, इसे लेकर जीवन-के दिवस किसी तरह बिता दिये जायें—यह क्या कम बात है। मैं जानता हूँ, कि मेरी कुमुद जानती है, कि सबसे मिलकर किस तरह रहा जाता है और किस तरह जीवन बिता देना चाहिये—ये बातें उसे अच्छी तरह मालूम हैं।

तुम इस बातका मनमें कोई खयाल न करो, कि मैं इस समय न आ सकूंगा। मेरे विषयमें कुछ चिन्ता न करो और मनको कष्ट भी न दो। मैं तो सदा ही तुम्हारे पास हूँ। इतना निकट कि उतना निकट कोई दूसरा रह ही नहीं सकता। कुमुद! मेरे शरीरका जीव ही तुम्हारे शरीरमें बैठा है। यह हमारा वियोग नहीं है परम—मिलन है। अन्तरमें, रक्तमें, नाड़ियोंमें—सबमें हम तुम मिले हैं। फिर तुम्हें किस बातकी चिंता, किस बातका दुःख है।

तुम केवल उसकी बात ही सोचना—देखोगी, कि तुम्हारी सब चिन्ता तुम्हारे लिये अमृतके समान हो गयी है।

सोचना, चिन्ता करना उसीकी हसी उसके मुहसे मधुर स्वरमें माँ शब्दकी पुकार, उसकी आकृति प्रकृति कल्पना करना—उसका आचरण, उसका चरित्र विधान—फिर तुम्हें किसी बातकी चिन्ता न रहेगी। जिस तरह अमृतके कुण्डमें भी पडनेसे मक्खी गल जाती है, तुम्हारी संकडो विपरीत चिन्तायें भी इस अमृत कुण्डमे डूब जायँगी—अदृश्य हो जायँगी।

आज माँको एक चिट्ठी लिखता हूँ। उसमें लिख दूँगा। *डरना मत, मैं जरूर पास हो जाऊँगा।*

मेरा आशीर्वाद! तुम्हें इसके सिवा और मैं क्या दे सकता हूँ। प्रियतमे? मेरी आशा भरोसा, सुख सम्पदा वर्त्तमान भविष्य सब जिसका है—उसे देनेके लिये नयी चीज और क्या है—प्राणाधिके!

आज विदा

तुम्हारा ही

वरदा

प्रणाम, शतशोटि प्रणाम !

तुम्हारा एक पत्र और भी मिला। तीनों ही पत्रोंका यथा समय उत्तर न दे सकी, बहुत देर हो गयी है, मैं इस कारणसे अपराधिनी हुई हू, परन्तु तुम अपने स्वाभाविक गुणके अनुसार इसे क्षमा कर देना।

मैंने सोचा था, कि चिट्ठी न लिखूंगी, परन्तु अन्ततक मनकी यह धारणा निबाह न सकी। भाग्यवश जिस दिवस तुम जैसे देव चरित्र स्वामी मिले हैं, उसी दिनसे जानती हूँ यह अबला नारी सैकड़ों अपराध करनेपर भी तुमसे क्षमा प्राप्त कर ही लेगी। जब तुम यह लिखोगे, कि क्षमा कर दिया है, तब यह अशान्त प्राण शान्त होगा।

न जाने पूर्व जन्मकी किस सुकृतिके फलसे भगवानने इस अधम नारीको सब विषयोंमें ही सौभाग्यवती बनाया है। तुम जानते हो, कि जब मेरी अवस्था खूब छोटी थी, तभी बाबा स्वर्ग सिधार गये थे। उस समय मैं कुछ भी न जानती थी, कुछ समझती भी न थी, पर जब बड़ी होनेपर यह मालूम हुआ, कि मेरे पिता नहीं हैं। मेरी जान पहचानकी

कितनी ही स गिनियोंके पिता वर्त्तमान हैं एक मेरे ही नहीं हैं, उस समय मनमें बड़ा दु ख हुआ था। समझी, कि मैं अभागिनी हूँ। परन्तु मेरे पिताका वह अभाव मेरे भाईने पूरा कर दिया। कहावत भी है, कि बड़े भाई पिताके समान ही होते हैं। वास्तवमें मेरे भाइकों इश्वरने ऐसा ही बनाया था, कि एक दिनके लिये भी मुझे अपने पिताका अभाव न मालूम हुआ। उन्होंने मुझे ठीक एक पालतू चिड़ियाके समान स्नेह और आदरसे रखा। मेरा खाना पीना, लिखना पढ़ना कपड़े लत्ते, इनकी ओर माँ एक दिन भी न देखतीं। सब वही करते। मुझे अपने पास ही सुलाते, पास बैठा कर ही खिलाते और टहलने जाते तो मेरा हाथ पकड़कर साथ ही ले जाते थे। इसके अलावा, घरके सब मनुष्योंसे झगड़ाकर उन्होंने मुझे इतनी बड़ी उमृ तक अविवाहित रखा और पढ़ाया। इतने पर भी वे सन्तुष्ट न हुए बल्कि अपने ही समान एक देव चरित्र स्वामीको मुझे सौंपकर तब निश्चिन्त हुए। मुझे विदा करते समय उन्होंने कहा था— कुमुद, प सा तो अधिक नहीं है बड़े आदमी, धनीके हाथोंमें तुझे सौंप न सका, पर ऐसे घरमें, और ऐसे मनुष्यके हाथोंमें तुझे सौंपा है कि यत्न आदर और स्नेह, किसी

जानना भी तुम्हें अभाव न रहेगा। पर पैसा! यह तो मेरे पास भी नहीं है और जिसके पास आती है, उसके पास भी नहीं है। उसके लिये चिन्ता न करना पैसा बड़ा नहीं है मनुष्य बड़ा है! यह कितना बड़ा और कितना उच्च है यह जिस समय समझोगी उस समय मैं बराबर याद आऊँगा।

उनकी सभी बातें सत्य हुई। एक अक्षर मिथ्या नहीं। बढ़ा कर नहीं कहती। अक्षर अक्षर सत्य हो गया। होगा नहीं—वे नर देहमें देवता थे, उनकी बात कैसे झूठी हो सकती थी।

परन्तु यदि विधिने मेरे भाग्यमें कुछ दूसरी ही बात लिखी हो, मेरे भाग्यमें यदि वैसा सुख बदा न हो, तो क्या करेंगे? मुझे तो सब कुछ ही मिला था पर मिलकर भी जो जाना चाहता है उसमें तो उनका दोष नहीं है। मेरे भाग्यका दोष है।

मालूम होता है कि, मैंने जो कुछ लिखा था उसका कुछ अंश तुमने सासको लिखा था। पास पत्र आया था, तब उनके था। उस समय तुम कलकत्तेमें न सकी। पर मालूम होता

अधिक रज हो गयी हैं। तुमने क्या कोई बात लिखी थी?

एकाएक उस दिन वे बोल उठीं—बेटी! दिनरात मुँह क्यों फुलाये रहती हो? पेटमें जो है उसकी फिकर किये बिना चैन नहीं पडती? इतना लिखना पढना सीखा है, इतना पत्र लिखना जानती हो, पर यह नहीं जानतीं, कि इस समय मन प्रफुल्लित रखना चाहिये हँसना खेलना चाहिये—यह सब शिक्षा नहीं मिली?

मैं चुपचाप खडी थी। सन्ध्या हो चली थी पर दीया अभी न जला था। बीचवाले दालान में खडी होकर, ये बातें हो रही थीं।

सास कहने लगीं—हमलोगोंने भी लडकोंका विवाह किया था, लडकोंको आदमी बनाया था, पर ये सब कोर कसरकी बातें हमारे सात पुरुषोंको भी नहीं मालूम थीं।

कैसा कोर किनारा—यह भी पूछ न सकी। उस समय यहां सोच सोचकर मुझे रुलाई आ रही थी, कि जो बात न लिखनेके लिये मैंने तुम्हें इतना अनुरोध किया था, वह न मानकर तुमने यह काम किया। व्यथाके व्यथी रहनेके कारण ही अपने मनकी यह व्यथा मैंने तुमको जतायी थी।

यदि ऐसा जानती, तो प्राण जानेकी बारी आनेपर भी तुम्हें न लिखती।

सासने कहा—खूब आनन्द करो, धाम काज करो। और हंसी खेलकी इच्छा हो तो मुहल्लेकी जिस जिसको कहो बुला दूं। हमलोग तो बूढ़ी हो गयीं, अब तुम्हारे हंसी खेलकी संगिनी तो नहीं हो सकतीं।

मैं बोली—आप यह सब क्या कहती हैं

वे बोल उठीं—कहने सुननेकी तो बात नहीं है, जो करना चाहिये, वह मैंने बता दिया। अब मेरी छुट्टी है। करो, न करो, तुम्हारी इच्छा। तब इतना खयाल रखना, कि इस बुढ़ापेमें मेरी बदनामी न हो जाये, लोग कहेंगे—जबर्दस्त सासने हंसी खेल न करने दिया—बहूकी सांसत कर डाली—यह सुननेकी अपेक्षा मेरा मर जाना ही उत्तम है।

इतना कहकर सास उस स्थानसे हट गयीं। मैं उस अवसरमें ही खड़ी रही जान बूझकर खड़ी न थी, पैरोंमें इतनी शक्ति न थी, कि कमरेमें जा, बिछौनेपर सोकर रोऊँ। कबतक इस तरह खड़ी रही नहीं जानती, पर एकाएक महराज दीया खोजता हुआ वहाँ आ पहुचा। मैंने आँखें पोंछकर

दीपक जला दिया। माधाईने घबडाते हुए कहा—रोती थीं, भाभी! तालाबसे आते वक्त डर लगा था! हैमा! देखो, भाभी

माधाईको मैंने अपने हृदयसे लगाकर कहा—नहीं मैं तालाबके किनारे डरी न हूं! एक बात याद आ गयी थी इसीलिये रो रही थी।

वह बोला—कौन सी बात भाभी!

ओह! हाय रे अबोध बालक! तुम्हें क्या वह बात मैं बता सकती हूं। बताभी दूंगी तो तू क्या समझेगा? यही सोचकर मैंने कहा—पहले दीया जला आऊँ!"

वह बोला—"मैं यहीं बैठा हूं, तुम तुरन्त लौट आओ!" इतना कहकर वह उसी जगह बैठ गया।

जब मैं दीया जलाकर लौटी उसी समय, उठकर मेरा आँचर पकडता हुआ बोला—"अब बताओ।"

मैंने कहा—"और कुछ नहीं, न जाने क्यों आज सन्ध्या समय पिता याद आ गये। इसीसे आँखोंमें पानी

इतना छोटा तो लडका है, पर बुद्धि कितनी विलक्षण है! कहीं उसी बातको दोहरानेके कारण मैं फिर न रोने लगूँ, इसलिये जल्दी जल्दी बोल उठा—'अच्छा, भाभी, लड़केका

नाम क्या रखोगी ! अच्छा, तुम ऐसी दुःखित क्यों हो रही हो। अच्छा ! इस समय रहे—मैं पढ़ने जाता हूं। इतना कहकर वहाँसे तुरन्त ही चला गया।

मालूम होता था कि उसने यही समझा था, कि मेरा दुःख अभी दूर नहीं हुआ है। जरा सी बात निकलते ही मैं फिर रोने लगूँगी। बात भी सच ही थी। उसके प्रश्नसे मेरी दोनों आँखें फिर जलसे भरने लगी थीं, परन्तु वास्तवमें उसके प्रश्नके कारण ऐसा न होता था, बल्कि मेरे पेटमें जो अभागा है, उसकी बात स्मरण कर ही यह अवस्था हुई थी। इतने अनादरके बीचमें रहनेके लिये, वे उसे क्यों भेज रहे हैं, यह सिवा परमेश्वरके और कौन जान सकता है? यहाँ जन्म लेकर उसे क्या सुख होगा? यदि मनुष्यका जन्म ग्रहणकर, वह मनुष्यकी अभ्यर्थना ही न प्राप्त कर सका, तो उसके जन्म ग्रहण करनेकी आवश्यकता ही क्या थी। वह क्यों और किसी घरमें न गया? जो घरोंके बाहिर खिड़की तरह आकाशकी ओर देखते हुए, हा सन्तान, हा सन्तान किया करते हैं, उनमेंसे ही किसीका घर उज्वल करने क्यों न गया? कितनी ही अभागिनियाँ तो सुख ऐश्वर्यके सिंहासन पर बैठ, इसीकी आशा किया करती हैं, फिर क्यों नहीं, उन

मैंसे ही किसीका घर पवित्र करनेके लिये यह चला गया ? जो इसे पाकर प्रसन्न होते, सन्तान होनेका समाचार सुनते ही जिनके घरमें आनन्दकी धूम मच जाती उनके यहाँ ही इस बालकको न भेजकर ईश्वरने इस अभागिनीके यहाँ क्यों भेजा ?—बहुत कुछ सोचनेपर भी इसका पता नहीं लगता।

माधाई अपने भतीजेके नामकरणकी बात न भूल सका। रातमें, जब वह सोनेके लिये आया, उसी समय बोल उठा—अच्छा, बताओ न भाभी, लड़केका नाम क्या रखोगी ?

उसका अत्यन्त आग्रह देखकर, अपने हृदयका कष्ट छिपा कर मैंने कहा—"तुम्हें कौन सा नाम पसन्द है ?"

पहले तो बहुत कुछ नहीं नहीं करनेके बाद, उसने कहा—"भाभी ! इसका खूब बढ़िया नाम रखो।"

मैं बोली—बताओ, कौन सा नाम तुम्हें पसन्द है !

वह बोला—पहले यह बताओ, कि उसके नाममें तुम्हारे नामका पहला अक्षर रहेगा या भाईके नामका अक्षर पहले रहेगा ?"

मैं बोली—तुम्हारे भाईके नामका ही समझ लो।

माधाईने कहा—तब व किम ! क्यों, अच्छा नाम है न ?

मैंने कहा—अच्छा नाम है। वही रखूंगी।

माधाइने कहा—और बंकिम बाबूका नाम बड़ा प्रसिद्ध है। उन्हींके नामका अनुकरण कर ही तो लड़कोंका नाम रखा जाता है। अच्छा भाभी, बंकिम बाबूने आनन्दमठ कहाँ लिखा था?

मैं बोली—तुमने पढ़ा है क्या?

वह कुछ डर कर बोला—हम लोग सब मिलकर हफ्तेमें बैठ, आनन्दमठके गान गाते हैं। अच्छा, उसका नाम तो बंकिम हुआ—और उसके बाद जो होगा, उसका—

मैंने कहा—और न होगा।

एकदम आश्चर्य-चकित होकर उस लड़केने कहा—"क्यों न होगा भाभी!"

बोली—और न होगा। गरीबोंके घरमें एक लड़का ही यथेष्ट है।

माधाइने कहा—वाह! वाह! देखो, इसी घरमें अपनी माँके हम तीन हैं न। तीन लड़के तीन लड़कियाँ!

मैं बोली—उस समय और इस समयमें बड़ा अन्तर है, तुम न समझ सकोगे। अच्छा आनन्दमठका कौनसा गीत गाते हो।

बोला—सुजला, सुफला। अच्छा भाभी हमारे

कप्तान भण्टु क्या कहते हैं सो जानती हो ? कहते हैं, कि यह गीत गानेसे ही स्वराज्य प्राप्त होगा ।

मैंने कहा—भण्टु जिस भावसे कहते हैं, सो तो नहीं जानती, पर यह वास्तवमें स्वराज्यका गीत है ।

बोला—देखो भाभी, इस लडकेने यदि भाइ हो तो उसका नाम स्वराज्यकुमार रखना होगा। और यदि लडकी हो

मैंने कहा—अब तुम सोवो

माधाई कुछ देरतक चुप पडा रहा। इसके बाद धीरे धीरे बोला—भाभी तुम स्वराज्य चाहती हो कि नहीं ?

मैंने कहा—स्वराज्य क्या है ?

बोला—स्वराज्य क्या है। मेरे कैप्टेन—

मैंने कहा— तुम सोवो। लडकोंके मुहसे बूढोंकी बातें अच्छी नहीं मालूम होतीं।

माधाई फिर कुछ न बोला—कुछ देर बाद ही सो गया। मैं भी उठकर अपने कमरेमें सोनेके लिये चली गयी। पर आँखोंमें नींद कहाँ। माधाईकी बातें मानो बिच्छूके डंककी तरह समूचे हृदयमें बिंधने लगीं। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि उसे इस बातकी बडी खुशी है, कि

उसके बड़े भाईको लड़का होगा वह उसे गोदमें लेकर घुमा-करेगा। यदि प्रसन्नता न होती तो वह नामकरणका जिक्र ही क्यों चलाता और उसके लिये इतना व्याकुल क्यों हो जाता? वह तो नहीं जानता, कि उस अभागे शिशुका आगमन समाचार सुनकर इस जगतका कोई मनुष्य भी प्रसन्न नहीं है! इस पृथिवीपर उसके लिये प्रसन्नता प्रकट करनेवाला कोई नहीं है। उसे अपने सकीर्ण ज्ञान और क्षुद्र बुद्धिके अनुसार बड़ी ही प्रसन्नता हुई है—वह इन कष्टोंको क्या समझता है।

दुखीरामकी लड़की फूटी की भी यही दशा है। एक तो पाँच पाँच लड़के लड़कियोंके कारण बिचारी आफतें झंझटमें पड़ी रहती है, उसपर पति, सास इन सबका लाछना और गजनाकी सीमा ही नहीं है। उनके मनस फूटी जैसी लड़की—उनकी प्रजा, खेतिहर मुसहरोंमें भी नहीं है। पर सब कहते हैं, कि लड़की ही वैसी है, इस लिये सब कुछ चुपचाप सहलेती है। यदि दूसरी लड़की होती तो कभीकी मायके जा पहुंचती और साग-सत्तू खाकर अपना दिन काटती, पर झाड़ू और लात खाकर अपने स्वामीका दिया हुआ अन्न न खाती।

उसके पतिको भी पूर्ण अपराधी नहीं कहा जा सकता। उस बिचारेके कष्टकी भी सीमा नहीं है। आज तीन वर्ष से बीमार हो बिछौनेपर पड़े हैं, इतनेपर भी कुछ न कुछ काम काज करते ही थे पर अब काम ही नहीं मिलता। भाग्यसे फसल उत्पन्न हो जाती है, उसीसे खर्च चलता है। यही एक मात्र भरोसा है। आज तेल नहा कल चावल नदारद है, परसों लगान चुकाना चाहिये, पर पासमें कौडी नहीं है इसीसे आज गाय बिकती है, और कल जमीन कुर्क होनेकी तय्यारी होने लगती है। यही दशा उनके घरकी है। बिछौनेसे उठनेकी उनकी शक्ति नहीं है इतनेपर भी छोटा लड़का एक वर्षका है। एकदिन क्रोधमें आकर पूटी यह बैठी—अब ये मुझसे बहुत जबर्दस्ती नहीं कर पाते, नहीं तो इस अवस्थामें भी मुझे नहीं छोडते। मैं भी आजकल रंग बदलता देखते ही कमरेसे बाहर निकल आती हूं। कुछ देरतक तो क्रोधमें कुछ बडबडाया करते हैं, पर थोडी देर बाद वह क्रोध आप ही ठण्डा हो जाता है।

मैंने पूछा—तुम्हें इच्छा नहीं होती?

पूटी हाथ मटका मुँह बनाकर बोल उठी—ऐसी

इच्छाको भाड़ मार दूँ। इच्छा? इच्छा तो यही अब होती है कि यमराज इन मनको ले जायें तो प्राण बचे, इसका पत्र फेंककर यहीं भाग आऊं।

मैं भी यही सोचती हूँ, कि यदि यह अभागा गर्भमें न आता तो ... नहीं उसके अकल्याणकी कामना न करूँगी। करते ही हृदय काँप उठता है। कभी कभी दासी ग्वालिनको देखकर मन बिगड़ जाता है। वह न जाने कहाँ जाकर अपने पेटका काँटा दूर कर आयी, परन्तु यह भी पाप है! हत्या! मा होकर सन्तानघातिनी बनूँगी!

लड़कपनसे ही हमलोगोंको यह शिक्षा मिली है, कि नारी जन्म मातृत्व प्राप्त करनेपर ही सार्थक होता है। नारीका रूप यौवन, जो कुछ है सबकी आवश्यकता एक सन्तानके लिये ही है परन्तु आज मैं दृढ़तासे कह सकती हूँ, कि इस संसारमें मुझ सरीखी जो अभागिनियाँ हैं, उन्हें नारी जन्म सार्थक करनेके लिये व्याकुल न होना चाहिये। रूप और यौवनकी कामना वे किसी दिन भी न करें।

मैं यह जानती हूँ, कि यह पत्र पढ़कर तुम्हारे हृदयमें चोट आयगी। विदेशमें प्रवासमें हो—वहाँ तुम्हारे मनमें बड़ा कष्ट होगा। परन्तु प्रियतम! तुम्हारे हृदयके

सिवा अपने हृदयका कष्ट रखनेका स्थान और मेरे लिये कहाँ है।

माँने फिर भी मुझे बुलानेके लिये पत्र लिखा है, पर मैंने लिख दिया है, कि मैं न आऊँगी। जाड़ेका दिन है, सास यहाँ अकेली रहेंगी, उन्हें कष्ट होगा। इसके अलावा मेरे भाईकी गृहस्थी भी वहाँ आ पहुँची है। स्थान भी कम है, मेरे जानेसे उनलोगोंको भी कष्ट होगा, यही सोचकर लिख दिया है, कि न आऊँगी।

अपने काम काजकी खबर देना। कैसे हो, यह लिखना भी न भूलना।

तुम्हारी—

कुमुद।



कुमुद

सदासे मेरी यही धारणा थी, कि बंगदेशमें ही सबसे अधिक उर्वरा शक्ति है। बंगालकी मिट्टी और जलसे बढ़कर शक्ति सम्पन्न मिट्टी और जल, शायद और किसी स्थानका नहीं है। मैं बहुत दिनोंतक इस विषयके निर्णय में माथा खपाता रहा हूं। बंगालकी मिट्टी में उर्वरा शक्ति अधिक है अथवा यहाँकी स्त्रियोंमें। मेरी अबतक यह धारणा थी कि ये दोनों ही समान हैं। बङ्गालकी मिट्टी और बंगालकी स्त्रियोंकी शक्ति में कोई अन्तर नहीं है। परन्तु अब देखता हूं, कि बंगालके बाहर वाले इस प्रदेशकी स्त्रियोंमें भी बहुत कम उर्वरा शक्ति नहीं है। यद्यपि बङ्गालके नीचे इनका स्थान है, परन्तु तुलनामें दोनों ही बरा बर हैं। परन्तु इस देशकी मिट्टीकी शक्ति अवश्य ही कम है। यह बंगालका मुकाबला नहीं कर सकती। इस विषयपर विचार करने और इस दृष्टिसे देखनेपर यह कहना ही पड़ता है कि बंगाल अवश्य ही स्वर्ण मय बंगाल है, सच

ही यह कहनेकी इच्छा होती है, कि बंगाल मेरी जननी है, धात्री है, मेरा देश है।

इस देशकी लड़कियाँ भी बंगालके समान यौवनके आरम्भ होते ही स्वामि गृहमें जा पहुंचती हैं। इनके स्वामी भी हमारे देशके लड़कोंकी भांति परम ब्रह्मचर्यशील, संयमी और चरित्रवान हैं—प्रायः प्रतिवर्ष अपनी अपनी स्त्रीको सौरी घरमें भेज देते हैं। इस विषयमें ये बंगालियोंसे किसी दर्जे पीछे नहीं हटे हैं।

मुझे दो चार दिनोंके लिये पटनेके बाहर भी जाना पड़ा था। जहाँ गया हूं, वहीं की यही अवस्था है। यही कि दुबली पतली हड़गिल्ली छोटी सी तो लड़की है पर गोदमें एक, हाथके सहारे एक तो है ही। इतने पर भी पेट ऊँचा हो रहा है। दोनों गाल चढ़ गये हैं छाती है अवश्य, नहीं तो लड़कोंको दूध कैसे मिलता है, परन्तु देखनेपर ऐसा मालूम होता है, कि नहीं ही हैं। यदि है भी तो इस अवस्थामें हैं कि उससे रमणी सौन्दर्यका बढ़ना तो दूरकी बात है, उनके देहका बचा-खुचा सौन्दर्य भी नष्ट हो जाता है। हाथ दोनों मानों छोटे अशक्त हाड़ बाहर निकले हुए हैं, और पैर दोनों ऐसे मालूम होते हैं, मानो बाँस—सामने खड़ी है।

इनके शरीर पर जेवर भी साधारणतः कुछ अधिक रहते हैं उन्हें देखनेसे ऐसा मालूम होता है, कि वे उस शरीरके लिये भार स्वरूप हो रहे हैं। रंग गोरा, दोनों हाथ नर्म, पर जेवरके मैल और गोबरकी कालिमाके कारण काले हो रहे हैं। मिलाओ इनसे य गालियोंकी अवस्था!

हमारे देशकी गरीब स्त्रियोंके समान ही इस स्थानकी गरीब स्त्रियोंकी दुर्दशा देखकर कलेजा फटने लगता है। इस तरह चुपचाप, सज्ञाहीन अचेतन शरीर पर ये अपने स्वामीका अत्याचार सहन करती जाती हैं, कि देखकर समस्त पुरुष जातिका खून कर डालनेकी इच्छा होती है।

मेरे अस्पतालके होटलमें एक बुड्ढी और उसकी एक लड़की—दोनों ही दासी वृत्ति करने आती हैं। लड़की की अवस्था अधिक से अधिक उन्नीस बीस वर्षकी होगी, चेहरा ऐसा सुन्दर और सुकोमल है, कि यदि उसे सजाकर खड़ी कर दिया जाये तो लोग कभी कल्पनामें भी न जान सकेंगे, कि कभी इसने दासी वृत्ति की है अथवा यह किसी नीच कुलकी स्त्री है। अथच वह है नीच जातिकी स्त्री।

तुम समझती होगी, कि लड़की खूब सुन्दर होगी।

पर वास्तवमें ऐसी बात नहीं है। उसका रंग साँवला नहीं, श्यामवर्ण नहीं, उससे भी काला है पर चेहरा सुडौल है, काट बढ़िया है। मैं उसके रंगकी प्रशंसा नहीं करता ऐसा रंग तो उल्लेख योग्य ही नहा है—यहाँ तक कि देखने योग्य भी नहीं है। मैं उसके अटूट यौवनके सम्बन्धमें कह रहा हूँ उसकी सुदृढ़ साँचेमें ढलीसी देहकी बात कह रहा हूँ उन दोनोंकी बाबत ..कह रहा हूँ, जो दोना अभागे बंगालमें तो दिखाई ही न देंगे बेहारमें जिनका मिलना भी दुर्लभ है।

लड़कीको एक लड़का है उसकी अवस्था लगभग छ वर्षो की होगी। ये जिस समय घरमें झाड़ू देती अथवा बासन माँजती हैं उस समय लड़का बड़े डाक्टरके कुत्तेके साथ खेला करता है। लड़का भी खूब हृष्ट पुष्ट है, भरा हुआ चेहरा है, माथा मूड़ा रहता है, बीचमें एक बित्तेभर लम्बी चोटी है, कमरमें लँगोटी पहना रहता है कानोंमें बालियाँ और गलेमें एक तावीज झूलती रहती है। उसे डर नहीं, भय नहीं, कुछ नहीं है। लड़का उस कुत्तेको इतना तंग कर डालता है कि बीच बीचमें हमलोगोंको रोकनेके लिये आना पड़ता है।

गुप्त चिट्ठी

◆◆◆◆◆

इसे यही एक लड़का है। इसके बाद उस लड़कीको फिर कोई सन्तान न हुई। मैंने यही अनुमान किया था और उस दिन बुड्ढाके मुँहसे यही सुना भी सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। विधाताने इस लड़कीको सदा सुखी रखनेकी इच्छासे ही यह एक फल दिया है। इन लोगोंकी भी और होनेकी इच्छा नहीं है और ईश्वर भी और देते नहीं। इसीलिये वह प्रसन्न है, सुखी है, शान्त है और तृप्त रहती है। उस लड़कीके शरीरकी शक्तिका समाचार सुनकर तुम चकित हो जाओगी। एक सौ आदमियोंके योग्य तरकारी हो, इतनी बड़ी कड़ाही दोनों हाथोंसे अकेली उठाकर पानीके कलके पास ले जाती है और बातकी बातमें माजकर दे आती है। उसकी माँ बुड्ढी है, इसलिये, वह झाड़ू देती है, चुनती बीनती है बाजारसे चीजें ले आती है और लड़कीको भी कुछ सहारा दे देती है। पर वास्तवमें जितने भारी काम हैं, सब वह लड़की ही करती है।

लड़कीका नाम तेजई है। वह जब बड़े बड़े कड़ाह उठाकर चलती है, उस समय मुझे बंगालकी स्त्रियोंकी बाकी तिरछी स्वास्थ्यहीन देह याद आ जाती है। अस्तु

तेजईके सम्बन्धमें मेरी धारणा दिनों दिन अत्यन्त उच्च

हुए जाती थी। यद्यपि मैंने ऐसी घटनायें देखी, पढ़ी और सुनी हैं, कि एक दो सन्तान होने बाद आप ही आप सन्तान होना बन्द हो जाता है, परन्तु ऐसी स्त्रियोंकी संख्या कम है। अधिक भागके सम्बन्धमें यही दिखाई देता है कि उन्हें कोई न कोई रोग है, जिस कारणसे उनका सन्तान होना बन्द हो गया है।

बाधक रोग तो जानती हो न? या तो बाधक हो जाता है वह अच्छा नहीं होता, अच्छी तरह चिकित्सा नहीं होती अथवा चिकित्सा होने पर भी कोई लाभ न हुआ, रोग रह गया और उसी कारणसे सन्तान फिर नहीं हुई। यद्यपि यह राह बन्द होना वैसा नहीं, पर भीतर रोग रह जानेके कारण वह स्त्रियोंका स्वास्थ्य, सुख सौन्दर्य और शान्ति सभी हरण कर लेता है।

इसके अलावा, एक और भी भयानक रोग है। उसमें जरायु स्थल विचल हो जाता है। सन्तान जब स्त्री इन्द्रियकी राहसे अपने दस महीनेका वास-स्थान छोड़कर बाहर निकलती है उस समय माताके समस्त शरीरमें एक प्रकारकी खिंचावट पहुँचती है और उसी समय जरायुकी जड़ें चर पियल हो जाती हैं। उपयुक्त तत्वावधान और

सेवा यत्नसे किसी किसीका जरायु तो ठीक हो जाता है पर किसीका स्थानान्तरित रह जाता है। फिर सन्तान होनेकी कोई सम्भावना नहीं रहती और प्रकृतिकी शारीरिक अवस्था दिनों दिन मन्दसे मन्दतर होती जाती है। उस समय धाय या डाक्टरकी जरूरत पड़ती है। कितनी ही रोगिणी आराम हो जाती हैं और कितनी ही नहीं।

मेरे कालेजकी एक बंगालिन छोकड़ी, जो नर्सका काम करती थी उसका जरायु हट गया था। कालेजमें डाक्-रोंकी तो कमी नहीं है चिकित्सा खूब अच्छी तरह हुई, पर कुछ न हुआ। उसको सन्तान होते ही यह कष्ट न हुआ था। हुआ था तीन मास बाद। इस लड़की का विवाह न हुआ था। इन लोगोंका प्रायः ही विवाह नहीं होता। किसी पुरुषसे प्रेम कर, वे स्त्रीकी भाँति ही रहती हैं। इस लड़कीने बड़ी सावधानी अवलम्बन की थी, पर किसी तरह भी गर्भ रहना न रोक सकी। यह न सोचना, कि उसने सब नियम ठीक ठीक पालन किये थे। बिलकुल नहीं, वह केवल डूश लेती थी। पीछे मुझसे, तथा अन्य डाक्टरोंसे उसने कहा है, कि वह दूसरे दिन सवेरे खूब अच्छी तरह डूश लेती थी और धो डालती थी। इसी उपायसे उसने, इतने

दिन आनन्द करते हुए बिता दिये थे। एकाएक एक दिन गर्भ रह गया

उसने एक भूल की थी। डूश लेनेकी प्रथा खराब नहीं है, कितने ही भले घरोंकी स्त्रियाँ डूश लिया करती हैं, परन्तु पेशाब करनेकी भाँति जब इच्छा हुई, तब इस क्रियाका प्रयोग करनेसे कुछ नहीं होता। नियमके अनुसार समागमके बाद ही डूश लेना चाहिये। सो प्रायः कोई करता नहीं। और हो भी कैसे? वहाँ स्वर्ग सुख, दोनों आँखें बन्द हुई जाती हैं, हृदयमें मानो कोई वीणा बजा रहा है, हाथ पैर मस्तक सब भर रहे हैं उसी समय उठकर यह घृणित काम! पच पच डूश लेना, पानी घुसे निकले, साफ हो, यह जो स्त्री कर सके, यों कोई कर भी सकती है पर मैं नहीं जानता। पर मैं समझता हूँ, कि यह रचन भी कर सकती है। ओह! कैसा भयानक काण्ड है, कहाँ स्वामीके आलिङ्गनमें आबद्ध हो सुखानुभूति पूर्वक गाढ़ निद्रामें अभिभूत हो पड़ना और थकावट दूर करना, कहाँ उठकर पिचकारीसे जल उसमें घुसाना

यह काम सहज नहीं है, स्वाभाविक भी नहीं है—ना इसका कोई मूल्य ही मैं नहीं समझता।

कहना यह है कि कोई स्त्री इस रोगका नाम उस समय तक भी नहीं समझती और कोई जानती भी नहीं। उस छोकड़ीके पेटसे मरा लड़का पैदा हुआ। दो तीन महीने तक बीमार रहा। इसके बाद कारबार फिर आरम्भ हुआ। काम तो कर नहीं सकता था, सारे शरीरमें हाड़ रह गया था। महीने भर बाद बोली—मुझे ऋतु हुआ है। ऋतुके समय पेटमें बड़ा दर्द होता था, तीन चार दिनोंतक दर्द रहा। और भी कितने ही उपद्रवोंकी बात उसने बतायी। धीरे धीरे मालूम हुआ कि यह छोकड़ी जिसके साथ रहती थी, वह कोई पहलवान था, उसके पास धन भी खूब है और शरीरमें ताप भी असाधारण था।

यह नर्स किसी दिन भी सुख पूर्वक इस मनुष्यको उपभोग न कर सकी। प्राय ही संगमके समय उसके प्रथम सुखमें दर्द होता था। कभी कभी असह्य भी हो जाता था। कुछ देर बाद अच्छा हो जाता। परन्तु वह सदा ही एक दम क्लान्त और श्रान्त हो जाती थी। बात यह थी, कि पुरुष असाधारण शक्तिशाली था, और उसकी वीर्यधारणकी क्षमता भी साधारण पुरुषोंसे कई गुण अधिक थी। इसीलिये वह श्रान्त हो जाती थी। मेरे साथी एक रसिक डाक्टरने

उसे उपदेश दिया था, कि why not change your man? अपने मनुष्यको ही क्यों नहीं बदल डालती? उसे तो उसने इस बातका कोई उत्तर न दिया, पर मुझसे कहती थी, कि स्वामी वह नहीं बदल सकती। वे पति पत्नीकी भांति ही रहते थे। अब इस प्रसवके बाद यह दशा हुई, कि उस शक्तिशालीकी शक्ति उस छोकड़ीकी दुर्बल देह सहन न कर सकी अथच बन्द कर देनेकी भी कोई तरकीब न थी। पुरुष असीम शक्ति सम्पन्न था और इसकी भी सुखभोगकी लालसा कम न थी। इसीका यह परिणाम हुआ, कि जरायु विकृत और स्थानान्तरित हो गया। अन्तमें यह दशा हुई, कि उसका जीवन सङ्कटापन्न हो गया। अब लाचार होकर अपने पुरुषसे उसने सब बातें कहीं। सुनते ही पुरुष ऐसा गायब हुआ, कि उसे फिर उसका दर्शन ही न मिला। पर अब भी वह कष्ट भोग रही है। ऋतुके समय प्राणान्तिक कष्ट होता है—यह आते समय मुझे मिस शरत कुमारीसे मालूम हुआ था।

हमारे देशकी स्त्रियोंका साथी एक नाड़ीका रोग भी हो गया है। इस रोगमें भी सन्तान होना बन्द हो जाता है, साथ ही स्वास्थ्य भी नष्ट हो जाता है। और ऐसी स्त्रियाँ

भी देखनेमें आती हैं, जिनको इस रोगकी अवस्थामें भी सन्तान होती है। पर उनकी सन्तानें ऐसी होती हैं, कि उनका नाम ही न लेना चाहिये। उससे न होना ही अच्छा है। उन सन्तानोंका मरना और जीना एक समान है।

स्त्रियोंके जननेन्द्रियमें किसी रोगका हो जाना भी अस्वाभाविक नहीं है, ऐसा भी होता है। शुक्र पतन हो जाता है, मेह प्रमेह प्रभृति रोग हो जाते हैं। इन कारणों से भी सन्तान नहीं होती, परन्तु न होनेसे कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि रोगसे तो शरीर खराब होता ही जाता है।

इसके बाद आजकलके विज्ञान सम्मत उपायोंसे लड़का होना बन्द किया जाता है पर हमारे देशमें इसकी चाल विशेष नहीं है। पर अब हुए बिना काम भी नहीं चल सकता। दोनों—स्त्री पुरुषको सुख सम्भोग भी ठीक रहे और लड़के बाले भी न हों—यही तो चाहिये? एक दम ब्राह्मण की गाय! खाय कम और दूध दे अधिक, डकारे अधिक

विज्ञान बलसे यह कामधेनु मिल सकती है। जो विज्ञान शून्यमें गाडी चला सकता है पानीकी तहमें मनुष्य जीवित रख सकता है जो दुस्साध्य रोगोंकी भी औषधि

निकाल सकता है, वही विज्ञान कामधेनु भी तय्यार कर सकता है। स्त्री पुरुष साधारण मार्गसे चलकर जो सुख प्राप्त करते हैं वही प्राप्त करेंगे, पर अप्रयोजनीय सन्तानाधिक्यसे संसारका सर्वनाश न करेंगे, साथ ही दोनोंका स्वास्थ्य भी अटूट रहेगा। ऐसे ही उपाय अब प्रकाशित हुए हैं।

अब यदि यह कहो, कि सभी विज्ञानकी सहायता क्यों नहीं लेते—तो यह एक दूसरी ही बात है। इस संसारके अनेक मनुष्य जानते हैं, कि सन्तान उत्पादनके अलावा वीर्यपात न करना चाहिये, पर उसे कौन मानता है? केवल वही चाहिये। यह वीर्य धारण कर रखनेसे इस कलिकालमें भी मनुष्य अक्षुण्ण स्वास्थ्य, अटूट देह और अनन्त सुख भोगका अधिकारी हो, अमरत्व प्राप्त कर सकता है—परन्तु यह करता कौन है?

मैं ऐसे पुरुष या किसी स्त्रीको नहीं जानता, उनके विषयमें पढ़ा भी नहीं है, कि जिसे वीर्यपातसे आनन्द न मिलता हो। वीर्यधारणका जो सुख है, उसकी इच्छा करनेवाला या उस इच्छाको पूर्ण करनेवाला कोई पुरुष या स्त्री अबतक मुझे दिखाई न दी। उनके विषयमें सुना

भी नहीं। किसी कालमें ऐसे जान दिखाई देंगे, उसका भी अब आशा नहीं है। पुरुष और स्त्रियोंमें अधिकांशका यही इच्छा दिखाई देता है, कि यही सुख बड़ा है। उसे रोक रखनेसे क्या होता है अथवा क्या नहीं होता, उसकी बात भी परवाह नहीं करता।

कौन परवाह करे? किसे गरज पड़ी है। वरिक पशु पक्षीमें यह बात दिखाई देती है। कोई गाय तुम्हें ऐसी न दिखाई देगा जो वर्षमें एक दिनके अलावा और भी किसी दिन कामोद्दिक हुई हो। केवल वर्ष भरमें एक दिवस वह पुरुषकी आशामें चिल्ला चिल्लाकर आकाश पाताल एक कर डालती है। जबतक नहीं मिलता तब तक वह कितनी आतुर और व्याकुल रहती है। उनके पुरुष भी उस एक दिनमें सिवा और किसी दिन भी उस गायको स्पर्श नहीं करते। वे अज्ञान हैं, पर भगवानने उन्हें कितनी ज्ञान और बुद्धि दी है, कि वे नियम उल्लंघन नहीं करते।

मुझे मालूम होता है, कि मनुष्य सब जानता है सब समझता है, पर वह कर नहीं सकता—विज्ञानसे क्या हो सकता है, इसकी खबर इन्हें भी है, सभी जानते भी हैं,

करनेकी कभी कभी इच्छा भी करते हैं, परन्तु कर नहीं सकते। समझते हैं कि महाभारत अशुद्ध हो जायगा। यदि पुरुष शुद्ध करनेके लिये तय्यार भी हुआ, तो स्त्रीके क्रोधकी सामा नहीं रहती। यह सब क्यों किया जाये, किसलिये किया जाये, लड़के वाले होंगे ही तो क्या हो जायगा? सन्तानकी इच्छा ही न था, तो फिर विवाह क्यों किया? यदि खिला न सकते हो तो यह लड़ड्डू तुमने खाया ही क्यों? खबरदार, उन चीजोंका नाम न लेना, अच्छा न होगा।

ये ही स्त्रियाँ यदि जानतीं, कि विवाहका उद्देश्य कितना महत्, कितना उच्च है, तो ये बातें वे कदापि अपने मुँहसे न निकालतीं। वे यह नहीं जानतीं, कि विवाह बन्धनसे दो भिन्न हृदय एक हो जाते हैं दो भिन्न हृदय प्रेम प्रवाहसे संसार रूपी कुञ्जमें सदा बसन्त ऋतुके विराजनेका सामान कर उसे नन्दनवनमें परिणत कर देते हैं। उन्हें कुछ नवीन दिखाने-से ही सर्वस्व स्वाहा होता दिखाई देता है। इन बनावटी स्त्रियोंकी इस विषयमें पुरानी प्रथापर क्यों इतनी प्रीति है सो तो समझमें नहीं आता। नये फैशनका जेवर देखकर तो इन्हें अरुचि नहीं होता? नये फैशनकी साड़ी देखने पर तो अरुचि नहीं उत्पन्न होती? साड़ी जाकिट, सलूका

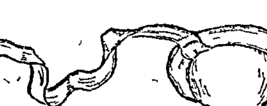
—यह गाउन नये रंग ढंग का देखते ही इनके मुँहसे लार चू पड़ती है, प्रसन्न होता है—पर इस समय इन्हें ऐसा क्यों नहीं होता?

मुझे मालूम होता है कि किसीने इन्हें अच्छी तरह समझाया नहीं है, इसलिये ऐसा होता है। वे इतने छोटे किस्म तक नयी चीजको आश्चर्य देखमें घबड़ा उठती हैं, डर जाती हैं, चिन्तित हो जाती हैं, सोचने लगती हैं कि न जाने क्या हो जायगा। इनका यह अस्वाभाविक भय दूर कर देना चाहिये।

सभी स्त्रियोंको यह समझ लेना चाहिये, कि इसमें किसी प्रकारका भय नहीं है, एकदम कोई भय नहीं है, कोई पाप उन्हें पकड़ न सकेगी। वे स्वच्छन्द भावसे प्रसन्नता पूर्वक ये चीजें व्यवहार कर सकती हैं। यदि सुख भोगनी चाहती हो एकबार पहन देखो न हो तो फिर न पहनना। कम सुख प्राप्त हो, तब भी न पहनना। स्त्रियोंके लिये कैप पहनना ही सरल और सुखप्रद है। यदि पुरुष पहनेंगे, तो वह सुख सम्भोग जिसके लिये जीव जन्तु कीट पतङ्ग सभी व्याकुल रहते हैं न मिलेगा। व्यर्थ सा हो जायगा और स्वास्थ्यकी हानि होनेकी भी सम्भावना है परन्तु स्त्रियोंके

लिये वैज्ञानिकोंने जो आविष्कार किया है, उससे सभी बातें ठीक रहती हैं और पहननेका जो उद्देश्य है, वह भी सिद्ध हो जाता है। इसका दाम भी अधिक नहीं, खूब कम ही है।

इसके बाद तुम यह जान भी न सकोगी, कि कुछ पहनी हुई हो। फिर इच्छा होते ही तुरन्त निकाल भी डाल सकती हो और उसे धो पोछकर ठिकाने रख सकती हो। साया पहननेमें जितना समय लगता है उससे अधिक समय न लगेगा। इसकी बात नहीं है। एकबार पहन लेनेपर दो तीन दिन यदि रखना चाहो तब भी कोई हानि नहीं है। वह ठीक स्थानपर ही रहेगा, गिरेगा भी नहीं, शरीरमें भी कोई हानि न पहुँचायगा। साथ ही, शरीरको कोई कष्ट भी न होगा, न पहननेपर जैसी अवस्था रहती है, पहननेपर भी वैसी ही रहेगी।



इस तस्वीरको देखो। पेन्सिलसे बना दी है। ठीक ठीक समझ जाओगी, कि यह क्या चीज है। खूब पतला और कोमल रबर है, जरा दबाकर पहननेसे ही जरायुके मुहमें अटक जाता है। खोलनेके समय पतला सिल्कका फीता पकडकर खींचनेसे ही निकल आता है।

अब तो शायद तुम समझ गयी होंगी।

बताओ, अच्छी चीज है या नहीं?

इस देशके पुरुष इन बातोंके सम्बन्धमें कभी अपने मस्तिष्कको कष्ट नहीं देते। इसीलिये स्त्रियाँ इस विषयमें कुछ भी नहीं जानतीं। यदि पुरुषोंमें ठीक ठीक शिक्षाका प्रचार रहता, तो स्त्रियाँ भी इन बातोंको अच्छी तरह जानतीं। परन्तु यह सब कुछ हुआ नहीं। हमारे पुरुष सवेरे दाल भात खा, वस्त्र पहन, आफिसके बाबू बनकर बाहर निकले, समस्त दिन परिश्रमकर लौटनेपर उन्हें जो मिला, सो ग्रासकी भाँति उसे खा लिया। खाकर या तो ताश खेलने बैठे

अथवा और कुछ काम किया। दस बजते ही घरमें घुसे। तबतक उनकी स्त्री भी गृहस्थीका काम समाप्तकर निश्चिन्त हुई। दोनों सोये, कुछ इधर उधरकी बातें हुईं, इसके बाद वही आरम्भ हुआ। पहले ना ना हाँ हाँ, इसके बाद फिर क्या है! थोड़ी देर बाद ही दोनों मुँह फेरकर सो रहे। फिर वही सवेरा, वही आफिस, वही सब।

कुछ दिन बाद ही पेट ऊँचा हो गया।

उससे अवस्था बुरी न होगी तो और क्या होगा! पुरुष यदि सविशेष चर्चा करें तो स्त्रियाँ सब जान जाती हैं। पुरुषोंकी यदि शिक्षा रहे तो नारीका मिथ्या संस्कार, उसकी शिक्षा और युक्ति तथा तर्कके आगे कितनी देर ठहर सकता है?

अब विचारणीय यह है, कि यह शिक्षा बुरी तो नहीं है? यह देनेपर अपयशका भागी तो न होना पड़ेगा। इसमें सन्देह नहीं, कि अपयश अवश्य होगा। इतनेपर भी मेरी इच्छा होती है, समस्त देशमें घूमकर यह शिक्षा दे आऊं। अपयश होना हो, हो, बदनामी बदी हो, हो जाये! अपनी निन्दा और बदनामीके परिणाममें यदि देशवासियोंका कुछ उपकार हो तो उसे ऐसा पाल है? मेरी निन्दा

या यन्त्रणा मेरे साथ ही समाप्त हो जायगी, परन्तु यदि देशवासियोंका कल्याण हुआ तो क्या देशमें सम्पदा—स्वास्थ्य सम्पदा न होगा।

हमारे देशके राजा या अभिभावक इस सम्बन्धमें उदासीन हैं। लोगोंकी रक्षाके भयसे अस्पताल वगैरह खुले हैं जहा चिकित्सा वगैरह भी होती है। मलेरिया, वसन्त, हैजा इन सबको दूर करनेकी चेष्टा भी होती है, परन्तु यदि वास्तवमें इस देशका वे भली भांति कल्याण चाहते तो इस ओर भी उनकी दृष्टि अवश्य जाती। मैं यह नहीं कहता, कि वे आकर, एक बिल पास कर दें और विवाहका समय तथा प्रथा निर्द्धारित कर हमलोगोंका मस्तिष्क भी खरीद ले जैसा कि गौड या किसीका एक बिल पास करनेमें हमारी दयामय सरकारने हस्तक्षेप किया है वह भी हमारे हितके लिये। दोहाई दयामयकी! इतनी दया दिखानेकी आवश्यकता नहीं है। मेरे कहनेका यही उद्देश्य है कि इस शिक्षाको और इस प्रसंगको जो इण्डिसेण्ट या अश्लीलताका एक आतंक लगा दिया है, उसे दूर कर दो। हमारा जीवन मरण, शुभ अशुभ, स्वास्थ्य सम्पद, सब प्रकारसे हमलोग एक बार चेष्टा कर देखें, कुछ कोर किनारा दिखाई देता है या नहीं।

अपने देशकी खबर तो तुमलोगोंसे छिपी नहीं है। वे अपना उपाय अपने लिये ही अच्छी तरह कर रहे हैं और इसी कारणसे वे जीवित हैं। जीवित रहें, अच्छा ही है आखिर ही मनुष्यकी आवश्यकता है तुम्हारे देशके हों या इस देशके उन्हें जीना ही चाहिये। तुम्हारे देशके मनुष्य भी मनुष्य हैं —कहलाते मनुष्य ही हैं। उनका जो सुख है, हमारा भी नहीं है, उनका जो दुःख है, हमारा भी वह दुःख ही है। तुम-लोग हमारे अभिभावक हो, भगवान्ने हमारा अभिभावक तुम्हें नियुक्त किया है हमारी हितचिन्ता ही, तुम्हारी जपमाला है इसीलिये यह प्रार्थना की है, इसे पूर्ण करो।

देखो कुमुद, चिट्ठी लाट साहबके पास रजिस्ट्री कर न भेज देना। नहीं तो तुम्हारे बरदाको गायकी तरह डोरीसे बाँधकर सब ले जायेंगे।

क्या कहता था, और क्या कहता कहता, कहाँ आ पहुँचा। कहता था नेजड़के सम्बन्धमें। सोचता हूँ, कि लड़की कितनी सौभाग्यवती है और किस कर्मबलसे उसने यह सौभाग्य प्राप्त कर लिया। कैसे उसे छुट्टी मिल गयी, किस पुण्य बलसे उसके गोरे गाल हाथ चिपटे न होकर क्योंकि त्यों रह गये? उसे किसने इस तरह सार

मन बीमारीका आगार बना रहा। यह भी विचार भी नहीं आता। डाक्टरोंका परामर्श प्राप्त करनेका सुयोग भी उसे नहीं मिलता और कोई रोग भी उसे इस तरह सुखी न कर सकता फिर ऐसा किस तरह हो गया।

बीमारीका दमन करता धीरे धीरे अग्रसर हुआ जाता था। तेजाई दालानमें बैठकर गाती हुई बर्तन माज रही थी और उसका लड़का उसी तरह कुत्तेका पूँछ पकड़ कर जिस तरह गाड़ी चलायी जाती है, उसी तरह खींच रहा था। तेजाई की माँ मेरे कमरेमें झाड़ू देने आयी थी, कि मैंने उससे पूछा—तुम्हारा दामाद क्या काम करता है?

माईने चेहरा उदास बनाकर कहा—उसकी बात न पूछो बाबू! वह बड़ा खराब आदमी है।

मैंने कहा—क्या खराब है?

वह बोली—बाबू! उसने तेजाईको छोड़कर दूसरा विवाह कर लिया है। इन पाँच वर्षोंमें तीन चार सन्ताने भी हुई हैं, उनके साथ ही रहता है। मेरी लड़कीकी ओर देखता भी नहीं।

मैंने पूछा—वह कहाँ रहता है?

इसी शहरके बाहर रहता है। कहकर क्रोधके वेगमें

न जाने क्या कहती हुई वह मेरा कमरा साफकर चली गयी।

मैं बैठा बैठा सोचने लगा—एकको त्यागकर दूसरीको कितना सम्पन्न बना गया है! तेजईके मनस्तत्वकी आलोचना करनेकी आवश्यकता थी, परन्तु मैंने उस पर ध्यान न दिया। मैं सोचता था कि यदि उसका पति रहता तो तेजईके गर्भसे इन पाँच वर्षमें दो तीन चार, सन्तानें अवश्य होतीं। फिर तेजईकी दशा भी इन बंगालिनों जैसी ही हो जाती या नहीं? अवश्य ही होती, इसमें बिन्दुमात्र भी सन्देह नहीं है। जो हो, उसने त्याग दिया, सो अच्छा ही किया है। अन्ततः मैंने तो अच्छा ही समझा। नहीं तो तेजईको देखकर मुझे इतनी प्रसन्नता न होती। शरीर उपेक्षा करनेका पदार्थ नहीं है। तेजई पतिपरित्यागिनी होनेके कारण अवश्य ही दुःखी होगी, पर उसकी देह! यहीं मलिनताका नाम नहीं है। क्षीणता नहीं है मानो यौवन लबालब भरा हुआ है।

यह सत्य है, कि पुरुष रमणी रूपका उपभोग करते हैं। रमणी रूपका आदर करना पुरुष ही जानते हैं। सृष्टिका यही नियम है, कि रमणी-रूपका मूल्य पुरुष ही दे सकता

है। ठीक है, परन्तु यही रमणी रूप क्या रमणीके लिये कम उपभोग्य है। वह क्या अपने शरीरके कारण कम सुख शान्ति प्राप्त करती है? नहीं, जितना ही वह उस रूपको अपनी देहमें धारण करती है, उतनी ही सुखी होती है। यदि रमणीमें रूप न हो तो पुरुषको वह किस पदार्थ से तृप्त करेगी? स्वयं भी कैसे तृप्त होगी?

रूपकी आवश्यकता है। रूपको स्थिर रखनेके लिये स्वास्थ्यकी आवश्यकता है। स्वास्थ्यको जो रख सकता है, उसका रूप चिरकाल स्थायी भले ही न हो, अनेक कालतक अवश्य स्थायी रहता है। यदि यौवन स्थायी हो, तो स्त्रीके लिये इससे बढ़कर काम्य वस्तु और क्या हो सकती है? पुरुष हो या स्त्री—वे क्या पसन्द करते हैं—क्या चाहते हैं? क्या वे यौवन नहीं चाहते?

नेजई तो सुन्दरी नहीं है, फिर उसका रूप इतना उज्वल क्यों दिखाई देता है? उसका इतना आदर क्यों है? उसके यौवनने ही तो उसे सुन्दरी शिरोमणि बना रखा है। तुमने अवश्य ही यह बात सुनी होगी कि यौवनमें कुतिया भी अच्छी मालूम होती है। बात झूठी नहीं है। कुतिया देखनेमें चाहे कितनी ही बदसूरत क्यों न हो, यौवनागममें

वह भी सुश्री और तेजस्वी हो जाती है।—यह उसी यौवनके कारण जिसके लिये आर्य साधना करते थे, देवता समुद्र मन्थन करते और अमृत पानकर चिर यौवन लाभ करते थे।—यह वही यौवन है।

पर हमलोग उस यौवनको खो देते हैं। खोकर समयके पहले ही वृद्ध हो जाते हैं। कितने दिनसे ऐसा ही हो रहा है, कौन जाने।

पहलेसे ही ऐसा हो रहा है या हमलोगोंने ऐसा कर डाला है—इन बातोंके विचारसे मैं दुःखित नहीं हूँ। पहले तो विना चिकित्साके ही लोग यमलोक जा पहुँचते थे, उस समय इतनी औषधियाँ न थीं। (यदि वद्यगण सुनेंगे तो मुझे मरणाय घृत पिला देंगे) पर अब दवाका प्रचार हुआ है। विज्ञान बलसे वायुहीन शरीरमें भी वायु चालनाकर, मनुष्यको जीवित रखना सम्भव हो गया है—अब यदि इन विज्ञान सम्मत उपायोंकी सहायता न लेकर रोगको कोइ घरमें रख मारना ही चाहे, तो उसे क्या दण्ड मिलना उचित नहीं है?

सरकार जो प्रतिवर्ष हजारों लड़कोंको डाक्टरी सिखाकर छोड़ देती है, वह इसी कारणसे तो कि लोग बीमार

होनेपर डाक्टरोंकी शरणमें जायगे, रोग अच्छाकर सदा और स्वास्थ्य शरीरसे रहेंगे ? इसमें सन्देह नहीं, कि कितनो का हा मत है, कि विलायती दवाओंकी बिक्री बढ़ानेके लिये ही डाक्टर नाम धारी दलाल बनाकर उन्हें सरकार छोड़ देती है। पर वास्तवमें बात ऐसी नहीं है। लोगोंका उपकार होता है, विज्ञानबलसे लोग सुखशान्ति प्राप्त करते हैं—यही सची बात है ?

अब देहमें यौवनकी रोम रखनेके उपाय भी प्रकाशित हो गये हैं। अब आज यदि मैं देशमें उन उपायोंको बना अज्ञान देशवासी, दुर्दशाग्रस्त भाई बहनोंको उससे बचानेकी चेष्टा करूँ तो मुझे भी, इसमें सन्देह नहीं, कि, फ्रेंञ्च कंपनियोंके दलालका खिताब प्राप्त करना पड़ेगा। पर मैं उससे नहीं डरता, यदि खिताब ही मिलना होगा तो ले लूँगा। परन्तु उस खितायके भयसे वह काम न छोड़ूँगा जिससे उपकार होता है—जीवन-पथ सरल और सुखकर होता है।

एक रोगी मिला है। इसी रोगका रोगी है। स्वामी स्त्री दोनों ही राजी हो गये हैं। यहाँतक, कि यदि ये सफल काम हुए तो मुझे पाँच सौ रुपये इनाम देने कहा है।

दो वर्षतक वे परीक्षा करेंगे। इसके बाद ५००) इनाम देंगे।

लड़का—यही पति, बड़ा भारी जमींन्दार है। हाथी, घोड़े, मोटर सभी हैं। डाक बँगलेमें मुझसे भेंट हुई थी। शिकार खेलने आया था, वहीं मुझसे भेंट हुई और मुझे बुलाकर ले गया। उस समय ये सब बातें न हुई थी, पीछे हुई। उस समय तो बन्धु भावसे ही ले गया था।

वहाँ जाकर देखा, कि उसे A regiment of Children लड़कोंकी एक सेना है। एकदम ठीक क्रमानुसार एकके बाद एक। एक बड़ा, एक उससे छोटा इसी तरह एकदम छोटेतक। इनसे वह अत्यन्त दुःखी रहता है। बोला, कि हाथ देखकर ज्योतिषीने बताया है, कि उसका दूसरा विवाह होगा।

मैंने कहा—झूठी बात है, पर जिस तरह सन्तानें हो रही हैं उससे हाथ देखे बिना भी कोई कह सकता है।

वह मुँह झुकाकर बैठ गया।

मैंने उससे कहा—अभी छुट्टी लो तय्यार करो। मैं कल कलकत्ता वी० के० पालकी दूकानसे तुमलोगोंके लिये एक पेर्सा चीज मगा दूंगा, जिसे व्यवहार करनेसे लड़केलड़की होना

डर न रहेगा, तुम्हारी स्त्रीका शरीर भी देखते देखते ही अच्छा हो जायगा।

पहले तो वह बोला—मैंनोला खाती है, वाइनोना खाती है, कितनी ही चीजें बता गया।

मैंने कहा—इससे क्या होगा। उसके शरीरमें क्या रक्त है जो बढ़ेगा। अबसे यह चेष्टा करो, कि उसके शरीरमें कुछ रक्त एकत्र हो। प्रतिवर्ष निकल न जाये।

यह सुनकर उस समय वह कुछ न बोला।

दूसरे दिन सबेरे बोला—स्त्री तय्यार है, वह क्या चीज है?

मैंने कहा—पेसारी।

बोला—व्यवहार विधि?

मैंने कहा—साथ ही मिलेगी। पर यदि वे पहले स्वयं न पहन सकें तो मैं पटनेसे मिस सिंह लेडी डाक्टरको दो दिनोंके लिये भेज दूंगा, वे उन्हें सब सिखा जायँगी।

उसमें भी सब राजी हो गये। केवल भय यही था, कि कोई खराबी न हो। मैंने समझा दिया—कुछ न होगा।

यह प्रसन्नताकी बात है कि डाक्टरकी बातोंपर उसे आस्था है।

गुप्त चिट्ठी

मिस सिंह गई थीं, परसों लौट आयीं। बोलीं,—जमीन्दारकी स्त्री अब स्वयं ही पहन सकती हैं सीख गयीं। दो दिन उन्होंने स्वयंही पहना और निकाल लिया। मिस सिंहको दो सौ रुपये दिये।

मुझे भी पाँच सौ रुपये मिलेंगे।

आज इतना ही। कुमुद, तुम्हें अधिक बैठाना नहीं चाहता। जरा इधर उधर घूमो।

कुमुद, तुमने एक विषयमें झूठ ही मुझपर सन्देह किया है। तुम्हारी जरासी बात न मानना मेरी शक्तिके बाहर है, यह तो तुम अच्छी तरह जानती हो? तुम्हारी बात मैंने कभी उठाई है? उठा भी नहीं सकता।

माँको यही लिखा है, कि ठीक समयपर मुझे खबर देना।

तुम अपना समाचार लिखनेमें क्षणभर भी विलम्ब न करना। तुम्हारा समाचार न मिलनेसे मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

मैं अच्छा हूँ।

तुम्हारा—

वरदा।

१२

कुमुद

बहुत दिनोंसे तुम्हारी कोई चिट्ठी न मिली। कारण कुछ समझमें नहीं आया। बीचमें कई छोटी चिट्ठियाँ तुमने लिखी थीं इसके बाद एकाएक क्यों इस तरह चुप हो गयीं वह मेरी बुद्धिके लिये अग्राह्य हो रहा है। माँके पत्रसे मालूम हुआ कि तुमलोगोंकी क्या रीति रस्म होती है, सो हो गयी। और यह भी मालूम हुआ, कि प्रसव होनेमें अभी विलम्ब है। मैंने छुट्टीके लिये दरख्वास्त दी है। सम्भव है, कि शीघ्र ही मंजूर भी हो जायगी। होते ही घर आऊँगा।

इस बार मेरा भी एक महान परीक्षा होने वाली है। घर जाऊँगा कुमुद आखोंके सामने दिखाई देगी पर उसे छू न सकूँगा। नहीं समझता, कि कैसे रह सकूँगा। दूर रहनेपर विरह यन्त्रणा भोगते हुए किसी तरह दिन कट जाता है परन्तु पास रहनेसे ही कठिन हो जाता है। पर बात

यह है, कि मुश्किल समझनेसे ही वह मुश्किल हो जाता है। उसे मुश्किल न समझूँगा। कुमुद, अबसे हमलोग एक नये ही प्रकारका जीवन आरम्भ करेंगे, और कुछ मुझसे हो या न हो, पर आने वालोंकी भीड़ कम करनेकी चेष्टा अवश्य करूँगा। आशा है, कि इस चेष्टामें सिद्धि ही प्राप्त करूँगा। यदि सफलता हुई, तो बंगदेशके सब नर नारियोंको वह उपाय बता जाऊँगा। मुझे विश्वास है, कि कितने ही अभागोंका उपकार हो जायगा।

खबर मिली है, कि उस दिन एक ब्राह्मण कन्याने एक साथ ही पाँच सन्तानें प्रसवकी हैं। उसकी माँको एक साथ चार सन्तानें हुई थी और उसकी माँको भी एक साथ उतनी ही। मेरी समझमें नहा आता, कि वे इसी तरह यदि बच्चे बियाना आरम्भ करेंगी तो उनके स्वामी आत्महत्या क्यों न कर लेंगे? उन स्त्रियोंके स्वामियोंको उचित है, कि किसी डाक्टर खानेमें जाकर नश्तर ले, एकदम निश्चिन्त हो जायें। हमलोग हमारे देशमें सदासे दो ही देखते आये हैं, एक साथ पाँच! एकदम अद्भुत बात है। एक एक कर होने पर ही तो जान बचाना भारी रहता है—तिसपर पाँच पाँच!! बापरे बाप!!

गुप्त चिट्ठी

◆◆◆◆◆

इस समय विदा, आज छुट्टी मन्जूर करानेके लिये एक बार फिर बड़े साहबके बंगले पर जाऊंगा। देखूं, मंजूर होती है, कि नहीं।

तुम्हारा

बरदा।

गुप्त चिट्ठी

वरदा जब घरमें घुसा, उस समय सन्ध्या होना ही चाहती थी। बाहरसे ही उसे मकानमें बड़ा सन्नाटा मालूम होने लगा। बड़े ही शंकित पदसे, बैगमें हाथमें ले जब वह आँगनमें आ पहुँचा, उस समय उसकी माँ चिल्लाकर कह उठीं—अब क्या देखने आया है वरदा! वह हमलोगोंको छोड़कर

बैग वरदाके हाथसे छूटकर जमीनमें आ गिरा। वरदा दाँतोंसे ओठ दबा जोर जोरसे साँस लेने लगा। पाँच सात मिनिटोंतक उसे ज्ञान ही न था, वह केवल ठण्डी साँसें ही ले रहा था। उसकी माँने आँसू पोंछते पोंछते पास आकर उसका हाथ पकड़ लिया। बोलीं—चलो भीतर चलो।

वरदाकी ज्ञान शक्ति लौट आयी। बोला—क्या हुआ था?

कुछ नहीं बेटा! कुछ नहीं। आज दो दिनोंसे दर्द

मुझे खबर क्यों न दी?

यह क्या बेटा! तार दिया था। तुझे नहीं मिला?

कब तार दिया था?

कल सबेरे।

वरदाने फिर कुछ न कहा। धीरे धीरे एक कोनेमें जाकर

बैठ गया। बरदा बड़ा ही कठोर हृदयी पुरुष था। उसने अपनी आँखों कितनों ही को मरते देखा था, कितने ही मनुष्यों की जान उसके हाथसे हो गयी थी—यह सब देखते देखते उसका मृत्युभय दूर हो गया था, वह मृत्युको एक साधारण बात समझता था, परन्तु आज उसके हृदयमें बड़े वेगसे तूफान बहने लगा और उसे याद दिलाने लगा कि इससे बढ़कर असाधारण और अस्वाभाविक तथा नृशंस बात दूसरी क्या हो सकती है? वह मनमें कितनी ही आशायें लगाकर आया था, कितनी ही कल्पनायें उसके मनमें लहर मार रही थीं कितनी ही चिन्तायें वह अपने हृदयमें भरकर लाया था पर वह सभी शून्यमें मिल गयीं। ओह! वह क्या एक दो दिनोंका सोच विचार था? वह अपने भविष्य जीवनकी कल्पना करता करता ही पटनेसे यहाँतक आया था। कुमुद प्रसवागारसे निकलकर कैसा जीवन आरम्भ करेगी, किस तरह वह सुखी होगी। ओह! बरदा दोनों ओठ दबा कर किसी तरह बोला—कब मरी?।

कल रातमें, बारह बजे।

बरदा उठ खड़ा हुआ। बहुत जोरसे साँस खींच कर उस कमरेकी ओर दौड़ पड़ा। उसकी माँने जल्दीसे उसके

सामने जाकर कहा—"उस कमरेमें नहीं बैठा। मेरी कोठडीमें चलो।"

ठहरो कहकर वरदा अपने सोनेवाले कमरेमें घुस गया।

अन्धकार! अंधकार! अन्धकार!! कुमुद नहीं है! कुमुद नहीं है! कुमुद नहीं है।

दीवार कह रही है कुमुद नहीं है, कड़ी, वरगे सभी रो रहे हैं—सभी कह रहे हैं, कुमुद नहीं है! वरदा भी रो उठा —कुमुद नहीं है।

दूसरी कोठडीसे एक दीपक और एक लिफाफा लाकर वरदाकी गोदमें रखते हुए माँने कहा—बहूके बिछौनेके नीचे पड़ा था, तेरा नाम लिखा है मालूम होता है, कल ही यह चिट्ठी लिखी थी, डाकमें भेज न सकी।

वरदाने लिफाफा फाड़ पत्र निकाला।

पर पढ़े कौन? उसमें क्या देखनेकी शक्ति थी? आँखोंमें आँसू नहीं हैं, तथापि वरदाको साफ दिखाई नहीं देता। बहुत देरतक देखने बाद किसी तरह वरदाकी दृष्टि शक्ति लौट आयी। उसने पत्र पढ़ा—लिखा था —

प्रियतम—

बड़ा कष्ट है; मालूम होता है, कि अब प्राण न बचेगा।

गुप्त चिट्ठी

न रहूँ, कोई चिन्ता नहीं, पर तुम्हारा दर्शन न होगा यही दुःख है।

अब नहीं लिख सकती। बड़ा कष्ट होता है।

रातदिन रोती हूँ और तुम्हें पुकारती हूँ। कहती हूँ ईश्वर उन्हें जुटा दो, नहीं तो फिर भेंट न होगी। पर अभागिनीकी पुकार क्या उन्होंने सुनी है!

तुम्हारी
कुमुद।

वरदाने कितनी ही वार यह पत्र पढ़ा—कुमुदके हाथोंका लिखा था। कुमुद नहीं है, पर उसकी लिपि है, वैसी ही स्पष्ट, वैसी ही सुन्दर, वैसी ही उज्वल लिपि है। केवल वही नहीं है जिसने लिखा है। वरदा फिर वार वार उत्तप्त निश्वास फेंकने लगा।

वरदाकी माँ पुत्रकी वगलमें बैठकर उसे सान्त्वना देने लगी—भगवानने ले लिया अब तू क्या कर सकता हैं।

वरदाने पूछा—माँ! वह क्या दिन रात रोती थी?

इस सम्बन्धमें तो कुछ पूछना ही वृथा है। न जाने क्या हुआ था, कि कई महीनोंसे वहूके मुहमर हँसी दिखाई ही न देती थी, वह कुछ वोलती ही न थी, कितना ही कहूं कि वहू गर्भवती हो, इस समय ऐसा न

वरदाने वाधा देकर कहा—अच्छा जाने दो, में जरा सोऊँगा।

इतना कह, वह उसी जगह जमीनमें सो गया।

इस समय भी उस चिट्ठीके समस्त अक्षर मानों उसकी आँखोंके आगे चमक रहे थे। जो कुमुद नहीं है, जो उसके जीवनको शून्य मरुभूमि वनाकर चली गयी है, उसके हाथकी लिपि नहीं दिखाई दे जाये—इसी भयसे वरदाने

आँखें बन्द कर लीं, परन्तु मनुष्यके हृदयमें जो आँखें हैं बाहरकी आँखोंसे न देखने पर भी, वह मनुष्यको कितनी ही चीजें दिखाया करता हैं। वरुणाकी वे आँखें उसे कुमुदको ही दिखाना चाहती थीं। यह कैसा परिहास है!

वरदाने फिर रोते हुए कहा—"माँ! दीपक हटा दो।"

अन्तिम पत्र।

अभिन्नहृदयेषु !

तुम्हारा पत्र मिला। इधर कई दिनोंसे समय न मिला, इसीसे जवाब न दे सका।

तुमने माँका पक्ष ग्रहण कर जो बात लिखी है, माँने कुछ नही तो पचास चिट्ठियोंमें ये बाते लिखी होगी और उतनी ही बार यही एक जवाब मिला है—नही।

आश्चर्य स्त्री चरित्र है। अब तुमसे यह उत्कट अनुरोध कराया है। मै यह समझ नही सकता कि माताके मनमें यह धारणा कैसे उत्पन्न हो गयी, कि जिसने उनकी बात न मानी उसके अनुरोध पर ध्यान न दे सका, वही सालेके अनुरोधपर कैसे असाध्य साधन कर बैठेगा। अपने लड़केके सम्बन्धमें ऐसी धारणा बना लेनेपर माता सुखी होती है या नही, नही जानता। पर लड़केको तो अवश्यही दु:ख होता है।

तुम्हारा कहना है कि तुमसे मेरा सम्पर्क टूट जायगा। ऐसा बात तो नहीं है! यदि तुम यह जानते, कि तुम्हारे हृदयका अंश मुझमें घरे बैठा है, तो ऐसी बात न कहते।

गुप्त चित्र

मेरी कुमुद तुम लोगोंसे अलग नहीं थी तुम्हारे साथ, तुम्हारे ही आदर यत्नसे, वह इतनी बड़ी हुई थी। तुमलोगोंकी अपनी कल्याणेच्छा ही कुमुदको मैंने प्राप्त किया था—और वह भी तुम्हारी दयासे।

कुमुद दिनरात आँखोंके सामने दिखाई देती है। नींदमें भी उसे जाग्रत ही देखता हूँ। उसी तरह मेरे हृदयपर सर रखकर सोती आयी है उसी तरह अधर पर अधर रख, अपनेको बिल्कुल भूलकर सो जाती है। उसी तरह अपने दोनों बाहुओंसे मुझे बाँध रखना चाहती है। क्या सोते क्या जागते, एक दण्ड भी वह मुझसे अलग नहीं मालूम होती। बराबर उसी तरह साथ रहती है, जिस तरह इतने दिनोंसे थी।

कुमुदको देखता हूँ, साथ ही उसके उस छोटे भाईको भी देखता हूँ, जो अपने हृदयका धन, माथेका मणि मेरे हाथोंमें सौंप गये हैं। उनका विश्वास भङ्ग कर दिया है, उनकी बड़ी ही आदरणीया कुमुदको अपनी असावधानीसे खो दिया है—यह सोचते ही मेरे हृदयका रक्त जम जाता है।

और उसके बड़े भाई! तीन बहनोंमें तुम्हीं उसके बड़े

प्रिय थे। उनसेसे बड़ा स्नेह करती थी। उनकी बातें भी याद आती हैं।

और तुमलोग ? कुमुद अपने मौसेरे भाइयोंको दिन रात याद करती थी। तुमलोग उसके गर्वके पदार्थ थे, वह तुमलोगोंको आदर्श मानती थी।

आज वह नहीं है, इसलिये उसके आत्मीयोंसे मेरा जो सम्पर्क है, क्या वह भी दूर हो जायगा अथवा हो गया ? उसके आदरकी सामग्रियाँ अब मेरी कुछ भी नहीं हैं। क्या यह सम्पर्क इतना ही क्षणभंगुर, इतना ही अनस्थायी था कि इन कई महीनोंमें ही उसके आत्मीयोंसे भी मेरा सम्पर्क दूर हो गया। क्या कुमुदके शरीरके साथ ही उसके स्वामी-का एकमात्र सम्बन्ध था ? तुम ज्ञानी, विवेचक और विद्वान हो। तुमने ऐसी बात कैसे कह दी ?

सभी मुझे नास्तिक कहते हैं, उसके लिये मुझे कभी कभी लाञ्छित भी कम नहीं होना पड़ता, परन्तु वास्तविक नास्तिकता किसे कहते है, मैं यही नहीं जानता। इतने बड़े विश्वका, इस इतनी बड़ी विस्मयकर सृष्टिका ईश्वर नहीं है, सृष्टिकर्त्ता नहीं है, यह कल्पना करना भी शक्तिके बाहर है। मैं उस ईश्वरपर विश्वास करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ,

◆◆◆◆◆

मेरी कुमुद, तुम लोगोंसे अलग नहीं थी, तुम्हारे साथ, तुम्हारे ही आदर यत्नसे, वह इतनी बड़ी हुई थी। तुमलोगोंकी अपनी कहलानेवाली ही कुमुदको मैंने प्राप्त किया था—और वह भी तुम्हारी दयासे।

कुमुद दिनरात आँखोंके सामने दिखाई देती है। नींदमें भी उसे जाग्रित ही देखता हूँ। उसी तरह मेरे हृदयपर सर रखकर सोने आती है उसी तरह अधर पर अधर रख, अपनेको बिल्कुल भूलकर सो जाती है। उसी तरह अपने दोनों बाहुओंसे मुझे बाँध रखना चाहती है। क्या सोते क्या जागते, एक दण्ड भी वह मुझसे अलग नहीं मालूम होती। बराबर उसी तरह साथ रहती है, जिस तरह इतने दिनोंसे थी।

कुमुदको देखता हूँ, साथ ही उसके उस छोटे भाईको भी देखता हूँ, जो अपने हृदयका धन, माथेका मणि मेरे हाथोंमें सौंप गये हैं। उनका विश्वास भङ्ग कर दिया है, उनकी बड़ी ही आदरणीया कुमुदको अपनी असाव धानीसे खो दिया है—यह सोचते ही मेरे हृदयका रक्त जम जाता है।

और उसके बड़े भाई! तीन बहनोंमें तुम्हीं उसके बड़े

को परायी बनाना पडेगा। पर इस देहकी अस्थि मज्जाको अलग किये विना तो वैसा होना सम्भव नहीं है।

माँको मैंने कितनी ही बार लिखा है, तुम भी समझा कर कहना, कि मनुष्य एक बार ही विवाह कर सकता है, उसका बार बार विवाह नहीं होता। यदि स्त्रीके साथ एकमात्र दैहिक सुखका ही सम्बन्ध हो तो एक नहीं दस, दस भी नहीं, पचीस विवाह मनुष्य कर सकता है। जिनका विवाह करनेका एकमात्र उद्देश्य दैहिक सुख साधन ही सदासे दिखाई दिया है, उन्होंने ही एकसे अधिक विवाह किये हैं और स्त्रीके जीवित रहते ही कर लेते हैं। कोई कोई दो तीन सौ विवाह भी कर लेते हैं। मैं उसे विवाह नहीं समझता।

इन्द्रिय उत्तेजित होनेपर नवीन नवीन स्त्रियोंके संगमका जो अर्थ है, इस प्रकारके बहु विवाहका भी वही एक अर्थ मैं समझता हूँ। बादशाह जहाँगीरकी दो सौसे अधिक बेगमें थी। बादशाहने उन सबको पुत्रवती बनाया था। कुल मिलाकर उन्हें सात सौ लडके हुए थे। मैं यह बात डंकेकी चोट कह सकता हूँ, कि जहाँगीरने केवल इन्द्रिय लालसा की तृप्तिके लिये इतनी रमणियोंका पाणि-पीडन किया था। उनका कोई दूसरा उद्देश्य न था।

कि जितने दिन जीवित रहूँ, यह विश्वास हृदयमें सदा बना ही रहे।

मैं परलोक मानता हूँ, नहीं जानता, कि तुम मानते हो या नहीं, पर यदि परलोकपर तुम्हारी आस्था हो तो निश्चय ही तुम मेरा यह मत स्वीकार करोगे, कि इस जगतमें मेरी कुमुद सदा मेरी न रहनेपर भी एक ऐसे जगतमें वह मेरी होकर ही मेरी राह देखती रहती है, जहाँ हम दोनोंका मिलन अवश्यम्भावी है। मैं उसी दिनकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

मैं क्षण भरके लिये भी यह नहीं सोच सकता, कि यह विच्छेद ही अन्तिम विच्छेद है। विच्छेदके बाद मिलन अवश्य होता है कुमुदसे मेरा जो सम्बन्ध है, वह कभी टूट नहीं सकता, टूटेगा भी नहीं।

यदि यह नहीं हो सकता है, तो उसके आत्मीयोंसे ही मेरा सम्बन्ध कैसे टूट जायगा। यह सम्बन्ध न टूटेगा टूटनेका है ही नहीं। तुमलोग मेरे जैसे अपने थे अब भी वैसे ही हो और सदा वैसे ही रहोगे। कुमुद, कभी मेरी अप्रिय न होगी, इसीलिये तुमलोगोंका सम्पर्क भी न भंग होगा।

यदि तुम्हें पराया बनाना चाहूँ, तो सबसे पहले कुमुद

को परायी बनाना पडेगा। पर इन देहकी अस्थि मज्जाको अलग किये बिना तो वैसा होना सम्भव नहीं है।

माँको मैंने कितनी ही वार लिखा है, तुम भी समझा कर कहना, कि मनुष्य एक वार ही विवाह कर सकता है, उसका वार वार विवाह नहीं होता। यदि स्त्रीके साथ एकमात्र दैहिक सुखका ही सम्बन्ध हो तो एक नहीं दस, दस भी नहीं, पचीस विवाह मनुष्य कर सकता है। जिनका विवाह करनेका एकमात्र उद्देश्य दैहिक सुख साधन ही सदासे दिखाई दिया है, उन्होंने ही एकसे अधिक विवाह किये हैं और स्त्रीके जीवित रहते ही कर लेते हैं। कोई कोई दो तीन सौ विवाह भी कर लेते हैं। मैं उसे विवाह नहीं समझता।

इन्द्रिय उत्तेजित होनेपर नवीन नवीन स्त्रियोंके संगमका जो अर्थ है, इस प्रकारके बहु विवाहका भी वही एक अर्थ मैं समझता हूँ। बादशाह जहाँगीरकी दो सौसे अधिक बेगमें थी। बादशाहने उन सबको पुत्रवती बनाया था। कुल मिलाकर उन्हें सात सौ लडके हुए थे। मैं यह बात डंकेकी चोट कह सकता हूँ, कि जहाँगीरने केवल इन्द्रिय लालसा की तृप्तिके लिये इतनी रमणियोंका पाणि पीडन किया था। उनका कोई दूसरा उद्देश्य न था।

यदि विवाहका यही उद्देश्य होता, तो मैं माताकी आज्ञा न उठाता। वधु फिर एक बार भाग्यकी दुहाई दे, तुम लोगोंके बताये हुए पथपर चलनेकी ही चेष्टा करता, पर मेरा विश्वास है, कि विवाहका वह उद्देश्य नहीं है। इसीलिये सर झुकाकर, और हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि तुम लोग मुझे छुटकारा दो।

तुम नहीं जानते, कि हमलोग अपने जीवनको कैसा बना डालनेकी चेष्टा कर रहे थे और किस तरह अपनेको तय्यार कर रहे थे! विधाताकी क्या इच्छा है सो नहीं बता सकता हूँ, पर हमलोगोंकी मनकी आशा मनमें ही विलीन हो गयी कार्यमें परिणत करनेका सुयोग ही न मिला।

मैं कह नहीं सकता, कि तुम विश्वास करोगे या नहीं, पर वास्तवमें हमलोगोंने अपने लिये एक नयी ही राह चुन रखी थी। नवीन शब्द ही सुनकर चौंक न उठना और उसकी तह तक डूबकर विचार करना—यही मेरी प्रार्थना है।

वह बात बतानेके लिये, कुछ पहलेकी बातें भी बतानी पड़ेंगी। मैं जब अन्तिम परीक्षाके लिये प्रस्तुत हो रहा था, उसी समय मालूम हुआ, कि कुमुद गर्भवती है। यह

समाचार आनन्दका है, कि निरानन्दका—यह तुम भी जानते हो, पर वास्तवमें हमलोगोंको प्रसन्नता न हुई। बल्कि अप्रसन्नता ही हुई।

इसका कारण था, सांसारिक असुविधायें। अबतक माता बड़ी-सतर्कतासे गृहस्थी चला रही थीं, गाँवमें रहना था, चावल होता था, किसी तरह खर्च चल जाता था परन्तु दिनों दिन जब खर्च बढ़ता गया, तब माता फिर वैसी सुश्रृ-खलासे गृहस्थी न चला सकीं। ठीक उसी समय कुमुद गर्भ-वती हुई, जब मेरी गृहस्थीमें अभावका डंका जोरसे बज रहा था।

मेरे विचारसे तो माँ भी इस समाचारसे प्रसन्न न हुई। इसमें उनका लेश मात्र भी दोष नहीं है। वे गृहस्थीकी हित कामना ही करती थीं। उनके मनमें यह चिन्ता होना स्वाभाविक ही है, कि इस खींचातानी और अभावके समय यदि सन्तान हुई तो अभावकी ताड़ना और भी बढ़ जायगी। गृहस्थीमें एक बड़े मनुष्यका बढ़ना उतनी चिन्ताका विषय नहीं है, जितना एक छोटे शिशुका। इसीलिये मेरी माता भी चिन्तित हो उठी थी।

कुमुदको भी यह मालूम हो गया था। मालूम हो जाना

था क्यों वह, माताने उसे बता दिया था। कुमुदके पत्रसे ही मुझे मालूम हुआ था, कि माँ यह समाचार सुनकर प्रसन्न नहीं बल्कि विमर्ष ही हुई थी। तुम्हीं सोच देखो, उस समय गृहस्थीकी कैसी अवस्था थी। उनके तीन लड़के थे, पर एक भी उपार्जन न करता था। दोको तो अपाहिज ही कहना चाहिये। तीन लड़कोंकी पढ़ाईका खर्च जुटानेमें ही माँ घबडा उठी थी। इसके बाद, कैसा दुलारा पोता होगा, उसे न तो अच्छी तरह खिला सकेंगी न पहना सकेंगी —यह सब सोचकर भी किस स्त्रीका चित्त स्थिर रह सकता है।

माँकी यह अप्रसन्नताही कुमुदका काल हुई थी।

वह तो नारी थी। वह यौवन प्राप्तिके बादसे ही इस मातृत्वकी कल्पना करती आती थी। उसका धारणा थी, कि वह माँ होगी। स्त्रियोंके लिये इससे अधिक गर्वकी और कौनसी बात है। वह इसी प्रसन्नतामें अधीर हो गयी थी, नारीत्व सार्थक होगा, रमणीत्व जननीत्वमें परिणत होगा; रमणियोंके लिये इससे अधिक काम्य और कुछ हो नहीं सकता। परन्तु उसकी समस्त प्रसन्नताका अवसान माँके निष्करुण आचरणसे हो गया।

सुना है, कि उसी समयसे वह अपनी जननीत्वकी इतनी आकाक्षा और कामनाके धिक्कार देती थी।

यह भी मेरा ही दोष है।

उपार्जन करनेकी क्षमता उत्पन्न किये बिना सन्तान उत्पन्न करना मुझे उचित न था। यदि यह कहो, कि यह तो तुम्हारे अधिकारकी बात न थी, तो तुम गलत समझे हो। सभी मेरे अधीन था। यदि चेष्टा करता तो प्रतिरोध कर सकता था।

जब मेरा विवाह न हुआ था उसी समयसे मैंने नारी देहके अनेक स्थानोंके गलीकूचे पहचान लिये थे। और लोग विवाहके बाद क्या करते हैं, मैं नहीं जानता, पर मैं यह अवश्य जानता था, कि क्या करनेसे क्या होता है। विवाहके बादकी जो अवस्था है उसे अच्छी तरह ही जानता था, तब न कर सकनेका एकमात्र कारण उसपर ध्यान न देना है।

दूसरे लोग इस बातपर विश्वास न करेंगे—करना कठिन ही है, पर हम मेडिकल कालेजके लड़कोंने ऐसी कितनी ही चीजें जान ली थीं, जो दूसरे जान नहीं गर्भ ... । जितनी प्रथायें और प्रणालियाँ हैं, उन

ही मैं अच्छी तरह जानता था। वे कुछ ऐसे कष्ट साध्य भी न थे, कि इच्छा करने पर उनका पालन न कर सकता।

पर भूल हो गयी। वस्तु बड़ी भारी भूल हुई। और वह भूल भी ऐसी हुई, कि इस जीवनमें उसके संशोधनका कोई सुयोग ही न मिला।

अथवा—यही कपालकी लिखन थी।

हमलोगोंको यदि और एक वर्ष बाद—यही तो—यदि आज मालूम होता, कि कुमुद गर्भवती है, तो वह समाचार इस गृहस्थीके सब मनुष्योंको कितना प्रसन्न करता।

आज मनमें आता है, कि यदि पहलेसे ही कुमुदको अपनी इच्छाके अनुकूल बनानेकी चेष्टा करता और बना डालता तो ऐसी अघटित घटना न घटती। देखो, इसी तरह मैं अपने मनको सान्त्वना देता हूँ। मैं जानता हूँ, कि उस मंगलमयकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। कुमुदका समय पूरा होनेपर कोई उसे रख नहीं सकता परन्तु यह सोचकर भी मनमें एक प्रकारकी तृप्ति उत्पन्न होती है, कि यदि मैं चेष्टा करता तो मेरी कुमुद मुझे छोड़कर चली न जाती।

सम्भव है कि यह पागलका प्रलाप हो। पर पगला

तो उसीमें सुखी है, और पगलाके हृदयका आनन्द भी तो उपेक्षाका पदार्थ नहीं है।

एक ही नहीं, नित्य प्रति ऐसी ही अनेक घटनायें घटा करती हैं। इस तरह कितनी ही गृहस्थियाँ नित्य अरण्यमें परिणत होती हैं—इन सबका कारण हमारी अज्ञता है। हमलोग कुछ नहीं जानने पर भी समझते हैं, कि सब जानते हैं। हमारा भण्डार जितना ही खाली है, हमलोग उतने ही कुबेरके समकक्ष होना चाहते हैं अध पतित जातिका शायद यहीं चरम लक्षण है।

इस देशके सनातन नियममें अभी भी एकान्नभुक्त परिवारकी प्रथा प्रचलित है। एकान्नभुक्त परिवारकी बातें तुम्हें बहुत कुछ समझानी न पड़ेगी—उसे सभी जानते हैं तुम भी जानते हो।

परन्तु इसमें असुविधायें भी अनेक हैं, जिस समय यह प्रथा पहले पहल देशमें प्रचलित हुई, उस समय क्या दशा थी, सो नहीं कह सकता, पर इस समय तो बहुतसे दोष दिखाई देते हैं।

पहली बात तो यह है, कि इस एकान्नभुक्त परिवारमें

ऐसे मनुष्य रहते हैं, जो पर स्त्री कातरताके कारण गृहस्थी की दीवारपर सदा बदनुमी चलाया करते हैं।

आजकलकी मासें अवस्थामें इस समयकी होनेपर भी उस कारणका खासका नहीं भूठ मानी हैं। बिचारी वह अनेकबार बिना कारण ही अपराधिनी ठहरायी जाती हैं।

यहाँ यदि कोई बहू जरा वेश विन्यास करे, साफ सुथरी रहना चाहे तो बहुतोंको यह देखकर कष्ट होता है।

समझमें ही नहीं आता, कि क्या कहूँ और क्या न कहूँ? हमारे देशकी स्त्रियाँ संस्कार और रीति नीति मानकर जबतक आचरण करती रहेंगी तबतक किसी ओर भी कोई उचित पथ उन्हें न दिखाई देगा।

ऋतुकाल स्त्री जीवनका कितना प्रयोजनीय और उपकारी है, यह हमारे देशकी कोई स्त्री भी मानना नहीं चाहती। महीनेके ये कई दिवस कितनी सावधानतासे काटने चाहिये, बताओ, तो सही किस घरकी स्त्रियाँ यह जानती हैं। यदि कोई स्त्री जानती भी हो तो पालन कौन करता है? सैकड़े पीछे एक भी स्त्री पालन करती है, कि नहीं इसमें भी सन्देह है, और उसपर ही उसका नारीत्व

और मातृत्व निर्भर करता है। उसीके शरीरमें स्वास्थ्य, सुख, शान्ति, सब वर्त्तमान रहतो हैं और इन सबपर गृहस्थी निर्भर करती है।

इसके अलावा गर्भाधानकाल जो नारी जीवनका एक विषम सङ्कटकाल है—उसे भी स्त्रियाँ नहीं समझती। साधारण जीवनके साथ इसका कितना बडा अन्तर है, यह वे समझाये भी नहीं समझतीं। समझानेकी चेष्टा करना भी कुनीति है। यह पुराना जीर्ण संस्कार उनके मनमें जड थाम्हे बैठा है, कि कोई भी उपाय, नये, ज्ञान विज्ञानका उदाहरण चाहे कुछ भी उसे कहो, कोई भी उसे दूर नहीं कर सकता।

साथ ही एक विपत्ति और भी है। गृहस्थीमें जो माँ, मौसी, चाची हैं—उन्होने न जाने कब सन्तान उत्पन्नकी थी उसे बडा किया था और बिना किसी नियम कानूनको माने ही अवतक माँ बनी बैठी हैं, पुरुषको थोडा भी अनधिकार चर्चा करते देखते ही उनके धीरजका बाँध टूट जाता है। वे समझने लगती हैं, कि यह अत्यन्त अग्रसर हो रहा है, कुपथपर जा रहा है।

वे इस युगकी औरते रहने पर भी सब विषयोंमें इस

कुछ ऐसी हटी हुई है कि यह युग उनको अच्छा ही नहीं मालूम होता।

आज ये ही फिर शास्त्रकी दुहाई भी देती हैं। शास्त्र कायदा इस तरह इनकी मुट्ठीमें हैं, कि कायदेकी कुछ अगाड़ ही नहीं है। जब जैसी दरकार पड़ती है, तब ठीक वैसा ही शास्त्र भी इनके लिये हो जाता है। शास्त्र ठीक रहे या न रहे, पर इनका प्रयोजन सिद्ध होना चाहिये।

ये शास्त्र सिद्ध प्रौढ़ायें जबतक जीवित हैं, तबतक हमारी इस कालकी स्त्रियोंको किसी बातकी आशा न करनी चाहिये। यदि कुछ चाहें कि इन्हें भी शिक्षिता बना दिया जाये, तो वैसी कोई सम्भावना नहीं है। मैं काम शास्त्रके विषयमें नहीं कह रहा हूँ। किसी विषयकी बात हो क्यों न हो ये प्रौढ़ायें किसीको प्रीति दृष्टिसे नहीं देखती। उनका प्राण कभी इन आधुनिक शिक्षाओंको मानकर उसके अनुसार काम करना ही नहीं चाहता, कर भी नहीं सकता। इन्हें मानकर इनके अनुसार काम करना ये दुर्बलता समझती हैं, अपमानजनक मानती हैं। ये सोचती हैं, कि यदि नवीन उनके पुरातनपर अधिकार जमा लेगा तो उनका अस्तित्व ही एकदम न रह जायगा, यह सोचते ही व्याकुल हो जाती हैं।

गुप्त चिट्ठी

यदि इसे कुमुदकी मृत्युका कारण न कहें तो भी यह कहना ही पड़ेगा, कि यह संस्कार ही धीरे धीरे उसे मृत्यु पथकी ओर लिये जाता था। बड़े दुःखकी बात रहनेपर भी मुझे यह कहना ही पड़ता है।

बात बहुत ही सामान्य और क्षुद्र अवश्य है, पर उसी क्षुद्र बातने मेरे हृदयमें छुरी घुसा दी है, मैंने कुमुदको खो दिया, मालूम होता है, विधाताने मेरे भाग्यमें यही लिख दिया था, परन्तु यह तो मैं समझता ही हूँ, कि कारण चाहे कैसा भी तुच्छ न हो, उसने अकालमें ही उसके सामने यमद्वार खोल दिया था।

वह कारण भी वही संस्कार है।

जो हमलोगोंके गृह प्राचीरके बट अश्वत्थकी भाँति सुप्रतिष्ठित संस्कारका चौकट पारकर बाहर पैर रख सकें हैं, इस युगमें एकमात्र वे ही सुखी हैं। युगोपयोगी शिक्षा और साहस प्राप्तकर वे, कितने ही विषयोंमें स्वाधीन और स्वावलम्बी हो गये हैं। इससे यही लाभ हुआ है, कि उनके कारण किसीको अपना सर खपानेकी जरूरत नहीं पड़ती। वे अपने विषयमें स्वयं ही सोच विचार लेनेकी शिक्षा प्राप्त

कर चुके हैं। गृहस्थी और समाजके लिये यह कम सफलताकी बात नहीं है।

और हमलोगोंकी माँ अथवा मौसीके आँचलकी निधि लड़कियोंकी दुर्दशा जैसी पचास वर्ष पहले थी, वैसी ही आज भी हो रही है। उनमें किसी प्रकारका भी व्यतिक्रम नहीं हुआ है।

पर व्यतिक्रम ही चाहिये। इसपर ही हमारी सुख सम्पदा, स्वास्थ्य और शान्ति निर्भर करती हैं। लड़के लड़कियोंको आज एकान्त मनसे शिक्षा देनी होगी, कि उन्हें जीवन पथ अच्छी तरह जान लेने चाहिये। सब जान बूझकर यदि वे किसी प्रकारका उपद्रव भी करेंगे तो देना न होगा।

इस देशके लड़कोंको स्वावलम्बी बनानेकी चेष्टा हो रही है, इस जगतमें रह, वे कुछ उपार्जन कर सकें और अपने स्त्री पुत्रोंका लालन पालन कर सकें इसी विषयकी शिक्षा वे प्राप्त कर रहे हैं—इससे अधिक वे कुछ नहीं जानते, कोई उन्हें बतलाता भी नहीं। जीवनमें सुख शान्ति प्राप्त करनेके लिये, उन्हें और भी कुछ जानना और सीखना आवश्यक है—यह बातें उन्हें कोई नहीं सिखाता।

विवाहके पहले उन्हें उसी विषयकी शिक्षा देनी चाहिये। थोड़ेसे संस्कृत मन्त्रोंके साथ जीवनका सम्पूर्ण दायित्व उनपर सौंप देनेसे काम न चलेगा। उनके हृदयमें आरम्भसे मरण कालतककी एक धारणा बैठा देनी होगी।

इसके बाद, वे दायित्व लेना चाहें, लें। मुझे विश्वास है, कि उस समय वे अपना दायित्व सम्हाल सकेंगे। यदि यह कर सकेंगे तो उनके मनमें आत्मग्लानि न रहेगी। समाज भी उनसे छुटकारा पायगा।

यही शिक्षा इस देशकी स्त्रियोंको भी देनी होगी। उन्हें बता देना होगा, कि यद्यपि वे दूसरेकी गृहस्थीमें जाती हैं, पर वह गृहस्थी वास्तवमें उनकी ही है, उसका शुभाशुभ और मङ्गल अमङ्गल उनपर ही निर्भर करता है। वह जिसे गर्भमें रखकर संसारमें उत्पन्न करेगी, स्वामीकी भाँति ही उनका दायित्व भी वैसा ही गुरुतर है, वैसा ही पवित्र है, यह उन्हें भली भाँति समझा देना होगा। यह सब जान लेनेपर यदि वह स्त्री दायित्व ग्रहण करना चाहे, तो ठीक ही है, ले लें, उससे मङ्गल ही होगा, और यदि उस दायित्व और भारको ग्रहण करना वह अपने लिये साध्यातीत समझे, तो

लिये ख्यालसे अभागोंको उत्पन्न कर इन दुर्दशाग्रस्त जगतको और भी अन्ध सागरमें डूबो न दें।

यह मैं जानता हूँ, कि काम हाथमें पकड़ रखनेका पदार्थ नहीं है, पर उसे नियमित करनेका उपाय है। वे वही पथ अवलम्बन करें, और उसे अवलम्बन कर गृहस्थीको स्मशानमें जानेसे बचायें।

हमारे देशकी लड़कियाँ दुर्बल हैं। सुनता हूँ, कि उनके मन अथवा शरीरमें कुछ भी बल नहीं है, पर मैं इस बातपर विश्वास नहीं करता। इस देशके किसी पुरुषसे भी स्त्रियाँ दुर्बल नहीं हैं। मैं उन्हें सबल ही समझता हूँ।

और इस देशकी मातृ जातिपर मेरा इतना विश्वास है, कि जिस गृहस्थीमें उनको स्थान मिला है, उसकी अवस्था यदि उन्हें अच्छी तरह समझा दी जाये, तो उससे बड़ा ही उपकार होगा।

उनपर ही हमारा भविष्य निर्भर करता है। विधाताने समाज जाति और देशका भविष्य उनके हाथोंमें ही सौंप दिया है। वे गृहस्थीको जैसी बनाया चाहेंगी, वह वैसी ही बन जायगी।

यदि वे यह भार ले लें तो तुम देखोगे कि हमारी इस

अध पतित मरणोन्मुख जातिमें एक नवीन श्री दिखाई देने लगेगी। पुरुषोंका अत्याचार कम हो जायगा। इस संसारमें पुरुषोंकी अपेक्षा नारीका स्थान कहीं नीचा नहीं है—यह बात अक्षरशः प्रमाणित हो जायगी। किसी बड़ी गृहस्थीमें एक छोटी सी बहू भी, वैसी ही समान अधिकारिणी है। यह अधिकार उन्हें देना होगा। यह अधिकार देते ही देखोगे, कि गृहस्थीमें चारों ओर एक नवीन आलोक छा गया है।

तुमने विवाहके विषयमें कहा है। तुम्हारा यह कहना है, कि तुम्हारी छोटी बहिन भी विवाह योग्य है, नहीं बन्धु, अब मैं अपनेको बाँधना नहीं चाहता। मुझे क्षमा करो।

मेरा क्या उद्देश्य है, यह कहकर मैं बड़ाई लूटना नहीं चाहता? मेरी इच्छा है, कि इस देशकी स्त्रियोंके आगे कुमुदका जीवन इतिहास खोलकर रख दूँ। उसके जीवनके साथ कितनी ही अभागिनियोंका जीवन परिच्छेद ठीक ठीक मिल जायगा। मुझे विश्वास है, कि जिनकी जीवन घटनायें मिलेंगी, वे प्रतिकार भी कर लेंगी।

कुमुदकी चिट्ठीवाली सन्दूकमें जितनी चिट्ठियाँ मिली हैं, वे सभी आज तुम्हारे पास भेजता हूँ। तुम शहरमें रहते हो,

◆◆◆◆◆

उन्हें छपा डालनेका प्रबन्ध करना। इस देशकी स्त्रियोंके हाथमें यह अमूल्य प्रिय सम्पदा देकर मैं अपनी प्राणाधिका कुमुदका स्मृति तर्पण करूँगा।

तुम्हारा

वरदा।

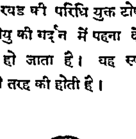
परिशिष्ट ।

हम लोगों के दाम्पत्य विज्ञान ग्रन्थको पढकर बहुतसे सज्जनोंने नानाप्रकार के प्रश्न करते हुए अनेक पत्र भेजे हैं। उक्त ग्रन्थ में उल्लिखित द्रव्योंका व्यवहार किस तरह किया जायगा? कहा ये सब चीजें मिलेंगी? उनकी कीमत कितनी हैं? क्या ये सब सामग्रियाँ भारतवर्ष में पायी जायँगी?—इत्यादि अनेक प्रकार के प्रश्नोंसे भरी चिट्ठियाँ हमें मिली हैं। पर कितनी ही बार जानकारी नहीं रहनेके कारण बाजार में खिलौने भी दुगुने या तिगुने दामपर हम लोगोंने भी खरीदे और इसमें कई दफे ठगे भी गये है। उक्त प्रकार की नाना प्रकारकी खराब चीजें खरीदनेसे विज्ञानसम्मत द्रव्यादिके ऊपर हम लोगोंकी श्रद्धा एकदम जाती रही। हम लोगोंने ऐसा भी सुना है कि व्यवसायी लोगोंने सुअवसर देखकर विलासोपयोगी वस्तुओं का बेठिकाने ज्यादे मूल्य लिया हैं। अत सभीको अलग अलग पत्रोत्तर देना कभी सम्भव नहीं है। अतएव इसे साधारणतया उन लोगोंके पत्रोंका जवाब ही समझिये।

हम लोगोंने बहुत पता लगा कर समझ लिया है कि नं० १ और ३ योनफील्डस लेनमें स्थित

पाल एण्ड कम्पनी के यहा भारतवर्ष में प्रचलित प्रायः सभी द्रव्यादि सुभीते से मिलते हैं। साथ साथ उनकी चीजें विशुद्ध हैं अर्थात् उनमें किसी और चीजोंकी मिलावट नहीं है। पाठकों की सुविधा के लिये हमने उन द्रव्यादि के चित्र और मूल्य भी लिख दिये हैं। उपर्युक्त कम्पनी को हमारे ग्रन्थ का उल्लेख करके यदि पत्र भेजियेगा तो वे निम्नलिखित मूल्य पर चीजें दे गे।

एक प्रकार की रबड़ की परिधि युक्त टोपी मिलती है जिसे स्त्रियों के जरायु की गर्दन में पहना देनेसे जरायुका छेद एकदम बन्द हो जाता है। यह स्पञ्ज रबड़ की परिधिवाली टोपी दो तरह की होती है।



१ नं० का नाम पेस्सरी।

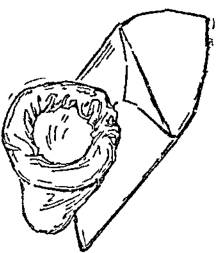


२ नं० का नाम—

प्रिवेण्टर (Pesseri) और चेक (checl) पेस्सरी । चेक पेस्सरी में फीता बधा रहता है। चिपटी पेस्सरी का दाम २) है और गोल पेस्सरी का दाम २)। इसके व्यवहार की रीतियां विवाह विज्ञान में
गयी हैं। यह भिन्न भिन्न माप की होती हैं, किन्तु कीमत एक ही है। किसके लिये किस माप की आवश्यकता होगी यह भी विवाह विज्ञानमें पाइयेगा। टोपीमें बराबर एक ही को ३, ४ से अधिक लगातार व्यवहार करना उचित नहीं है। साथ साथ हर बार व्यवहार करनेके पहले इसे गरम पानी से धोना उचित है। क्विनाईन पेस्सरी, रेण्डले की क्विनाईन पेस्सरी का मूल्य १) है। व्यवहारविधि उसीके साथ मिलेगी। गोल फील्ड पेस्सरी का प्रचार अब तक भारत वर्ष में नहीं हुआ है। पुरुषोंके लिये पुरुषाङ्ग ढकने के लिये जो रबडकी टोपी मिलती है
तरह की मिलती है।



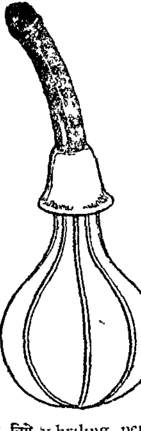
व्यामसेर रबर प्रोटेक्टर—मूल्य ॥-)



रेजीना प्रोटेक्टर मूल्य ॥)



भिनास प्रोटेक्टर मूल्य ।)



न ग्रन्थकाला की प्रथम पुस्तक—

डेडी डाक्टर लिखित।

वेवाह विज्ञान।

वितको सुखमय बनानेका एक प्रधान द्वारा सांसारिक और पारलौकिक । होते हैं, जिसके उचित अनौचित्यपर तक कि देशका भी सुख दुःख जीवन- । है,—वही विवाह क्या है, किस गहिये, किस उमरमें करना चाहिये ना चाहिये प्रभृति अनेकानेक बातें, इसका धर्म्म क्या है स्त्रियोंका ऋतु —इन्द्रिय परिचालना या दमन, किस स्त्रियाँ बन्ध्या (बांझ) क्यों होती हैं? किस चिकित्सासे उनका बाँझपन दूर हो सकता है? किन उपायों द्वारा गर्भ नियमित हो सकता है? सहवास क्या है? किस उपायसे अपनी इच्छानुसार, इच्छित समयका अन्तर देकर सन्तान उत्पन्न हो है, सन्तान नीरोग, बलिष्ठ, सुन्दर कैसे

है,—स्त्री पुरुष कैसे आनन्दमय, प्रेम-मय जीवन बिता सकते हैं, प्रभृति सभी बातें इसमें विशद रूपसे, खूब खुलासा, समझाकर लिख दी गयी हैं। साथ ही विभिन्न देशोंमें, इस समय क्या हो रहा है, यूरोपादि देशोंमें गर्भ नियमित रखनेके लिये डाक्टरोंने विज्ञान सम्मत क्या क्या उपाय निकाले हैं—ये सभी बातें इसमें चित्र देकर समझा दी गयी हैं।

हम जोर देकर कह सकते हैं, कि यदि आप अपने परिवारको सुखी स्त्री को सुन्दरी, सुरूपा, और सदा नीरोग तथा यौवन पूर्ण रखना चाहते हों तो इस पुस्तकको अवश्य पढ़िये, उन्हें पढ़ाइये—आपकी गृहस्थी सोनेका संसार हो जायगी। अल्पायु और रोगी सन्तान उत्पन्न न होगी और आपका समस्त हाहाकार दूर हो जायगा। मूल्य २)

यह पुस्तक कितनी उपयोगिनी, कितनी उपदेशप्रद तथा कितनी आवश्यक है, इसका पता केवल इसी बातसे लग सकता है, कि बङ्गभाषामें छः महीनामें ही इसके चार चार संस्करण हो गये।

विवाह विज्ञान ग्रन्थमाला की दूसरी पुस्तक

स्त्रीकी चिट्ठी ।

स्त्रीकी चिट्ठी—समाज लीलाका ज्वलन्त चित्र है। दरिद्र देशके भीषण अभावमें पड़कर एक ओर गृहस्थी भार हो रही है, दूसरी ओर पुरुष अपनी काम पिपासाकी तृप्ति, इन्द्रिय परिचालनकी इच्छासे व्याकुल हो रहा है। जो गृहस्थी स्वर्गका नन्दन वन होनी चाहिये वह नरक कुण्ड बन रही है। ऐसा क्यों? यह क्या हो रहा है? पति अपनी इन्द्रिय-वृत्ति चरितार्थ करनेके लिये आत्म बलिदानके लिये, नारीका मातृत्व कलुषित करनेके लिये, ऐसा क्यों व्याकुल हो रहा है? मान्धाता के समयमे ही तो यही अवस्था हो रही है। स्त्री-का स्वास्थ्य सुख, प्रेम, उच्च अभिलाषा—सभी तो रसातल में चला जा रहा है। इसी लिये आज स्त्री तड़फ उठी है इसी लिये आज उसने अपने पतिसे, अपने हृदयकी भीषण दाहके कारण कैफियत तलब की है, इसी लिये आज यह पूछती है, स्त्री-जातिने ऐसा क्या अपराध किया है, जिससे उसे यह अत्याचार सहन करना पड़ता है, इतनी

भोगनी पडती है, क्या स्त्री पुरुषके सम्बन्धका यही मतलब है, क्या मातृत्वके विकाशका यही रूप है? क्या यह केवल काम का पैशाचिक लीला नहीं है? क्या स्त्री केवल काम लालसाकी तृप्तिका ही एक साधन है? क्यों पुरुष जातिके संयमसे अभावसे, स्त्री अपना स्वास्थ्य, सौन्दर्य यौवन सदाके लिये खो बैठेगी? क्यों इन्हें खोकर वह आ-जीवन हृदय ज्वालामें दग्ध हुआ करेगी? इन बातोंका कौन उत्तरदायी है? अथवा कुत्सित पिताके रोगी होनेके कारण जो रोगिनी दुर्बल सन्तान होगी, उसका भविष्य जीवन कैसे कटेगा? इनका क्या उपाय है? एक चिर दु खिता नारीने, मूक पशुकी भाँति सभी बातें, सभी उपद्रव, सभी अन्याचार सहन कर अन्तमें इनकर कैफियत मांगी है।